# कर्णोदय

सोलहवाँ अंक

वर्ष 2018–19 की प्रथम छमाही, अप्रैल–सितम्बर, 2018

## ‘‘नराकास करनाल के बढ़ते कदम, प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सहयोग के संग’’

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (न.रा.का.स) करनाल (समिति कोड 005)

सत्यमेव जयते

| | |
|---|---|
| न | नम्रतापूर्वक |
| रा | राजभाषा |
| का | कार्यान्वयन |
| स | समन्वय |

| | |
|---|---|
| क | कर्मठ केन्द्र नगर का |
| र | रहे राजभाषा उन्मुखी सर्वदा |
| ना | ना थमेंगे हमारे अथक प्रयास |
| ल | लक्ष्य न होंगे जब तक पूरे प्राप्त |

‘‘भाषा बहता नीर सरल’’

## नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल (कोड 005)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

समन्वय कार्यालय : भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (मानद् विश्वविद्यालय), करनाल

Co-ordination Office : ICAR-NDRI (Deemed University), Karnal

# नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कोड 005) करनाल की 2018-19 की प्रमुख राजभाषा गतिविधियों के छायाचित्र

# कर्णोदय

सोलहवाँ अंक

वर्ष 2018–19 की प्रथम छमाही, अप्रैल–सितम्बर, 2018

"नराकास करनाल के बढ़ते कदम,
प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सहयोग के संग"

## नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल (कोड 005)

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

समन्वय कार्यालय : भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (मानद् विश्वविद्यालय), करनाल
**Co-ordination Office : ICAR-NDRI (Deemed University), Karnal**

"नराकास करनाल के बढ़ते कदम,
प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सहयोग के संग"

# कर्णोदय(2018–19)

सोलहवाँ अंक (अप्रैल–सितम्बर, 2018)

"भाषा बहता नीर सरल"

**ध्येय (विजन)**

सदस्य कार्यालयों के सहयोग के द्वारा नगर में राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार एवं कार्यान्वयन को बढ़ावा देना।

**उद्देश्य (मिशन)**

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के मार्गदर्शन में राजभाषा हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार करना।

**अधिदेश (मेण्डेट)**

- नगर के केन्द्र सरकार के सदस्य कार्यालयों में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के कार्यान्वयन को नगर स्तर पर समन्वित करना।
- सदस्य कार्यालयों के सहयोग से विभिन्न राजभाषा गतिविधियों का आयोजन।


**संरक्षक एवं प्रकाशक**

डा. आर.आर.बी.सिंह, अध्यक्ष, न.रा.का.स., करनाल एवं निदेशक,
भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

**सलाहकार**

1. सुशांत साहा, संयुक्त निदेशक(प्रशासन) एवं कुलसचिव,
   भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल
2. कुणाल कालड़ा, वित्त एवं लेखाधिकारी,
   भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल (वित्तीय सलाहकार)

**मुख्य संपादक**

राकेश कुमार कुशवाहा, सदस्य सचिव, न0रा0का0स0 करनाल

**संपादन सहयोग**

- डा. अनुज कुमार, प्रधान वैज्ञानिक, भाकृअनुप–भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल
- डा. मगन सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल
- सुरेश अरोड़ा, वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा), पंजाब नैशनल बैंक, मण्डल कार्यालय, करनाल
- बिन्देश्वरी प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा), इण्डियन बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल
- प्रतिभा रतन, वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा), यूको बैंक, हरियाणा अंचल कार्यालय, करनाल
- दीपक कुमार, प्रबंधक(राजभाषा), यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल
- नीलम, प्रबंधक(राजभाषा), बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय करनाल
- सीमा कुमारी दूबे, प्रबंधक(राजभाषा), केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल
- निधि, सहायक प्रबंधक(राजभाषा), ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, मण्डल कार्यालय, करनाल
- अमित कुमार, राजभाषा अधिकारी, भारतीय जीवन बीमा निगम, मण्डल कार्यालय, करनाल
- डिम्पल शर्मा, स्नातकोत्तर शिक्षक, जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल



**संपर्क सूत्र :**
श्री राकेश कुमार कुशवाहा, सदस्य सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल एवं सहायक निदेशक (राजभाषा), राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा, पिन–132001.
फोन : 0184–2259045, फैक्स : 0184–2250042
ईमेल : tolic.karnal.ndri@gmail.com, राजभाषा विभाग की संयुक्त वेबसाइट :
http://narakas.rajbhasha.gov.in(Tolic Code 005)



इस अंक में प्रकाशित आलेखों एवं रचनाओं में व्यक्त विचारों/आंकड़ों आदि के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।



**प्रकाशक** : एरोन मीडिया, यू.जी.17, सुपर मॉल, सेक्टर 12, करनाल, पिन–132001. ईमेल : aaronmedia1@gmail.com

# नराकास करनाल की गृह पत्रिका ''कर्णोदय 2018–19'' प्रथम छमाही अप्रैल–सितम्बर 2018

## अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | अंतर्वस्तु एवं लेखक | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | घाघ की प्रेरक और सार्थक कहावतें (राकेश कुमार कुशवाहा) | 1–3 |
| 2. | बैंकिंग से सम्बंधित कुछ प्रचलित शब्द (संजीव कुमार ''शास्त्री'') | 03 |
| 3. | आईए जानें समानार्थक शब्दों में अर्थ–भेद (झलक कुशवाहा) | 04 |
| 4. | आज ही क्यों नहीं? (डा.उत्तम कुमार) | 05 |
| 5. | हिन्दी को समर्पित नारे (सोनिका यादव) | 05 |
| 6. | कैशलेस अर्थव्यवस्था की दिशा में भारत की नई पहल (सीमा कुमारी दूबे) | 6–7 |
| 7. | शिव–शक्ति (पंकज सिंह) | 8–9 |
| 8. | मेरी तीन कविताएं (पवन कुमार गुप्ता) | 10 |
| 9. | बैंकिंग कारोबार में हिंदी का प्रयोग (निधि) | 11 |
| 10. | सावन बरसे खेत में (संजीव कुमार ''शास्त्री'') | 11 |
| 11. | बाढ़ की त्रासदी (आयुष सिन्हा) | 12 |
| 12. | वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्यपरकता की आवश्यकता (सोनी कुमार, प्रबंधक,) | 13 |
| 13. | कविता द्वारा पर्यायवाची शब्द (पंकज सिंह) | 14 |
| 14. | हिन्दी–हमारी मातृभाषा (डा. चित्रनायक) | 14 |
| 15. | चिंता और चिता (सोनी कुमार डेहरिया) | 15 |
| 16. | राजभाषा की दशा व दिशा (कुलजीत सिंह) | 16 |
| 17. | भाषा (सुमित कुमार) | 17 |
| 18. | राजभाषा कार्यान्वयन और तकनीक (श्रवण कुमार मिश्रा) | 18 |
| 19. | हिन्दी नायाब है.... (सार्थक कुशवाहा) | 19 |
| 20. | दायित्व (प्रभजीत सिंह बहल) | 20 |
| 21. | आप भी सफल हो सकते हैं (राजीव कुमार) | 20 |
| 23. | हिन्दी के प्रचार–प्रसार हेतु भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा देय पुरस्कार/शील्ड | 21 |
| 24. | संदेश (डिम्पल शर्मा) | 22 |
| 25. | सोच (श्वेता) | 22 |
| 26. | ग्लोबल वार्मिंग से पृथ्वी को आ गया बुखार (पंकज सिंह) | 23 |
| 27. | एक चाह (नरेश कुमार वर्मा) | 24 |
| 28. | स्वच्छ–भारत (विजयपाल सहरावत) | 24 |

| | | |
|---|---|---|
| 29. | मेरी दो कविताएं (डा. रविन्द्र कुमार) | 25 |
| 30. | स्वस्थ लोकतंत्र के चार प्रमुख स्तम्भ (डा. चित्रनायक सिन्हा एवं राकेश कुमार) | 26–27 |
| 31. | त्याग (हुकम चन्द) | 27 |
| 32. | आओ एक वृक्ष लगाएं– पुराने दिनों में लौट जाएँ (दीपक कुमार) | 28 |
| 33. | मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता (रमीन्द्र कुमार) | 28 |
| 34. | ''मुसद्दी का लेनदेन'' एवं ''शिक्षा को समर्पित नारे'' (सारिका) | 29 |
| 35. | सपनों का संसार ''बाल मन्दिर'' (सुश्री चरनजीत) | 30 |
| 36. | दूरदर्शन पर एक सनसनीखेज समाचार (डा. चित्रनायक) | 31 |
| 37. | क्यों रंग यहाँ पर बिकते हैं.... (दीपक कुमार) | 32 |
| 38. | पता ही नहीं चला (शालिनी राकेश) | 32 |
| 39. | ज्ञान, विज्ञान और अनुसंधान में हिंदी भाषा (चित्रनायक) | 33–34 |
| 40. | खुशियाँ उगाकर देख लो (मुकेश कुमार तोमर) | 34 |
| 41. | वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी (सोनिका यादव) | 35–36 |
| 42. | प्रधान मंत्री मुद्रा योजना : रोजगार सृजन एवं देश के सामाजिक व आर्थिक विकास का एक प्रभावी साधन (बिंदेश्वरी प्रसाद) | 37–39 |
| 43. | विश्व पटल पर राजभाषा हिन्दी (अमित कुमार) | 40 |
| 44. | राष्ट्रीय एकता का आधार–हिन्दी (डा. कान्ता वर्मा) | 41 |
| 45. | मंजरी आम की (राकेश कुमार कुशवाहा) | 42–43 |
| 46. | समिति के सदस्य कार्यालय, उनके लोगो, कार्यालय प्रधान व ई–मेल | 44–46 |
| 47. | समिति द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु वार्षिक नराकास पुरस्कार से सम्मानित कार्यालय | 47 |
| 48. | अध्यक्षीय कार्यालय राडेअनुसं के विभिन्न राजभाषा कार्यकलाप | 48–55 |
| 49. | नराकास करनाल के सदस्य कार्यालयों की गतिविधियाँ | 56–61 |
| 50. | नराकास करनाल की गतिविधियों के छायाचित्र | 62–65 |


## ''कर्णोदय''

भाषाई फूलों से अभिसिंचित राजभाषा पत्रिका है कर्णोदय,
कर्णनगरी करनाल में अविरल हिंदी गंगा है बहाती।
न.रा.का.स. करनाल गतिविधियों का संकलन है कर्णोदय,
सदस्य कार्यालयों की रचनात्मकता को प्रदर्शित है करती।
प्रेरणा, प्रोत्साहन और सौहार्द का प्रतीक है कर्णोदय,
राजभाषा प्रचार–प्रसार की खुशबू है बिखेरती।
राजभाषा गतिविधियों को प्रमुखता से संजोती है कर्णोदय,
लेखकों को उत्कृष्ट हिन्दी लेखन हेतु प्रोत्साहित है करती।

**राकेश कुमार कुशवाहा**
**मुख्य संपादक, ''कर्णोदय'', न.रा.का.स., करनाल**

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल एवं
निदेशक, भा.कृ.अ.प.–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (मानद् विश्वविद्यालय)
अग्रसैन चौक, करनाल, हरियाणा, पिन–132 001
Chairman, Town Official Language Implementation Committee and
Director, ICAR-NDRI (Deemed University)
Karnal, Haryana-132001
ईमेल : dir.ndri@gmail.com, ☎ : 0184-2252800, Fax : 0184-2250042


# अध्यक्ष एवं संरक्षक की कलम से.....

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल अपने सदस्य कार्यालयों के कार्यपालकों, प्रशासनिक प्रमुखों व अधिकारियों के सहयोग से करनाल नगर में राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार एवं कार्यान्वयन की दिशा में सराहनीय कार्य कर रही है। इस नगर स्तरीय गौरवशाली संस्था का पदेन अध्यक्ष होना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। **''कर्णोदय''** के माध्यम से समिति रूपी परिवार के सभी सदस्य कार्यपालक प्रमुखों का उनके द्वारा किए जा रहे प्रयासों के लिए मैं हृदय से अभिनंदन करता हूँ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल के सदस्य कार्यालयों द्वारा **''कर्णोदय''** पत्रिका के माध्यम से राजभाषा नीति अनुपालन की दिशा में एक सामूहिक प्रयास किया जा रहा है। यह एक ऐसा मंच है जिसके द्वारा राजभाषा नीति के क्रियान्वयन के साथ–साथ हम अपने आंतरिक उद्‌गारों को भी अभिव्यक्त कर सकते हैं। नराकास की बैठकों की समीक्षा इस बात का प्रमाण है कि हम सब मिलकर राजभाषा हिन्दी संबंधी सरकारी नीति के अनुपालन की दिशा में अग्रसर हैं। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के मंच से सभी सदस्य कार्यालयों को अपने विचारों के संप्रेषण का सुअवसर प्राप्त होता है। नगर स्तर पर समय–समय पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं, जिससे सभी को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन प्राप्त होता है। समिति की प्रगति में इस संस्थान के सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल के सदस्य सचिव श्री राकेश कुमार कुशवाहा के अथक प्रयास सराहनीय हैं। निःसंदेह उनके अथक प्रयासों से समिति की गतिविधियों को नई गति मिली है।

मैं संपादक मंडल के सदस्यों एवं इस पत्रिका के लिए अपने लेख भेजने वाले लेखकों को भी बधाई देता हूँ जिनके संयुक्त प्रयासों से ही **''कर्णोदय''** पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया। पत्रिका के प्रकाशन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से दिए गए उनके सक्रिय सहयोग के फलस्वरूप ही यह पत्रिका समय पर प्रकाशित की जा सकी है। हमें यह विश्वास है कि भविष्य में भी आप सब का सहयोग इसी भाँति मिलता रहेगा।

**आर.आर.बी. सिंह**

संयुक्त निदेशक (प्रशासन) एवं कुलसचिव,
भा.कृ.अ.प.–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान
(मानद् विश्वविद्यालय)
अग्रसैन चौक,
करनाल,
हरियाणा, पिन–132 001


# संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल, राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार की दिशा में सक्रियता से कार्य कर रही है तथा भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के समग्र समन्वय में समिति के द्वारा ''कर्णोदय'' पत्रिका के इस अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं अध्यक्ष, न.रा.का.स. करनाल एवं संस्थान के निदेशक, संपादक मण्डल एवं रचनाएं प्रस्तुत करने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई देना चाहता हूँ।

मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका समिति के सदस्य कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी। संस्थान के राजभाषा एकक एवं विशेषकर समिति के सचिव श्री राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक (राजभाषा) के द्वारा किए जा रहे अथक प्रयासों की भी मैं सराहना करता हूँ।

**सुशांत साहा**

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (न.रा.का.स) करनाल (समिति कोड 005)

| | |
|---|---|
| न | नम्रतापूर्वक |
| रा | राजभाषा |
| का | कार्यान्वयन |
| स | समन्वय |

| | |
|---|---|
| क | कर्मठ केन्द्र नगर का |
| र | रहे राजभाषा उन्मुखी सर्वदा |
| ना | ना थमेंगे हमारे अथक प्रयास |
| ल | लक्ष्य न होंगे जब तक पूरे प्राप्त |

''भाषा बहता नीर सरल''

नियंत्रक (Comptroller)
भा.कृ.अ.प.–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान
(मानद् विश्वविद्यालय)
अग्रसैन चौक,
करनाल,
हरियाणा, पिन–132 001

# संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा अपनी पत्रिका 'कर्णोदय' के 16वें अंक के प्रकाशन हेतु मैं समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्य कार्यालयों को हृदय से बधाई देना चाहता हूँ।

समिति की चहुँमुखी प्रगति में राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष, न.रा.का.स. करनाल–डा. आर.आर.बी. सिंह के बहुमूल्य मार्गदर्शन व समिति के सचिव श्री राकेश कुमार कुशवाहा द्वारा समिति की गतिविधियों को उन्मुखी बनाने के लिए उनके अथक प्रयास अत्यंत सराहनीय हैं। ''कर्णोदय'' पत्रिका हिन्दी भाषा (राजभाषा) के प्रचार–प्रसार में एक अहम भूमिका निभा रही है।

हिन्दी भाषी होने के नाते हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम हिन्दी के प्रचार–प्रसार में अधिक से अधिक योगदान दें और अपनी मातृभाषा व राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग करने पर गर्व महसूस करें। मेरा यह निजी अनुभव रहा है कि विगत 2 वर्षों में हमारे राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान के सरकारी कामकाज में हिन्दी पत्राचार में सराहनीय प्रगति हुई है। संस्थान में राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए संस्थान के राजभाषा एकक के द्वारा मिशन मोड में सक्रियतापूर्वक कार्य किया जा रहा है। संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों में राजभाषा एकक के द्वारा किए जा रहे प्रयासों एवं दीर्घकालिक लक्ष्यों की विस्तारपूर्वक समीक्षा से यह विश्वास होता है कि राजभाषा हिन्दी के बढ़ावे को नई दिशा मिल रही है। संस्थान में मंत्रालयिक व प्रशासनिक स्टाफ को हिन्दी टाइपिंग में प्रशिक्षित करवाने, समय समय पर हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन करने, वेबसाइट पर सभी फार्मों को हिन्दी/द्विभाषी करने एवं सभी कैडर के अधिकारियों, वैज्ञानिकों व कर्मचारियों को हिन्दी पत्राचार में आने वाली परेशानियों को दूर करने के लिए अल्प सूचना पर मदद देने के लिए सदैव तत्पर रहने का कार्य अनुकरणीय है।

संस्थान के द्वारा नराकास के अध्यक्षीय कार्य के रूप में भी नगर स्तर पर करनाल में स्थित समिति के सदस्य कार्यालयों के सहयोग से किए जा रहे प्रयास स्थानीय समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं के माध्यम से जनसामान्य में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूक कर रहे हैं। निःसन्देह राजभाषा हिन्दी ने समिति के नगरस्तरीय मंच के माध्यम से केन्द्र सरकार के कार्यालयों, शोध संस्थानों, बैंकों, उपक्रमों, विद्यालयों को ''विभिन्नता में एकता'' रूपी एकसूत्र में पिरोने का महत्वपूर्ण कार्य भी किया है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी समिति की गतिविधियाँ सफलता की नित नई गाथा सृजित करेंगी तथा **''कर्णोदय पत्रिका''** राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभाती रहेगी। मैं इसके लिए नराकास करनाल के सभी पदाधिकारियों, सदस्य कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधानों, अधिकारियों, राजभाषा अधिकारियों व कर्मचारियों को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

**डी.डी. वर्मा**

निदेशक (राजभाषा)
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार
नई दिल्ली

## संदेश

यह हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा **"कर्णोदय"** पत्रिका के 16वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल के सदस्य कार्यालयों द्वारा समिति के मार्गदर्शन में एवं राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन के लिए आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यकलापों, आलेख, रचनाओं आदि को प्रकाशित किया जाएगा। इस तरह से सभी सदस्य कार्यालय दूसरे कार्यालय की राजभाषा गतिविधियों से परिचित होंगे और उन्हें अपने कार्यालय में राजभाषा के क्षेत्र में नए प्रयोग करने का अवसर भी प्राप्त होगा।

राजभाषा हिन्दी न केवल भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है बल्कि विश्व में बोली जाने वाली अग्रणी भाषाओं में से एक है। इस प्रकार के प्रकाशनों से राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट साहित्य तथा विविध प्रकार की जानकारी को पाठकों तक पहुँचाना आसान हो जाता है। मैं ''कर्णोदय'' पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ इसकी सफलता की भी आशा करती हूँ।

**सीमा चोपडा**

भाकृअनुप
ICAR

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch

उप निदेशक (कार्यान्वयन),
उत्तर क्षेत्रीय कार्यान्वयन
कार्यालय–1, गृह मंत्रालय,
भारत सरकार
नई दिल्ली

## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त आनन्द की अनुभूति हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा अपनी पत्रिका 'कर्णोदय' के सोलहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। भारत सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों एवं निगमों, बैंकों में राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए किए जा रहे कार्यों के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल निःसन्देह ही बधाई की पात्र है। यह एक ऐसा मंच है जिसके द्वारा राजभाषा नीति के क्रियान्वयन के साथ–साथ हम अपने आंतरिक उद्‌गारों को अभिव्यक्त कर सकते हैं। राजभाषा विभाग की संयुक्त वेबसाइट पर समिति के द्वारा अपनी गतिविधियों को समय पर अद्यतन किया जा रहा है तथा समिति की अधिकांश गतिविधियाँ अन्य नराकासों के लिए अनुकरणीय है। मुझे आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि नराकास करनाल द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार व प्रोत्साहन की दिशा में किए जा रहे प्रयास भविष्य में भी इसी प्रकार जारी रहेंगे।

समिति की चहुँमुखी प्रगति में संस्थान के निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास करनाल एवं समिति के सदस्य सचिव श्री राकेश कुमार कुशवाहा के प्रयास सराहनीय हैं। समिति के सराहनीय कार्यों के लिए गृह मंत्रालय द्वारा भी इसे समय–समय पर पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया है। भविष्य में समिति प्रगति की अनंत सीमाओं को छुएगी तथा **"कर्णोदय"** पत्रिका इस महत्वपूर्ण अभियान में अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभाएगी। मैं इसके लिए नराकास करनाल को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

**प्रमोद कुमार शर्मा**

सदस्य सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल (कोड 005)
सहायक निदेशक(राजभाषा)
भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (मानद् विश्वविद्यालय)
करनाल, हरियाणा–132 001
Secretary, Town Official Language Implementation Committee, Karnal &
Assistant Director (Official Language)
ICAR-NDRI (Deemed University) Karnal, Haryana-132001
ईमेल: tolic.karnal.ndri@gmail.com, ☎ : 0184-2259045, Fax : 0184-2250042, Mob. 8708673785

# मुख्य संपादक की कलम से ...

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका ''कर्णोदय'' के माध्यम से आपके सम्मुख अपनी बात रखने का सुअवसर प्राप्त होता है। इसी क्रम में आपको समिति के वर्ष 2018–19 के सोलहवें अंक को आपके हाथों में सौंपते हुए अपार हर्ष हो रहा है। इस अंक में नराकास करनाल के सदस्य कार्यालयों का ब्योरा, सदस्य कार्यालयों के अन्तर्गत आयोजित की जाने वाली विभिन्न राजभाषा गतिविधियों का ब्योरा एवं समिति द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों को भी शामिल किया गया है। मैं नराकास करनाल के सदस्य कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधानों, राजभाषा अधिकारियों, राजभाषा समन्वयकों, हिन्दी अनुवादकों, हिन्दी लिपिकों, कर्मचारियों, लेखकों–लेखिकाओं तथा विद्यार्थियों को हृदय से धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने अपने आलेखों, रचनाओं, बधाई–सन्देशों एवं विज्ञापनों से इस अंक को सफल बनाने में अपना–अपना बहुमूल्य सहयोग हमें प्रदान किया है तथा समिति के रचनात्मक कार्यों की सदैव मुक्त कंठ से प्रशंसा की है।

राजभाषा विभाग, गृह–मंत्रालय, भारत सरकार के सक्षम प्राधिकारियों, डा.आर.आर.बी.सिंह, निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास, करनाल, इस संस्थान के श्री सुशांत साहा, संयुक्त निदेशक(प्रशासन) व कुलसचिव तथा नराकास करनाल के सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों व पदाधिकारियों को हम विशेष रूप से बधाई देना चाहते हैं कि उनके मार्गदर्शन में समिति ने कई महत्वपूर्ण एवं अनुकरणीय कार्य करने का प्रयास किया है। इनमें सदस्य कार्यालयों के डाटाबेस को अद्यतन करना, कागजविहीन पत्राचार, समय–समय पर विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं, कार्यशालाओं व संगोष्ठियों का आयोजन, उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालयों का राजभाषा शील्ड व ट्राफी से सम्मान, उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालय प्रधानों, राजभाषा अधिकारियों व कर्मचारियों का प्रशस्ति–पत्र से सम्मान, समिति के वित्तीय अभिलेखों की समय पर लेखा परीक्षा एवं समिति की पत्रिका के समय पर प्रकाशन आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

समिति के अध्यक्ष महोदय के मार्गदर्शन एवं सलाहकार व संपादक मण्डल के सतत् सहयोग के बिना इस अंक को समय पर प्रकाशित कर पाना संभव नहीं था। पत्रिका को समय पर प्रस्तुत करने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देने वाले समिति के पदाधिकारियों, राजभाषा अधिकारियों व राडेअनुसं (एनडीआरआई) करनाल के अधिकारियों को मैं हृदय से धन्यवाद भी देता हूँ। आशा है कि पूर्व की भांति इस अंक को भी सुधी पाठकगण रूचिकर और उपयोगी पायेंगे। इस प्रतिष्ठित पत्रिका के प्रबुद्ध पाठकों से हमारा पुनः विनम्र निवेदन है कि वे इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों के बारे में अपनी प्रतिक्रियाएं अवश्य भेजें। उनकी प्रतिक्रिया इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाने में अपनी अहम् भूमिका अदा करती है एवं इस अंक पर प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

**जय–हिन्द। वंदे मातरम्।।**

**राकेश कुमार**

# संदेश आपके

प्रिय राकेश जी (सदस्य सचिव, नराकास करनाल),

ई–मेल द्वारा कर्णोदय (2017–18) पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका में प्रकाशित समस्त सामग्री ज्ञानवर्धक एवं पठनीय होने के साथ–साथ रोचक भी है। गुणवत्ता एवं उत्कृष्टता की दृष्टि से पत्रिका अति सुन्दर है। राजभाषा के साथ–साथ साहित्य से संबंधित सभी विषयों को एक सूत्र में सहजता व सुन्दरता के साथ पिरोया गया है। पत्रिका के समस्त लेख, कविताएं एवं अन्य संस्थान संबंधी जानकारी लेखकों के समर्पण भाव को प्रदर्शित करती है। मैं अपनी और राजभाषा अनुभाग के समस्त हिन्दी प्रेमियों की ओर से आप और संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ। यथा नाम, तथा गुण की लोकोक्ति को सार्थक करने के लिए आप सब बधाई के पात्र हैं।

सुजाता जेठी, उप निदेशक,
भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर

राजभाषा पत्रिका ''कर्णोदय' के 15वें अंक(2017–18) का मुख्य पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है तथा पत्रिका का विन्यास, साज–सज्जा, इसकी सामग्री की गुणवत्ता, मुद्रण स्तर आदि अत्यंत सराहनीय हैं। पत्रिका में शामिल संदेश सारगर्भित एवं प्रेरणा से पूर्ण हैं तथा समिति के नवोन्मेषी कार्यक्रमों में सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ–साथ छात्र–छात्राओं, अध्यापकों आदि को शामिल करना अन्य समितियों के लिए प्रेरक व अनुकरणीय है। नराकास करनाल के कुशल एवं प्रभावी समन्वय से समिति के सदस्य कार्यालयों के द्वारा भी राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार व कार्यान्वयन की दिशा में परिणामोन्मुखी कार्य किये जा रहे हैं। आशा है कि राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान(एनडीआरआई) के अध्यक्षीय कार्यालय के रूप में समिति के उत्कृष्ट समन्वय में समिति दिन प्रतिदिन उन्नति करेगी। पत्रिका में राजभाषा हिंदी के ज्ञान को बढ़ाने हेतु विराम चिह्नों का प्रयोग, आओ हिंदी शब्द प्रयोग सुधारें, राजभाषा ज्ञान प्रश्नावली एवं प्रतियोगिताओं के आयोजन के उपरांत उनके लेखों को पत्रिका में स्थान देकर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल दूसरे अधिकारियों/कर्मचारियों का भी प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु उत्साहवर्धन कर रही है, इसके लिए सम्पादक मंडल को बहुत मुबारकवाद ।

श्री मेजर सिंह, निदेशक, एमएसएमई विकास संस्थान, करनाल

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा ''कर्णोदय'' पत्रिका के 16वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका का 15वां अंक बहुत ही आकर्षक और ज्ञानवर्धक था। जहां पत्रिका में एक ओर राजभाषा हिन्दी संबंधी विभिन्न जानकारी को एकत्रित किया गया है, वहीं दूसरी ओर जीवन के विभिन्न पहलुओं को लेखों और कविताओं के माध्यम से समेटने का सुंदर प्रयास किया गया है। साथ ही पत्रिका के माध्यम से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अन्य गतिविधियों को सचित्र जानने का सुअवसर मिला।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार को एक नई दिशा देगी। ''कर्णोदय'' पत्रिका के आगामी अंकों के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

अमरजीत सिंह, उप महाप्रबंधक
केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल

# संदेशे आपके...

प्रिय श्री राकेश जी, आपके कुशल, सुयोग्य मार्गनिर्देशन व सत्प्रयत्न से "कर्णोदय(2017–18) का अभिनव प्रकाशन अत्यंत सराहनीय व अनुकरणीय है। बहुत दिनों बाद न.रा.का.स. के तत्वावधान में अनूठी व समग्र सामग्री संजोये, गृह पत्रिका पढ़ने को मिली। सारगर्भित सामग्री न केवल राजभाषा रथ को आगे बढ़ाने में ऊर्जा प्रदान कर रही है बल्कि मानव जीवन को भी रिचार्ज करने में सक्षम है। यह संपादक की दीर्घकालीन सोच और साधना का परिणाम है। संदेश से शुरू होकर नारे तक या सरकारी कार्मिकों की सुषुप्त बेजोड़ प्रतिभा तक, बहुत कुछ शालीन, कलात्मक व तकनीकी रूप में उजागर हुआ है। सामूहिक सत्प्रयत्न अभिनंदनीय है । भविष्य में नयी ऊँचाइयाँ छूने की शुभकामनाओं सहित।

आपका–डॉ. जयशंकर यादव,<br>
सचिव , न.रा.का.स., बेलगावी (कर्नाटक)<br>
द्वारा ईमेल : drjaishankar50@gmail.com

आपके कार्यालय की वार्षिक गृह पत्रिका कर्णोदय (2017–18) की प्रति ई–मेल द्वारा प्राप्त हुई। इस पत्रिका में संग्रहित सभी रचनायें प्रभावशाली एवं उच्च कोटि की हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है। पत्रिका के उक्त अंक में सम्मिलित की गई, डॉ. मगन सिंह की कविता "शिक्षक", डॉ. चित्रनायक की रचना राजभाषा : दशा और दिशा', श्री राकेश कुमार की रचना " क्षमा बड़न को चाहिए" तथा श्री संजीव कुमार की कविता "अश्रु" बहुत ही प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कल्याण अधिकारी / राजभाषा कक्ष, भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग, कार्यालय महालेखाकार(लेखा व हक), जनपथ, जयपुर, पिन–302005 (पत्र सं. रा.भा. क./पत्रिका/के–18/2018–19/164 दि. 11.7.18 के तहत प्राप्त)

कर्णोदय के वर्ष 2017–18 के पन्द्रहवें अंक की सुन्दर प्रति प्राप्त हुई। देखकर मन प्रसन्न हो उठा। हरेक रचना दूसरी रचना से बेहतर लगती रही। कविता अश्रु, माँ, शिक्षक आदि व रचना धर्म, गुरु की सीख, मिट्टी के दर्शन आदि व अन्य सभी बहुत ही अच्छे लगे। पुरस्कार प्राप्त करने व विभिन्न गतिविधियों की सुन्दर तस्वीरों ने मन मोह लिया। विराम चिन्हों का प्रयोग, राजभाषा ज्ञान प्रश्नावली, वाक्यांश–अनुवाद प्रतियोगिता व अन्य प्रतियोगिताओं के उत्तर–पत्रक काफी अच्छे व जानकारी देने हेतु बहुत ही महत्वपूर्ण लगे। पत्रिका के संरक्षक व नराकास करनाल के पदेन अध्यक्ष डा. आर.आर.बी.सिंह, निदेशक, भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल व मुख्य संपादक श्री राकेश कुमार कुशवाहा व सम्पूर्ण संपादक मंडल इस प्रकाशन के लिए धन्यवाद के पात्र हैं। उम्मीद है भविष्य में भी इसी गुणवत्ता का प्रकाशन जारी रहेगा । धन्यवाद।

डा. चित्रनायक, वरिष्ठ वैज्ञानिक,<br>
भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल।

ईमेल से आपकी समिति की कर्णोदय पत्रिका (2017–18) भेजने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। बहुत ही सारगर्भित पत्रिका है। सादर।

डॉ राजीव कुमार रावत,

सदस्य–सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति खड़गपुर, दूरभाष 03222 281718 (ईमेल से प्राप्त)

# संदेशे आपके...

महोदय, आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका ''कर्णोदय'' के 15 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में संग्रहित सभी रचनायें प्रभावशाली एवं उच्च कोटि की हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है। पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित किया गया श्री सोनी कुमार का लेख ''राजभाषाः हिन्दी और अंग्रेजी का द्वंद्व'', श्री संजीव कुमार का लेख ''आज की बैंकिंग सेवाएं और समाज'', श्री सोनी कुमार की कविता ''जिन्दगी के खिलाड़ी'' तथा श्री ध्रुव ज्योति का लेख ''अपना समय अच्छाई में व्यतीत करो'' प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय–कल्याण अधिकारी/राजभाषा कक्ष,

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान

महोदय, जय हिन्द। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल की वार्षिक पत्रिका 'कर्णोदय' का 15 वाँ वार्षिक अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका की साज–सज्जा एवं आकार में उत्तरोत्तर सुधार हो रहा है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि करनाल में स्थित सभी कार्यालयों की राजभाषा प्रगति रिपोर्ट का संकलन इस पत्रिका में दिया गया है। राजभाषा ज्ञान प्रश्नावली रोचक लगी। विराम चिन्हों के उपयोग पर दी गई जानकारी सामायिक एवं उपयुक्त है। पत्रिका में प्रकाशित लघु कथा ''सकारात्मक दृष्टिकोण'' बहुत अच्छी लगी। इसके सभी आलेख उच्च–स्तरीय लगे। श्री वाजिद अली द्वारा लिखित हिंदी 'गजल' भी प्रशंसनीय है। यह पत्रिका सूचना एवं ज्ञान की हर कसौटी पर खरी उतरती है। पत्रिका का संपादन मंडल एवं प्रकाशन टीम इसके लिए बधाई की पात्र है।

अश्विनी कुमार रॉय, वरिष्ठ वैज्ञानिक,

पशु शरीर क्रिया विभाग, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान करनाल

द्वारा ईमेल : royashwani@gmail.com

मुझे इस बात की अपार प्रसन्नता है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल द्वारा राजभाषा पत्रिका 'कर्णोदय' के 16वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। समाज और संस्कृति में परिवर्तन एवं विकास के साथ–साथ भाषा अपना रूप बदलती है और आत्मसात् होती चली जाती है। यह भी शाश्वत् सत्य है कि अपनी भाषा में मौलिक विचारों की अभिव्यक्ति में जो ताकत होती है वह दूसरी भाषा में नहीं हो सकती और इन्हीं विचारों की अभिव्यक्ति को अपना माध्यम बनाते हुए हमारी राजभाषा हिन्दी का संस्कृति से गहरा संबंध स्थापित करते हुए मात्र हमारे नैतिक मूल्यों को स्थापित नहीं करते बल्कि हमारे साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों को निखार कर, सम्पूर्ण विकास हेतु हमें आगे बढ़ने को प्रेरित करती है।

मैं 'कर्णोदय' पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य की कामना के साथ गरिमापूर्ण प्रयास एवं इसके सफल प्रकाशन हेतु न.रा.का.स. करनाल के माननीय अध्यक्ष, माननीय सदस्य सचिव, व मुख्य सम्पादक, सभी उप–सम्पादकों के साथ–साथ न.रा.का.स. करनाल के सभी सम्मानित सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ। निःसन्देह यह राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार की ओर बढ़ाया गया एक ठोस कदम है।

जसराम सिंह, प्राचार्य

जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल

प्रिय राकेश जी, आपके द्वारा प्रेषित कर्णोदय पत्रिका का 15वां अंक प्राप्त हुआ। गत अंकों की भाँति यह अंक भी ज्ञानवर्धक एवं रचनात्मक सामग्री से समृद्ध है जिसे पढ़कर मन आह्लादित हो गया। राजभाषा कार्यान्वयन निश्चित ही प्रेरणा और प्रोत्साहन से वर्धित होता है तथा यह संपादकीय के माध्यम से व्यक्त किया है जो सहयोगी एवं सहगामी सदस्य कार्यालयों के लिए मार्ग प्रशस्त करने वाला है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं एवं आलेख आकर्षक, प्रेरणास्पद, तथ्यपरक व सूचनात्मक हैं जो बोधगम्य और सरस भाषा में प्रकाशित है। पत्रिका में सुन्दर एवं भावानुकूल छायाचित्रों ने रचनाओं के मौन को तोड़कर उनमें वाक्संचार कर दिया है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम एवं नराकास, करनाल की समस्त गतिविधियां की जानकारी प्राप्त हो रही है। इसके साथ ही 'राजभाषा दशा और दिशा' तथा 'क्षमा बड़न को चाहिए' आलेख अनुकरणीय हैं। मनोरम एवं आकर्षक सामग्री तथा साज सज्जा युक्त ''कर्णोदय'' पत्रिका के संपादन–संयोजन हेतु आपको एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

तरूण शर्मा, राजभाषा अधिकारी, केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय–बेंगलूरू

धन्यवाद। ई–पत्रिका ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी है। सादर।

हरिराम पंसारी, वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा),

नालको, निगम कार्यालय, भुवनेश्वर एवं सदस्य–सचिव,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), भुवनेश्वर

ईमेल : hariram.pansari@nalcoindia.co.in

हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि भाषा और शिल्प की दृष्टि से सुसज्जित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल की पत्रिका के 16वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में भी सार्थक तथा सराहनीय प्रयास किए जा रहे हैं। इस अवसर पर मैं समिति के अध्यक्षीय कार्यालय, रा.डे.अनु.सं. करनाल के प्रबंधन तथा राजभाषा विभाग का आभार व्यक्त करता हूँ जिनका मार्गदर्शन तथा सहयोग हमें हमेशा मिलता रहता है। इस पत्रिका में सामाजिक, बैंकिंग तथा सामान्य ज्ञान संबंधी सामग्री का अच्छा समावेशन किया गया है। मुझे पूरा विश्वास है कि सभी सुधी पाठक इससे लाभान्वित होंगे तथा वे उचित मार्गदर्शन भी प्राप्त करेंगे। पत्रिका के आगामी अंकों के लिए हमारी शुभकामनाएं। हमारी अपेक्षा रहेगी कि आप इसी तरह नवोन्मेषी विषयों के साथ इसी क्रम में साज–सज्जा सहित वैचारिक ऊर्जा से संपन्न पत्रिका का प्रकाशन करेंगे।

आई.एस. तुलसी

उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

यूको बैंक

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र है। किसी भी देश में लोकतन्त्र की सफलता के लिये यह आवश्यक है कि उस देश का कामकाज उसकी जनता की भाषा में हो। हमारे लोक व्यवहार की भाषा हिन्दी है। हमारी मातृभाषा हिन्दी दिनों दिन प्रगति कर रही है। इसका डंका विश्व पटल पर बज रहा है। अभी हाल ही में हिन्दी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बनी है। देश में हिन्दी के प्रति प्रेम और आदर की भावना रखने वाले कर्मचारियों की संख्या काफी बड़ी है। इस प्रगति को बनाए रखना हम सभी का धर्म है। यह हर्ष का विषय है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा पिछले कई वर्षो से कर्णोदय पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से सभी सदस्य कार्यालय दूसरे कार्यालय की राजभाषा गतिविधियों से परिचित होते हैं और उन्हें अपने कार्यालय में राजभाषा के क्षेत्र में नए प्रयोग करने का अवसर प्राप्त होता है। इस प्रकार के प्रकाशनों से राजभाषा हिन्दी का विकास होता है। मैं कर्णोदय पत्रिका के 2018–19 के सोलहवें अंक के प्रकाशन हेतु न.रा.का.स. करनाल को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

डा. विनोद कुमार पण्डिता, अध्यक्ष

भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान

क्षेत्रीय स्टेशन, करनाल

राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के समन्वय में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा प्रकाशित की जा रही समिति की वार्षिक गृह पत्रिका "कर्णोदय" के वर्ष 2018–2019 के सोलहवें अंक के प्रकाशन के लिए हमारे कार्यालय की ओर से शुभकामनायें।

"कर्णोदय" पत्रिका के माध्यम से वर्ष के दौरान नराकास, करनाल के सदस्यों द्वारा किए गए राजभाषा कार्यान्वयन की गतिविधियों को एक मंच के माध्यम से प्रकट करने का प्रशंसनीय कार्य किया जा रहा है। हमें आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन को नई दिशा प्रदान करेगी।

सत्य प्रकाश,

क्षेत्रीय प्रबंधक

बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल

प्रिय साथियों

मुझे अतीव खुशी हो रही है कि आज मैं कर्णोदय के 16वें अंक के साथ संवाद करने जा रही हूँ। पत्रिकाएं विचारों की संवाहक होती हैं, विचारों का आदान प्रदान सीखने की एक प्रक्रिया भी है। यह रचनाकारों की प्रतिभा को उजागर करने का एक अवसर प्रदान करती है ।

हम आज तकनीकी युग में जी रहे हैं, जहाँ बैंकिंग ही नहीं हर क्षेत्र में तकनीकी का ही बोलबाला है, ऐसे में हिन्दी की प्रगति एवं प्रचार–प्रसार के लिए हिन्दी को सर्वप्रथम तकनीकी से जोड़ना होगा। इसका आशय यह है कि अंग्रेजी में किसी साफ्टवेयर विकास के पहले हिन्दी में साफ्टवेयर विकसित किया जाए। हिन्दी अंग्रेजी के लिए मोहताज न रहे। आपके संस्थान से विनम्र निवेदन है कि हिन्दी में शोध करके देश एवं विश्व को नया संदेश दें। आज देश की संपर्क भाषा हिन्दी है। इस भूमिका को हिन्दी बखूबी निभा रही है ।

यह कहना अप्रासांगिक नहीं होगा कि जिन देशों ने कारोबार हेतु अपनी मातृभाषा को अपनाया है, उस देश ने अपनी सामाजिक, आर्थिक एव तकनीकी क्षेत्र में समृद्धि हासिल की है ।

मैं सभी लेखकों/रचनाकारों को पत्रिका में सहयोग देने के लिए सादर आभार प्रकट करती हूँ । इस अंक के सभी लेख ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक हैं। इस माध्यम से हिन्दी का अधिकाधिक प्रचार–प्रसार होगा एवं आने वाले समय में यह पत्रिका मील का पत्थर साबित होगी ।

मैं कामना करती हूँ कि हमारे उपयोगी एवं सार्थक प्रयास हिन्दी के प्रचार प्रसार में सहायक होने के साथ हिन्दी को उचित स्थान दिलाने में भी कारगर होंगे ।

आगामी अंक की प्रतीक्षा के साथ।

धन्यवाद

सविता रानी गुप्ता

उप महाप्रबंधक/अंचल प्रबन्धक, इण्डियन बैंक, करनाल

## नराकास करनाल की "कर्णोदय (2018–19, प्रथम छमाही अंक) हेतु संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल की गृह पत्रिका "कर्णोदय" के वर्ष 2018–19 के प्रथम छमाही अंक के प्रकाशन हेतु भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान करनाल की ओर से शुभकामनाएं सम्प्रेषित करते हुए हमें हर्ष हो रहा है।

समिति भारत सरकार, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के मार्गदर्शन में एवं राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के निदेशक डा.आर.आर.बी. सिंह की अध्यक्षता में दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति कर रही है। इस संस्थान सहित समिति के सभी सदस्य कार्यालय अपने कार्यालय स्तर पर राजभाषा हिन्दी के क्रियान्वयन हेतु हर संभव प्रयास कर रहे हैं। इसकी पुष्टि समिति की छमाही समीक्षा बैठकों के दौरान स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। समिति के सचिव श्री राकेश कुमार के द्वारा सितंबर, 2016 में समिति के सदस्य सचिव का कार्यभार संभालने के उपरांत से समिति की गतिविधियों को नई सक्रियता व दिशा मिली है, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। स्थानीय समाचार पत्रों में समिति सचिवालय व सदस्य कार्यालयों के द्वारा समिति के तत्वावधान में विभिन्न राजभाषा गतिविधियों के आयोजनों की खबरों को प्रमुखता से स्थान प्राप्त होना भी जन–जन में समिति की बढ़ती हुई पहचान की पुष्टि करता है।

पत्रिका के सोलहवें अंक से राजभाषा हिन्दी को नई ऊँचाई प्राप्त होगी, इस आशा के साथ अध्यक्ष, नराकास, करनाल, समिति के सदस्य सचिव श्री राकेश कुमार कुशवाहा, संपादक मंडली व सभी लेखकों को शुभकामनाएं।

डा.ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक,

भाकृअनुप–भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि भाषा शिल्प की दृष्टि से सुसज्जित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल की पत्रिका के 16वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। नराकास करनाल के द्वारा पत्रिका के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में सार्थक तथा सराहनीय प्रयास किए जा रहे हैं। करनाल स्थित भारत सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा किये जा रहे प्रयास बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। हमें आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि समिति एवं उसके सभी सदस्यों द्वारा इस दिशा में किये जा रहे प्रयासों द्वारा करनाल स्थित सभी कार्यालयों में राजभाषा की निरंतर प्रगति होगी तथा कर्णोदय पत्रिका इस महत्वपूर्ण अभियान में अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के आगामी अंक के लिए हमारी शुभकामनाएँ। हमारी अपेक्षा रहेगी कि आप इसी तरह नए–नए विषयों के साथ इसी क्रम में साज– सज्जा के साथ वैचारिक ऊर्जा से सम्पन्न पत्रिका का प्रकाशन करेंगे।

नवनीत कुमार, क्षेत्र प्रमुख

यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, करनाल

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा प्रकाशित की जा रही समिति की गृह पत्रिका कर्णोदय के वर्ष 2018–2019 की प्रथम छमाही के सोलहवें अंक के प्रकाशन के लिए भारतीय जीवन बीमा निगम, मण्डल कार्यालय करनाल की ओर से शुभकामनायें।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के अध्यक्षीय समन्वय में समिति अपने सदस्य कार्यालयों के सहयोग से नगर में राजभाषा के बढ़ावे के लिए उल्लेखनीय कार्य कर रही है। भारतीय जीवन बीमा निगम, मण्डल कार्यालय करनाल अपने कार्यालय के साथ–साथ सभी अधीनस्थ शाखा कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है तथा आगे भी इस कार्यालय के द्वारा समिति को यथासंभव सहयोग प्रदान किया जाएगा।

आशा करते हैं कि समिति की कर्णोदय पत्रिका अपने प्रत्येक समग्र अंक की भांति आगे भी राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन को नई दिशा प्रदान करती रहेगी।...... शुभकामनाओं सहित।

जोगेन्द्र कुमार

वरिष्ठ मण्डल प्रबन्धक

भारतीय जीवन बीमा निगम

मण्डल कार्यालय, करनाल

महोदय,

जय भारत–जय भारती

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल की वार्षिक पत्रिका 'कर्णोदय' का 15 वां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका करनाल में स्थित राजभाषा समिति के सभी कार्यालयों व संस्थानों के द्वारा हिन्दी के उत्थान व प्रगति के लिए किये जा रहे प्रयासों का सुंदर चित्रण कराती है। पत्रिका राजभाषा की प्रगति के साथ–साथ अन्य रोचक व अति महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ समेटे हुए है। मैं श्री राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक एवं सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल को कर्णोदय पत्रिका के प्रकाशन की बधाई व शुभकामनाएं हृदय से प्रेषित करता हूँ।

राजकुमार

प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय करनाल

मान्यवर,

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूं कि न.रा.का.स., करनाल शीघ्र ही अपनी पत्रिका "कर्णोदय" के सोलहवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिका के प्रकाशन से सदस्य कार्यालयों को राजभाषा सम्बन्धी विभिन्न प्रकार की सामग्री तथा राजभाषा अधिनियम एवं राजभाषा नियमों की जानकारी उपलब्ध हो सकेगी और सदस्य कार्यालय इससे लाभान्वित होंगे और राजभाषा के प्रचार–प्रसार की दिशा में प्रेरित होंगे। मैं, न. रा.का.स., करनाल के सदस्य सचिव को पत्रिका प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

के. के. सिंगला मण्डल प्रमुख पंजाब नैशनल बैंक

मण्डल कार्यालय, करनाल

# घाघ की प्रेरक और सार्थक कहावतें

आलेख

**राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक**
**राजभाषा विभाग, राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान(मानद् विश्वविद्यालय), करनाल**

भारतीय कृषि अनुसंधान पत्रिका के अन्तर्गत डा. बृजेश लता एवं ज्योति उपाध्याय के द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र ''कृषि एवं वर्षा संबंधित हिन्दी कहावतें–एक अध्ययन'' पढ़कर यह महत्वपूर्ण जानकारी मिली कि घाघ और भड्डरी की कहावतें हमारे देश में खासी प्रचलित हैं। इन कहावतों के माध्यम से सूखा या बाढ़ जैसी आपदाओं का पहले से ही अनुमान लगाया जा सकता है। पढ़ते ही घाघ और भड्डरी के बारे में जानने की तीव्र उत्कंठा मन में जाग चुकी थी। मुझे यह लगा कि मैंने 'घाघ' शब्द को पहले कभी सुना जरूर है। याद आया कि, ''सामान्यतया कोई व्यक्ति अत्यंत नीतिनिपुण, चालाक एवं गहरी सूझबूझ और पैठ रखने वाला हो तो उसे 'घाघ' कह दिया जाता है कि अरे! वह तो बड़ा ही घाघ है।'' अधिक जानकारी के लिए अन्तरजाल पर सर्च किया तो विकिसूक्ति व मुक्त ज्ञानकोश विकिपीडिया लिंक के अंतर्गत यह ज्ञात हुआ कि आज के समय में टीवी व रेडियो पर मौसम संबंधी जानकारी मिल जाती है। लेकिन सदियों पहले न टीवी–रेडियो थे, न सरकारी मौसम विभाग। ऐसे समय में महान किसान कवि घाघ व भड्डरी की कहावतें खेतिहर समाज का पीढ़ियों से पथप्रदर्शन करती आयी हैं। बिहार व उत्तरप्रदेश के गाँवों में ये कहावतें आज भी काफी लोकप्रिय हैं। जहाँ वैज्ञानिकों के मौसम संबंधी अनुमान भी गलत हो जाते हैं, वहाँ ग्रामीणों की धारणा है कि घाघ की कहावतें प्रायः सत्य साबित होती हैं। घाघ कृषि पंडित एवं व्यावहारिक पुरुष थे। उनका नाम भारतवर्ष के, विशेषतः उत्तरी भारत के, कृषकों के मुँह पर रहता है। चाहे बैल खरीदना हो या खेत जोतना, बीज बोना हो अथवा फसल काटना, घाघ की कहावतें उनका पथ प्रदर्शन करती हैं। ये कहावतें मौखिक रूप में भारत भर में प्रचलित हैं। घाघ के जन्मकाल एवं जन्म स्थान के संबंध में बड़ा मतभेद है। शिव सिंह सरोज का मत है कि इनका जन्म संवत् 1753 में हुआ था, किंतु पं. रामनरेश त्रिपाठी ने बहुत खोजबीन करके इनके कार्यकाल को सम्राट अकबर के शासन काल में माना है। इनकी जन्मभूमि कन्नौज के पास चौधरीसराय नामक ग्राम बताई जाती है। कहा जाता है, अकबर ने प्रसन्न होकर इन्हें सरायघाघ बसाने की आज्ञा दी थी, जो कन्नौज से एक मील दक्षिण में स्थित है। अभी तक घाघ की लिखी हुई कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं हुई है। हाँ, उनकी वाणी कहावतों के रूप में बिखरी हुई है, जिसे अनेक लोगों ने संग्रहीत किया है। इनमें रामनरेश त्रिपाठी कृत 'घाघ और भड्डरी' (हिंदुस्तानी एकेडेमी, 1931 ई.) अत्यंत महत्वपूर्ण संकलन है। घाघ के कृषि–ज्ञान का पूरा–पूरा परिचय उनकी कहावतों से मिलता है। उनका यह ज्ञान खादों के विभिन्न रूपों, गहरी जोत, मेड़ बाँधने, फसलों के बोने के समय, बीज की मात्रा, दालों की खेती के महत्व एवं ज्योतिष ज्ञान, शीर्षकों के अंतर्गत विभाजित किया जा सकता है। घाघ का अभिमत था कि कृषि सबसे उत्तम व्यवसाय है, जिसमें किसान भूमि को स्वयं जोतता है :

उत्तम खेती मध्यम बान, निकृष्ट चाकरी, भीख निदान।

खेती करै बनिज को धावै, ऐसा डूबै थाह न पावै।

उत्तम खेती जो हर गहा, मध्यम खेती जो संग रहा।

उपलब्ध कहावतों के आधार पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि घाघ ने भारतीय कृषि को व्यावहारिक दृष्टि प्रदान की। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी और उनमें नेतृत्व की क्षमता भी थी। उनके कृषि संबंधी ज्ञान से आज भी अनेकानेक किसान लाभ उठाते हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से उनकी ये समस्त कहावतें अत्यन्त सारगर्भित हैं, अतः भारतीय कृषि विज्ञान में घाघ का विशिष्ट स्थान हैं। उनकी कहावतें जीवन के अनुभवों पर आधारित प्रतीत होती हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि घाघ को व्यावहारिक ज्ञान के साथ ग्रह–नक्षत्रों, कृषि विज्ञान व ज्योतिष का गहरा ज्ञान था। उनकी कुछ कहावतें मैंने संकलित कर पाठकजन से बाँटने का प्रयास किया है।

कहावत–1

पहिले जागै पहिले सौवे, जो वह सोचे वही होवै।

अर्थ : रात्रि में जल्दी सोने से और सुबह जल्दी उठने से बुद्धि तीव्र होती है।

कहावत–2

प्रातःकाल खटिया से उठि के पिये तुरन्ते पानी।

वाके घर मा वैद ना आवे बात घाघ के जानी।।

अर्थ : प्रातः काल उठते ही, पानी पीकर नित्यकर्म करने वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य ठीक रहता है, उसे डाक्टर के पास जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

कहावत–3

खेती पाती विनती, और घोड़े की तंग।

अपने हाथ संभारिये, लाख लोग हों संग।।

अर्थ : खेती, प्रार्थना पत्र, तथा घोड़े के तंग को अपने हाथ से ठीक करना चाहिए, किसी दूसरे पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

कहावत–4

दुश्मन की किरपा बुरी, भली मित्र की त्रास।

आडंबर गरमी करैं, जल बरसन की आस।।

अर्थ: शत्रु की दया की अपेक्षा मित्र की फटकार अच्छी है, जैसे गर्मी की अधिकता से कष्ट मिलता है, परन्तु जल बरसने की आशा होने लगती है।

कहावत–5

नारि सुहागिन जल घट लावै, दधि मछली जो सनमुख आवै।

सनमुख धेनु पिआवै बाछा, यही सगुन हैं सबसे आछा।।

अर्थ : यदि सौभाग्यवती स्त्री पानी से भरा घड़ा ला रही हो, कोई सामने से दही और मछली ला रहा हो या गाय बछड़े को दूध पिला रही हो तो यह सबसे अच्छा शगुन होता है।

कहावत–6

औझा कमिया, वैद किसान। आडू बैल और खेत मसान।।

अर्थ : नौकरी करने वाला औझा, खेती का काम करने वाला वैद्य, बिना बधिया किया हुआ बैल और मरघट के पास का खेत हानिकारक है।

कहावत–7

शुक्रवार की बादरी, रही सनीचर छाय।

तो यों भाखै भड्डरी, बिन बरसे ना जाए।।

अर्थ : शुक्रवार के बादल शनिवार को छाए रहें, तो भड्डरी कहते हैं कि वे बादल बिना बरसे नहीं जायेंगे।

कहावत–8

सावन मास बहे पुरवइया। बछवा बेच लेहु धेनु गइया।।

अर्थ : यदि सावन महीने में पुरवैया हवा बह रही हो तो अकाल पड़ने की संभावना है। किसानों को चाहिए कि वे अपने बैल बेचकर गाय खरीद लें।

कहावत–9

रोहिनी बरसै मृग तपै, कुछ कुछ अद्रा जाय।

कहै घाघ सुन घाघिनी, स्वान भात नहीं खाय।।

अर्थ : यदि रोहिणी पूरा बरसे, मृगशीर्ष में तपन रहे और मौसम में कुछ नमी बनी रहे तो धान की पैदावार इतनी अच्छी होगी कि कुत्ते भी भात नहीं खाएंगे।

कहावत–10

सर्व तपै जो रोहिनी, सर्व तपै जो मूर। परिवा तपै जो जेठ की, उपजै सातो तूर।।

अर्थ : रोहिणी भरपूर तपे और मूल भी पूरा तपे तथा जेठ की प्रतिपदा तपे तो सातों प्रकार के अन्न पैदा होंगे।

कहावत–11

उत्रा उत्तर दै गयी, हस्त गयो मुख मोरि। भली विचारी चित्तरा, परजा लेइ बहोरि।।

अर्थ : उत्तरा और हथिया नक्षत्र में यदि पानी न भी बरसे और चित्रा में पानी बरस जाए तो उपज ठीक ठाक होगी।

कहावत–12

पुरुवा रोपे पूर किसान। आधा खखड़ी आधा धान।।

अर्थ : पूर्वा नक्षत्र में धान रोपने पर आधा धान और आधा खखड़ी पैदा होता है।

कहावत–13

आद्रा में जौ बोवै साठी। दु:खै मारि निकारै लाठी।।

अर्थ : जो किसान आद्रा नक्षत्र में धान बोता है वह दु:ख को लाठी मारकर भगा देता है।

कहावत–14

गहिर न जोतै बोवै धान। सो घर कोठिला भरै किसान।।

अर्थ : गहरा न जोतकर धान बोने से उसकी पैदावार खूब होती है।

कहावत–15

अखै तीज तिथि के दिना, गुरु होवे संजूत। तो भाखैं यों भड्डुरी, उपजै नाज बहूत।।

अर्थ : यदि वैशाख में अक्षय तृतीया को गुरुवार पड़े तो खूब अन्न पैदा होगा।

घाघ की उपरोक्त सभी कहावतें आज भी शब्दश: सार्थक सिद्ध होती हैं, ऐसा हमारे किसानों की मान्यता है।

संदर्भ :–


1. भारतीय कृषि अनुसंधान पत्रिका(1), अंक 30 (4) पृष्ठ 253–256, वर्ष 2015
2. विकिसूक्ति एवं मुक्त ज्ञानकोश विकिपीडिया


## बैंकिंग से सम्बंधित कुछ प्रचलित शब्द


संजीव कुमार ''शास्त्री'', प्रबन्धक (राजभाषा)

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली


| | | | |
|---|---|---|---|
| Capital budget | पूंजीगत बजट | Bullet payment | एकबारगी भुगतान |
| Deputation | प्रतिनियुक्ति | Custom Duty | सीमा शुल्क |
| Emoluments | परिलब्धियाँ | Preface | प्रस्तावना |
| Gross product | सकल उत्पाद | Processing charges | प्रसंस्करण प्रभार |
| Insolvent | दिवालिया | Alimony | निर्वाह व्यय |
| Legality | वैधता | Lease deed | पट्टा विलेख |
| Marked capacity | अंकित क्षमता | Competent authority | सक्षम प्राधिकारी |
| Pledger | गिरवीकर्ता | Indebtness | ऋणग्रस्तता |
| Quotation | भाव | Tender | निविदा |
| Requisition | मांग | Gazette | राजपत्र |
| Provident fund | भविष्य निधि | Vault | तिजोरी |
| Sister concern | सहयोगी संस्था | | |
| Tribunal | न्यायाधिकरण | | |

# आईए जानें समानार्थक शब्दों में अर्थ-भेद

आलेख

झलक कुशवाहा
कक्षा 10, केन्द्रीय विद्यालय, करनाल

"समान अर्थ वाले शब्द" समानार्थक कहलाते हैं। पर्यायवाची शब्द हूबहू अर्थ वाले शब्द होते हैं, जबकि आम बोलचाल में प्रयोग के दौरान एक जैसे दिखने वाले शब्द जो अलग अर्थ वाले हों, वे समानार्थक होते हैं। यहाँ इस लेख में मैं कुछ समानार्थी शब्दों का अर्थ सहित उल्लेख कर रही हूँ ताकि पाठकों को इनमें अंतर स्पष्ट हो सके–

1. अस्त्र = फेंक कर चलाने वाला हथियार
   शस्त्र = हाथ में थाम कर चलाने वाला हथियार
2. अनशन = माँग मनवाने के लिए स्वेच्छा से अन्न–जल का त्याग
   उपवास = स्वेच्छा से अन्न का त्याग
3. गृह = घर जैसे पूजागृह अर्थात् पूजा का घर
   ग्रह = सौरमण्डल का चलता फिरता पिंड
4. अनुपम = जो अतुलनीय हो
   अद्वितीय = जिसका अन्य उदाहरण न हो
5. अन्वेक्षण = अज्ञात वस्तु या व्यक्ति की खोज
   अनुसंधान = निश्चित वस्तु/मद का गहन परीक्षण
6. अद्भुत = चमत्कृत कर देने वाला
   विचित्र = सामान्य से भिन्न
7. अनुभव = पूर्व में अर्जित अनुभव
   अनुभूति = वर्तमान में महसूस होने वाला भाव
8. अभिमान = अन्य से स्वयं को श्रेष्ठ समझना
   गर्व = स्वाभिमानवश गर्व
   घमण्ड = भौतिक वस्तुओं आदि पर किया जाने वाला अभिमान
9. अध्यक्ष = पदेन स्थायी होता है
   सभापति = पदेन अस्थायी होता है
10. अभिवादन = श्रद्धा के साथ प्रणाम
    अभिनन्दन = हृदय से श्रद्धा का प्रकटन
    स्वागत = आदरपूर्वक सम्मान
11. अनुरोध = वह आग्रह जो विनयपूर्वक हो
    आग्रह = अत्याधिक जोर देकर किया जाने वाला
    प्रार्थना = विनीत होकर किया जाने वाला अनुरोध
12. अनुग्रह = अपने से छोटा समझकर कृपा करें
    अनुकंपा = शुभाशीष सहित सहानुभूतिपूर्वक कृपा
    कृपा = सामान्य अर्थ में कार्य सम्पादन
13. आधि = मानसिक रोग
    व्याधि = शारीरिक रोग
14. आराधना = इच्छापूर्ति हेतु ध्यान
    उपासना = भक्तिभाव से ध्यान
15. आगामी = अग्रगामी (निश्चित)
    भावी = भविष्य के गर्त में (अनिश्चित)
16. आदि = उदाहरणों के पश्चात् (including)
    इत्यादि = अन्य उदाहरण सहित (excluding)
17. आज्ञा = अनुमति या आदेश
    अनुमति = सिर्फ इजाज़त
    निर्देश = विस्तार के साथ सलाह
18. आकार = सामान्य कदकाठी/सामान्य रूप
    रूप = विशिष्ट सुन्दरता–असुन्दरता
19. आलोचना = पक्षीय विवेचना (विद्वेशमयी)
    समालोचना = समस्त की आलोचना
    समीक्षा = तथ्यात्मक विवेचना
20. उन्नति = उच्च स्तर पर प्रगति
    प्रगति = अग्र मार्ग पर बढ़ना
21. उदाहरण = संदर्भ आधारित
    दृष्टांत = स्वयं देखा हुआ उदाहरण
22. उपहास = स्वस्थ परिहास
    व्यंग्य = कटाक्ष सहित परिहास
    परिहास = स्वस्थ हंसी मजाक
23. उपस्थित = शरीर सहित सजीव की मौजूदगी
    विद्यमान = निर्जीव की मौजूदगी
24. उपहार = बराबर वालों/अनुजों को दी जाने वाली भेंट
    भेंट = वरिष्ठों को दिया जाने वाला उपहार
25. ओज़ = अंतनिर्हित ऊर्जा
    पौरूष = पुरूषार्थ, कर्म आधारित धर्म
26. कविता = एकल रचना
    काव्य = अनेक रचनाओं का समूह

## आमंत्रण और निमंत्रण में अंतर... एक जानकारी

'आमंत्रण' और 'निमंत्रण' दोनों का अर्थ समान समझ लिया जाता है, पर ऐसा है नहीं। दोनों ही शब्दों में 'मंत्र' धातु की एक सी उपस्थिति है। सामान्य रूप से 'आमंत्रण' और निमंत्रण बुलावा के लिए प्रयुक्त होते हैं , परंतु 'आ' और 'नि' के चलते इनके अर्थों में विशिष्टता आ गई है। आमंत्रण में अच्छी तरह बुलाने का भाव निहित है। निमंत्रण भी अच्छी तरह का ही बुलावा है, पर भोजन आदि का हेतु (Purpose) विशेष रूप से इसमें जुड़ गया है। न्योता इसी निमंत्रण से निकला है। किसी कार्यक्रम में भोजन-नाश्ते की व्यवस्था हो तो लोगों को निमंत्रण भेजा जाता है, पर मंच पर भाषण देने, कविता आदि पढ़ने के लिए बुलाना हो तो आमंत्रित किया जाता है।

# आज ही क्यों नहीं?

लघुकथा

डा.उत्तम कुमार, मुख्य तकनीकी अधिकारी
सस्य विज्ञान अनुभाग, भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

एक समय की बात है कि एक शिष्य अपने गुरु का बहुत आदर–सम्मान किया करता था। गुरु भी अपने इस शिष्य से बहुत प्यार करते थे, लेकिन वह शिष्य अपने अध्ययन के प्रति आलसी और स्वभाव से दीर्घसूत्री था। सदा स्वाध्याय से दूर भागने की कोशिश करता तथा आज के काम को कल के लिए छोड़ दिया करता था । अब गुरू जी कुछ चिंतित रहने लगे कि कहीं उनका यह शिष्य जीवन–संग्राम में पराजित न हो जाये। आलस्य में व्यक्ति को अकर्मण्य बनाने का पूरा सामर्थ्य होता है। ऐसा व्यक्ति बिना परिश्रम के ही फलोपभोग की कामना करता है। वह शीघ्र निर्णय नहीं ले सकता और यदि ले भी लेता है, तो उसे कार्यान्वित नहीं कर पाता। यहाँ तक कि अपने पर्यावरण के प्रति भी सजग नहीं रहता है और न भाग्य द्वारा प्रदत्त सुअवसरों का लाभ उठाने की कला में ही माहिर हो पाता है। उन्होंने मन ही मन अपने शिष्य के कल्याण के लिए एक योजना बना ली। एक दिन एक काले पत्थर का एक टुकड़ा उसके हाथ में देते हुए गुरु जी ने कहा–'मैं तुम्हें यह जादुई पत्थर का टुकड़ा, दो दिन के लिए देकर, कहीं दूसरे गाँव जा रहा हूँ। जिस भी लोहे की वस्तु को तुम इस से स्पर्श करोगे, वह स्वर्ण में परिवर्तित हो जायेगी। पर याद रहे कि दूसरे दिन सूर्यास्त के पश्चात मैं इसे तुम से वापस ले लूँगा। शिष्य इस सुअवसर को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ लेकिन आलसी होने के कारण उसने अपना पहला दिन यह कल्पना करते–करते बिता दिया कि जब उसके पास बहुत सारा स्वर्ण होगा तब वह कितना प्रसन्न, सुखी, समृद्ध और संतुष्ट रहेगा, इतने नौकर–चाकर होंगे कि उसे पानी पीने के लिए भी नहीं उठाना पड़ेगा । फिर दूसरे दिन जब वह प्रातः काल जागा, उसे अच्छी तरह से स्मरण था कि आज स्वर्ण पाने का दूसरा और अंतिम दिन है। उसने मन में पक्का विचार किया कि आज वह गुरूजी द्वारा दिए गये काले पत्थर का लाभ जरूर उठाएगा। उसने निश्चय किया कि वो बाजार से लोहे के बड़े–बड़े सामान खरीद कर लायेगा और उन्हें स्वर्ण में परिवर्तित कर देगा। दिन बीतता गया, पर वह इसी सोच में बैठा रहा कि अभी तो बहुत समय है, कभी भी बाजार जाकर सामान लेता आएगा। उसने सोचा कि अब तो दोपहर का भोजन करने के पश्चात् ही सामान लेने निकलूंगा। पर भोजन करने के बाद उसे विश्राम करने की आदत थी , और उसने बजाये उठ के मेहनत करने के थोड़ी देर आराम करना उचित समझा। पर आलस्य से परिपूर्ण उसका शरीर नींद की गहराइयों में खो गया, और जब वो उठा तो सूर्यास्त होने को था। अब वह जल्दी–जल्दी बाजार की तरफ भागने लगा, पर रास्ते में ही उसे गुरूजी मिल गए। उनको देखते ही वह उनके चरणों पर गिरकर, उस जादुई पत्थर को एक दिन और अपने पास रखने के लिए याचना करने लगा। लेकिन गुरूजी नहीं माने और उस शिष्य का धनी होने का सपना चूर–चूर हो गया। पर इस घटना की वजह से शिष्य को एक बहुत बड़ी सीख मिल गयी। उसे अपने आलस्य पर पछतावा होने लगा। वह समझ गया कि आलस्य उसके जीवन के लिए एक अभिशाप है और उसने प्रण किया कि अब वो कभी भी काम से जी नहीं चुराएगा और एक कर्मठ, सजग और सक्रिय व्यक्ति बन कर दिखायेगा।

मित्रों, जीवन में हर किसी को एक से बढ़कर एक अवसर मिलते हैं, पर कई लोग इन्हें बस अपने आलस्य के कारण गवां देते हैं। इसलिए मैं यही कहना चाहता हूँ कि यदि आप सफल, सुखी, भाग्यशाली, धनी अथवा महान बनना चाहते हैं तो आलस्य और दीर्घसूत्रता को त्याग कर, अपने अंदर विवेक, कष्टसाध्य श्रम, और सतत् जागरूकता जैसे गुणों को विकसित कीजिये और जब कभी आपके मन में किसी आवश्यक काम को टालने का विचार आये तो स्वयं से एक प्रश्न कीजियेः– **आज ही क्यों नहीं?**

# हिन्दी को समर्पित नारे

सोनिका यादव, सहायक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

1. भारत माता के माथे की बिंदी, हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी।
2. हिंदी हमारी शान है, भारत का अभिमान है।
3. पूरे राष्ट्र की आशा है हिंदी, हमारी राष्ट्रभाषा है हिंदी।
4. हर भारतीय की शक्ति है हिंदी, एक सहज़ अभिव्यक्ति है हिंदी।
5. हिंदी है हमारी आशा, यही तो है राष्ट्रभाषा।
6. जो स्थान है नारी के माथे पर बिंदी का,
   वही स्थान है भाषाओं में हिंदी का।
7. भारत की शान, हिंदी भाषा महान।
8. चलो एक मुहिम चलाएं, आज ही से हिंदी अपनाएं।
9. हिंदी समझने में आसान, यही है राष्ट्रभाषा महान।
10. एकता में ही है देश का बल, जरूरी है हिंदी का संबल।
11. सभी भाषाओं की इज्ज़त करो, पर हिंदी को न बेइज्जत करो।
12. हिंदी है देश की एकता और अंखडता की पहचान,
    हिंदी तो है मेरे देश की जान।

# कैशलेस अर्थव्यवस्था की दिशा में भारत की नई पहल

आलेख

सीमा कुमारी दूबे
प्रबंधक, केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल

भारत को एक समय में सोने की चिड़िया कहा जाता था। आर्थिक इतिहासकार एंगस मैडिसन की माने तो पहली सदी से लेकर दसवीं सदी तक भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी। परंतु ब्रिटिश शासनकाल में भारतीय अर्थव्यवस्था का बहुत शोषण हुआ और आजादी के समय भारतीय अर्थव्यवस्था की हालत जर्जर थी। आजादी मिलने के बाद भारत का झुकाव समाजवादी प्रणाली की ओर हुआ। सार्वजनिक उद्योगों को बढ़ावा मिला। बीसवीं शताब्दी में सोवियत संघ के साथ साथ भारत में भी इस प्रणाली का अंत हो गया। वर्ष 1991 में भारत पर भीषण आर्थिक संकट आया। उसके बाद सरकार ने आर्थिक सुधारों का कार्य शुरु किया और फिर भारत विदेशी पूंजी निवेश का आकर्षण केंद्र बन गया। वर्ष 1991 में उदारीकरण और आर्थिक सुधार की नीति लागू की गयी जिसके कारण भारत में आर्थिक प्रगति ने तेजी पकड़ी और भारत विश्व की एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरा और आज भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।

आज हमारे देश की अर्थव्यवस्था में एक नया अध्याय शुरू हो गया है– कैशलेस अर्थव्यवस्था। कैशलेस अर्थव्यवस्था का सीधा अर्थ है एक ऐसी अर्थव्यवस्था जिसमें रूपयों का लेन–देन नकद में ना होकर इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से हो। किसी भी भुगतान के लिए डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, नेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, पेटीएम, एनईएफटी और आरटीजीएस जैसी सुविधाओं का इस्तेमाल किया जाए।

8 नवंबर, 2016 को जब माननीय प्रधानमंत्री ने रू 1000/– और रू 500/– के नोट बंद करने की घोषणा की तो पूरा देश आश्चर्य में पड़ गया। देश और विदेश में कई लोग इस कदम की सराहना कर रहे हैं तो कई इसकी निंदा कर रहे हैं। रू. 1000/– और रू. 500/– के नोट बंद करने के निम्नवत फायदे प्रत्यक्ष रूप से नजर आ रहे हैं :

1. भ्रष्टाचार पर रोक : रू. 1000/– और रू. 500/– के नोटों की एक बहुत बड़ी संख्या का इस्तेमाल भ्रष्टाचार के लिए किया जा रहा था। विमुद्रीकरण के बाद भ्रष्टाचार के लिए इन नोटों के प्रयोग पर रोक लग गयी।
2. नकली नोटों पर रोक : देश में सीमा पार से नकली नोट आने की समस्या बहुत गंभीर हो गयी थी। नकली नोट जिसके पास जाता, उसे उतने मूल्य का नुकसान उठाना पड़ता। विमुद्रीकरण के कारण एक झटके में देश से नकली नोट साफ हो गये।
3. कालेधन पर लगाम : विमुद्रीकरण का सबसे अधिक प्रभाव कालेधन पर पड़ा है। लोगों द्वारा रखा गया लाखों–करोड़ों का कालाधन रद्दी बन गया। अब तक कालेधन को प्रॉपर्टी और सोना खरीदने में लगाया जाता था, जिससे प्रोपर्टी और सोने की कीमत वास्तविक कीमत से बहुत अधिक रहती थी। विमुद्रीकरण के कारण इनमें कालेधन के निवेश पर लगाम लगी।

विमुद्रीकरण कैशलेस इंडिया की पहल है और यह अचानक लिया गया निर्णय नहीं है। सबसे पहले सरकार ने जनधन योजना के माध्यम से देश के हर गरीब का बैंक खाता खुलवाने की योजना बनाई, जिसमें रू.1 से खाता खुलवाने पर रू.1 लाख का बीमा भी दिया जा रहा था। इस योजना के तहत लगभग 23 करोड़ खाते खुले और रू 32,000 करोड़ की राशि बैंकों में आई। इसके बाद सभी खातों को आधार कार्ड से जोड़ा गया, उसके बाद डिजिटल इंडिया, फिर विमुद्रीकरण और अब कैशलेस अर्थव्यवस्था। सारी योजना एक चरणबद्ध तरीके से कार्यान्वित की गयी।

**कैशलेस अर्थव्यवस्था के फायदे :**

1. टैक्स वसूली में बढ़ोतरी : भ्रष्टाचार और कालेधन के कारण सरकार अधिक आयकर नहीं ले पा रही है। सिर्फ नौकरी करने वाले ही आयकर ठीक से भरते हैं। कारोबारी लोग अपनी आय काफी हद तक छिपा जाते हैं। जब सभी की आय व्यय की जानकारी ऑनलाइन रहेगी तो कोई भी कर देने से बच नहीं पायेगा जिससे सरकारी राजस्व में बढ़ोतरी होगी।
2. भ्रष्टाचार में कमी : भारत जैसे विशाल देश में भ्रष्टाचार पर काबू पाना आसान काम नहीं है। कैशलेस अर्थव्यवस्था से इस पर काबू पाया जा सकता है क्योंकि यहाँ अधिकतर भ्रष्टाचार की गतिविधियां नकद में ही होती हैं। आंकडे बताते हैं कि कैशलेस अर्थव्यवस्था अपनाने वाले देशों में भ्रष्टाचार बहुत कम है।
3. चीजें सस्ती होंगी : काले धन के कारण चीजों की कीमतें आसमान छूने लगती हैं। विमुद्रीकरण से कालेधन पर लगाम लगेगी और परिणामस्वरूप चीजों के दाम कम होंगे।

4. आतंकवाद पर रोक : नकद के अत्याधिक प्रचलन के कारण जाली नोटों की भरमार और बेहिसाब काला धन जमा हो जाता है जिसके कारण नक्सलवाद और आतंकवाद बढ़ता है । इस प्रकार नकदी समाप्त करके आतंकवाद को खत्म किया जा सकता है।

**भारत की अर्थव्यवस्था को कैशलेस बनाने की राह में कई चुनौतियां भी हैं :–**

1. देश की 125 करोड़ की आबादी में से अधिकतर लोग गरीब व अशिक्षित हैं।
2. अभी भी सिर्फ देश के 75 प्रतिशत लोगों के पास ही बैंक खाता है।
3. देश के बहुत बड़े वर्ग के पास स्मार्ट फोन नहीं है और यदि है तो चलाना नहीं आता।
4. देश में लगभग 2 लाख एटीएम हैं और उनका प्रयोग भी अधिकतम लोग सिर्फ डेबिट कार्ड से नकद निकालने के लिए करते हैं।
5. फिलहाल 34 प्रतिशत लोगों के पास ही इंटरनेट सुविधा है।
6. इंटरनेट कनेक्शन की हालत भी बहुत अच्छी नहीं है।
7. साइबर क्राइम
8. हर छोटे और बड़े विक्रेता के पास स्वाइप मशीन की सुविधा नहीं है।

इन सभी चुनौतियों के बावजूद इस बात में कोई संशय नहीं कि देश कैशलेस अर्थव्यवस्था की ओर बहुत तेजी से बढ़ रहा है। सरकार ने नकद रहित भुगतान को प्रोत्साहित करने के लिए कई कदम उठाये हैं। भारत सरकार ने वित्तीय लेनदेन के लिए भीम ऐप (BHIM APP) भी आरंभ किया है जिसका पूरा नाम "भारत इंटरफेस फॉर मनी" (Bharat Interface for Money) है। यह यूपीआई आधारित पेमेंट सिस्टम पर काम करता है। इसे नेशनल पेमेंट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (NPCI) ने तैयार किया है। इससे पैसे भेजने के लिए हमें सिर्फ एक बार अपना बैंक अकाउंट नंबर रजिस्टर करना होगा और एक यूपीआई पिनकोड जनरेट करना होगा । इसके बाद हमारा मोबाइल नंबर ही पेमेंट एड्रेस होगा। हर बार अकाउंट नंबर डालने की जरूरत नहीं होगी। इंटरनेट नहीं होने पर फोन से यूएसएसडी कोड 99 ’डायल करके भी इस ऐप को चलाया जा सकता है। इससे हम अपना बैंक बैलेंस जांच सकते हैं, तुरंत भुगतान कर सकते हैं, किसी भी समय भुगतान कर सकते हैं चाहे रात हो या छुट्टी। भीम ऐप में लगभग सभी भारतीय बैंक खातों को इस्तेमाल कर सकते हैं।

इस प्रकार देश एक नयी दिशा में बढ़ रहा है। बस इस राह पर चलते हुए हमें कुछ सावधानियां बरतने की आवश्यकता है जैसे समय समय पर अपना एटीएम पिन बदलना, फोन या मोबाइल पर किसी को भी एटीएम कार्ड नंबर और पिन की जानकारी नहीं देना, इंटरनेट बैंकिंग के लिए किसी भी लिंक से बैंक की वेबसाइट पर ना जाना बल्कि वेबसाइट का पता स्वयं टाइप करना, होटल, पेट्रोल पम्प या किसी दुकान पर अपने कार्ड का इस्तेमाल अपने सामने करना, अपने अकाउंट स्टेटमेंट पर नियमित नजर रखना, अपने नेट बैंकिंग का पासवर्ड नियमित रूप से बदलना आदि। यदि हम इन बातों का ध्यान रखें और सजग रहते हुए इस दिशा में कार्य करें तो भारत को कैशलेस अर्थव्यवस्था बनाने की इस मुहिम में हम अवश्य सफल होंगे।

## सच्चा ज्ञान

**ठिठोली**

टीचर : गोलू , आमंत्रण और निमंत्रण में अंतर बताओ?

गोलू : मैडम , जो मंत्रणा आम के पेड़ के नीचे की जाए–वह आम–मन्त्रण

और जो नीम के पेड़ के नीचे की जाये वो निमंत्रण।

यह तो हुआ जोक, अब पाएं सच्चा ज्ञान :–

निमन्त्रण से आशय भोजन पर बुलाने से है जबकि आमन्त्रण से तात्पर्य गोष्ठी (मीटिंग आदि) पर बुलाने से है।

# शिव–शक्ति

आलेख

पंकज सिंह
टीजीटी, केंद्रीय विद्यालय, करनाल

"जिन्होंने मुझे सुख–दुख में मुस्कुराना सिखाया ,
पकड़ मेरी उँगली जिंदगी के हर रास्ते पर मजबूती से कदम बढ़ाना सिखाया।
अपने स्नेह और ममता की छाँव की छतरी लिए जो हैं मेरे लिये सदा ही कंग,
उन शिव–शक्ति रूपी माता–पिता व गुरुओं को सादर प्रणाम करता है पंकज सिंह।।"
"अगर अब भी हम नहीं जागे तो कयामत आ जाएगी, एक दिन वो आयेगा जब प्रकृति भी हमें नहीं अपनाएगी ।
उस जलजले के बाद ईश्वर के सामने क्या हमारी नजरें उठ पाएँगी ,
ऐ मेरे साथियों! सँभल जाओ वरना मानवता हमें कभी ना माफ कर पाएगी।।"

'शिव' यानि कल्याणकारी। भगवान शंकर को हम इस नाम से संबोधित करते हैं, क्योंकि वो इस सृष्टि के हर प्राणी का कल्याण करते हैं। अतः शिव कहलाते हैं। पर वो ऐसा कैसे कर पाते हैं? जाहिर है अपनी शक्ति से। मगर कौनसी शक्ति? शक्ति............ यानि माता पार्वती। माता पार्वती ही उनकी वो शक्ति हैं, जिनके कारण वो शिव कहलाते हैं। जब गणेश जी और कार्तिकेय जी में सृष्टि का चक्कर लगाने की प्रतियोगिता हुई तो गणेश जी ने शिव और शक्ति का चक्कर लगाया और कहा कि संतान के लिए उसके माता–पिता ही उसकी सृष्टि होते हैं। क्योंकि उन्हीं के आँचल और स्नेह की छाया में वो अपनी जिंदगी के रास्ते पर कदम बढ़ाना सीखते हैं। ये वचन थे श्रीगणेश के। जो कि शत–प्रतिशत सत्य है।

खैर............ ये बात तो हुई दैविक काल की। अब हम जरा समय का पहिया घुमाकर वर्तमान समय में आते हैं। वर्तमान यानि आज का समय यानि कलियुग। क्या आप जानते हैं कि वर्तमान समय को कलियुग कहकर क्यों पुकारा जाता है ? बहुतों का उत्तर होगा कि पाप और पापी बढ़ गए हैं, इसीलिए कलियुग कहा जाता है । मगर जरा ठहरिए और सोचिए कि इसका मूल कारण क्या हो सकता है ? क्या इसका मूल कारण भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, लूट–खसोट या फिर गरीबी जैसे विषय हैं? मुझे लगता है शायद नहीं। मेरे अनुसार इसका मूल कारण है हमारे संस्कारों का समाप्त हो जाना। अब प्रश्न यह उठता है कि कैसे ? इसका जवाब ये है कि कोई भी इंसान लुटेरा, भ्रष्टाचारी या फिर बेरोजगार अच्छे संस्कार नहीं मिलने से बनता है । और ये संस्कार उसे मिलते कहाँ से हैं ? उत्तर है शिव–शक्ति यानि अपने माता–पिता से।

आज के समय में ऐसे कितने ही लोग मिल जाएंगे जो माता–पिता द्वारा बताई गई बात को याद रखना तो दूर आराम से सुनना तक भी पसंद नहीं करते। विशेष तौर पर हमारे युवा और युवा होने वाले हम जैसे किशोर छात्र। मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि मेरी ही उम्र के असंख्य छात्र अपने माता–पिता द्वारा दी गई अच्छी शिक्षा या संस्कारों को लेक्चर या फिर उपदेश देना शुरू कर दिया कहकर कान बंद कर लेते हैं ।

"करो सदा इनका आदर और भूलकर भी ना होने देना ऐसा कोई भी पाप।
खुद से नजर ना मिला सको और अपमान ना सहे कभी माँ–बाप।।"

आज हम जैसे किशोर और युवा अपने जनक और जननी के द्वारा दिये गए संस्कारों को भूलकर अपने जीवन को ऐसे रास्ते पर मोड़ देते हैं कि उन्हें वापस आने का कोई रास्ता नहीं सूझता और दुनिया वाले उन्हें चोर, लुटेरा, भ्रष्टाचारी या फिर गुंडा, नशेड़ी नाम से संबोधित करना शुरू कर देते हैं। अब अपनी औलाद के बारे में ऐसी बातें सुनकर उनके दिल पर क्या बीतती होगी, ये सिर्फ एक माता–पिता जान सकते हैं। बीस या तीस साल पहले तक एक परिवार में 20–20 या फिर 30–30 लोग संयुक्त परिवार बनाकर रहते थे। घर के बुजुर्गों की सलाह–मशविरे से ही घर में कोई भी काम किया जाता था। घर में अगर शादी या फिर कोई सामूहिक भोज का आयोजन हो रहा हो तो सबसे पहले घर के बुजुर्गों को ही भोजन परोसा जाता था तथा उनसे आशीर्वाद लिया जाता था। मगर आज हर कोई अपनी खिचड़ी अलग पकाना चाहता है। उसके घर में सिर्फ बच्चे और पति–पत्नी ही हो और कोई नहीं। बस यही तमन्ना होती है। जिन्होंने अपनी गोद में बैठाकर खिलाया, अपने कंधे पर बैठाकर दुनिया की सैर कराई, हमारी नन्ही उँगलियों को थामकर हमें चलना सिखाया, खुद के पैरों पर खड़ा होना सिखाया, क्या उनके लिए हमारे घर में दो चारपाइयों की भी जगह नहीं रह गई है ? क्या हमारे अंदर इतना भी सामर्थ्य नहीं है कि हम उनको दो वक्त की रोटी भी दे सकें ? सुख देने की बात तो छोड़ ही दीजिये।

आज हमारे देश में कई सारे वृद्धाश्रम खुले हुए हैं और खुल भी रहे हैं। वो इसलिए नहीं खुल रहे हैं कि उन्हें सहारा देने वाला कोई नहीं है, वो इसलिए कि हम ही इतने निकम्मे, नाकारा, नालायक और बेशर्म हैं, कि जिंदगी जीना सिखाने वालों को ही घुट–घुटकर जीने के लिए उन्हें या तो वृद्धाश्रम छोड़ देते हैं या फिर इतना मजबूर कर देते हैं कि वो खुद ही हमें छोड़कर हमसे दूर चले जाते हैं। आज के जमाने में हम पढ़े–लिखे

युवा हैं और हम ये बखूबी जानते हैं कि समय का पहिया हमेशा अपनी जगह को बदलता रहता है । छोटे हमसे ही तो सीखते हैं। क्योंकि जिस दिन हम अपने माता–पिता को छोड़ते हैं, तो हमें इस बात को हमेशा याद रखना चाहिए कि हम भी एक दिन ऐसे ही छोड़ दिये जाएँगे। इस भुलावे में नहीं बैठना चाहिए कि हम अपने बच्चों को इतना अच्छा बनाएंगे कि वो हमारी हर बात को मानेंगे। जैसा हम चाहेंगे वैसा ही वो भी करेंगे। दर–असल होता ये है हम अपनी सीट वृद्धाश्रम में पहले ही बुक कर रहे होते हैं।

"जिंदगी की मुश्किल राह में अगर माँ–बाप न होते, तो जीने का एहसास न होता।
इंसान जानवर ही बनकर रह जाता और इंसानियत का नाम ना होता।।"

आखिर सतयुग............. सतयुग क्यों था ? इसलिए कि तब देवता होते थे और अपनी शक्ति से कुछ भी कर सकते थे। नहीं, क्योंकि तब संतान में अपने माता–पिता के दिये संस्कार थे, उनका दिखाया सन्मार्ग था, उनका सम्मान था। तभी तो श्रीराम जी माता के कहने पर 14 वर्ष के वनवास पर चले गए थे। वो इसलिए नहीं कि कैकेयी ने उन्हें लालचवश निकाला था, बल्कि इसलिए कि वो उनकी माता का आदेश था और उन्हें पता था कि माता–पिता द्वारा कही गई कोई भी बात संतान के लिए गलत नहीं होती। हम आज भी रावण को राक्षस कहते हैं, परंतु वह निहत्थे पर वार नहीं करता था। एक के साथ एक करके ही लड़ता था। अगर वह चाहता तो आसानी से माता सीता को अपनी रानी बना सकता था। पर उसने ऐसा नहीं किया क्योंकि उसे भी अपने माता–पिता द्वारा मिले हुए संस्कारों ने उसे बिना उनकी मर्जी के वैसा करने से रोक दिया। इस विषय में हम जो चाहे तर्क दें, परंतु मूल कारण तो यही है। परंतु आज के समय में वो संस्कार, वो माता–पिता के प्रति आदर तथा उनके लिए घर में जगह समाप्त होती जा रही है। जिसकी वजह से आज का युवा गलत रास्तों पर चलकर कलियुग के नाम को सार्थक कर रहा है।

"कुछ सँवर जाइए, कुछ सँवर जाइए खुद को किसी पर वार जाइए।
जो भी गिरा हो उसे थाम लो यारो, अगर जीतना है तो खुद को हार जाइए ।।"

अगर हम इस देश को बदलना चाहते हैं, युवा शक्ति बनना चाहते हैं, भारत को विश्व गुरु और विश्व शक्ति बनाना चाहते हैं, इस कलियुग को सतयुग में बदलना चाहते हैं, ईश्वर की सबसे सुंदर व उत्तम रचना खुद को साबित करना चाहते हैं, सम्मानपूर्वक खुद से नजरें मिलाना चाहते हैं, सही अर्थों मे खुद को भारत के नागरिक कहलाना चाहते हैं, खुद को पशु नहीं बल्कि इंसान कहलाने लायक बनना चाहते हैं, एक सभ्य व सफल नागरिक बनना चाहते हैं, कामयाबी की ऊंचाईयों को छूना चाहते हैं, खुद को पढ़े–लिखे बेवकूफ कहलाना नहीं चाहते हैं, सुखपूर्वक जीना चाहते हैं और आखिर में सबसे महत्वपूर्ण चीज, अगर हम खुद को संतान कहलाना चाहते हैं, तो कुछ भी हो जाये.............चाहे कुछ भी हो जाये हमें अपने माता–पिता के संस्कार व उनको नहीं भूलना चाहिए। उनके द्वारा बताई जा रही हर बात को ध्यान से सुनना चाहिए और बिना उनसे सलाह मशविरा किए कोई भी कदम नहीं उठाना चाहिए। माता–पिता तो वो करुणा की मूर्ति होते हैं कि संतान कितनी भी निकम्मी क्यों न हो हमेशा उसके कल्याण के बारे में ही सोचते हैं। संतान माता–पिता के साथ कितना ही बुरा बर्ताव क्यों न करे, बस एक बार हाथ जोड़ कर संतान के माफी माँगने पर तुरंत वो करुणामयी हृदय माफ कर देता है। शायद फिल्म "हम साथ–साथ" हैं का ये गीत इसीलिए लिखा गया है–

"ये तो सच है कि भगवान है, है मगर फिर भी अंजान है।
धरती पे रूप माँ–बाप का उस विधाता की पहचान है।।"

इसीलिए मनुस्मृति में मनु ने ऐसा कहा है –

"तयोर्नित्यं प्रियं कुर्यादाचार्यस्य च सर्वदा।
तेष्वेव त्रिषु तुष्टेषु तपः सर्वं समाप्यते।।"

................तो बताइये, क्या आप तैयार हैं खुद को बदलने के लिए ? खुद को इंसान व संतान कहलाने के लिए, उन प्यार और ममताभरी नम बूढ़ी आँखों को खुशियों के दो पल देने के लिए, शिव–शक्ति के प्रतिरूप माता–पिता से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए, क्योंकिः–

"फूल कभी दो बार नहीं खिलते, जन्म कभी दो बार नहीं मिलते।
यों तो मिलते हैं हजारों लोग इस दुनिया में,
मगर हजारों गलतियाँ करके भी माफ करने वाले
माँ–बाप कभी दो बार नहीं मिलते।।"

फैसला आपके हाथ? इस बदलाव की उम्मीद के साथ मैं हूँ पंकज सिंह।

कविताएँ

# मेरी तीन कविताएँ

पवन कुमार गुप्ता, प्रशासनिक अधिकारी
भारतीय जीवन बीमा निगम, मण्डल कार्यालय, करनाल
सौजन्य : मेरी पुस्तक ''नींव का पत्थर (काव्य संग्रह)'' माण्डनी प्रकाशन, गाजियाबाद

## नींव का पत्थर

मन्दिर के शीर्ष पर,
कलश ने स्थान पाया है।
किस्मत के रंगों ने,
उसकी प्रतिष्ठा को चमकाया है।
कलश ने कुछ किया नहीं,
फिर भी अहं से इतराता है।
अपनी इस उपलब्धि पर, बल खाता है।
इस सृष्टि में भी कुछ लोगों को
बिना कुछ किए, प्रतिष्ठा का शीर्ष
प्राप्त हो जाता है।
वहीं कुछ नींव के पत्थरों का परिश्रम,
इस सृष्टि में छुप जाता है।

## मैंने जब भी मुझ को देखा

मैंने जब भी मुझ को देखा,
कीचड़ से लथपथ देखा।

मैंने मर्यादा को मिटते देखा,
मैंने आदर्शों को पिटते देखा।
मैंने कर्तव्य को सिमटते देखा,
मैंने निष्ठा को बिकते देखा।

मैंने जब भी मुझ को देखा,
कीचड़ से लथपथ देखा।

मैंने विचारों को झरते देखा,
मैंने मानवता को मरते देखा।
मैंने सच्चाई का खंडहर देखा,
मैंने आदर्शों का पतझड़ देखा।

मैंने जब भी मुझ को देखा,
कीचड़ से लथपथ देखा।

मैंने शिष्टता की होली देखी,
मैंने अस्मिता की बोली देखी।
मैंने चिन्तन को बंजर देखा,
मैंने अहं का खंजर देखा।

मैंने जब भी मुझ को देखा,
कीचड़ से लथपथ देखा।

मैंने यौवन को चटखते देखा,
मैंने बुढ़ापे को मटकते देखा।
मैंने बचपन को गरज़ते देखा,
मैंने मृत्यु को सिसकते देखा।

मैंने जब भी मुझ को देखा,
कीचड़ से लथपथ देखा।

मैंने ऐश्वर्य को रोते देखा,
मैंने विद्या को सोते देखा।
मैंने सत्ता को जाते देखा,
मैंने पवन को गाते देखा।

मैंने जब भी मुझ को देखा,
कीचड़ से लथपथ देखा।

## कल्पना, यथार्थ व जीवन बीमा

मैं यथार्थ के धरातल पर खड़ा था,
समय की विपरीत धाराओं में अड़ा था।
परिस्थितियों के पत्थरों में जकड़ा था,
तूफानी झंझावातों में अकड़ा था।

मुझे जीवन का यह कड़ापन रास न आया,
थकावट, ऊब, नीरसता का जीवन कतई न भाया।
मैंने कल्पनाओं के रंग भरकर जीवन को सजाना चाहा,
धरातल छोड़ा, नभ में घूमने का शौक चर्राया।

जब तूफ़ानी हवाएं चलीं,
मैं स्वयं को संभाल न पाया।
हवा निकले गुब्बारे की माफिक,
मैंने स्वयं को धरातल पर पाया।

जीवन अनिश्चित है, यह मेरी समझ में आया,
जीवन सुरक्षा आवश्यक है, यह मेरी
आवश्यकताओं ने बताया।
जीवन–बीमा के सहारे जीवन में रंग भरकर,
यथार्थ व कल्पना का सुभग समन्वय करना आया।

अब मैं बंधा हूँ जीवन–बीमा के सहारे,
गुब्बारे की तरह उड़ सकता हूँ कल्पनाओं के किनारे।
न यथार्थ के कांटे, न कल्पनाओं के पुष्प,
मेरी जिन्दगी की सुन्दरता को बिगाड़ें।

# बैंकिंग कारोबार में हिंदी का प्रयोग (लेख)

आलेख

निधि, सहायक प्रबन्धक
ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स, मण्डल कार्यालय, करनाल

जैसा कि हम जानते हैं कि भाषा कारोबार का माध्यम होती है। आज यही कारण है कि विश्व समुदाय के कई देश भारत को अपना बाजार मानकर अपने कर्मचारियों को हिंदी की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। उनका मुख्य उद्देश्य उनके व्यवसाय को बढ़ाना होता है। पूरे भारत में जिस प्रकार हिंदी एक संपर्क भाषा के रुप में व्याप्त है वह किसी भी संस्था एवं संगठन के व्यावसय का मुख्य माध्यम हो सकती है। चूंकि बैंकों का ग्राहक वर्ग मुख्य रुप से हिंदी भाषी है, अतः यह उम्मीद की जाती है कि बैंकों में कारोबार की शत् प्रतिशत भाषा हिंदी अथवा आधुनिक भारतीय भाषाएं बनें।

भाषा का मुख्य उद्देश्य विचारों का आदान–प्रदान करना है, भाषा केवल संप्रेषण ही नहीं करती है, चरित्र का भी निर्माण करती है। स्पष्ट है कि यह काम सबसे अच्छे रुप में मातृभाषा के द्वारा ही हो सकता है। हमारे प्राचीन भारतीय साहित्य में कहा गया है किः–

**मातृभाषा परित्यज्य यों अन्य भाषामुपासते**
**तत्र यांति हि ते देशः यत्र सूर्यों न भास्ते।**

अर्थात् जो अपनी मातृभाषा को छोड़कर अन्य भाषा की उपासना करता है, वह देश अंधकारमय हो जाता है। हिंदी आज न केवल कारोबार की भाषा बल्कि कारोबार में तकनीक आधारित भाषा भी बन गई है। एक ओर तो यह माइक्रोसॉफ्ट कंपनी के कंप्यूटरों में पूरी तरह हिंदी के रुप में प्रदर्शित हो रही है तो दूसरी तरफ यह इंटरनेट और वेब संसार की भाषा बनकर ग्लोबल भाषाओं को कड़ी प्रतिस्पर्धा दे रही है।

बैंकिंग जैसे सेवा क्षेत्र में इस जन–जन की भाषा की उपयोगिता हमेशा रही है। बैंकों के अखिल भारतीय स्वरुप एवं देश के सर्वाधिक पिछड़े एवं वंचित तबके को बैंकिंग सुविधाएं एवं वित्तीय सहायता प्रदान कर उन्हें आर्थिक विकास के प्रगति चक्र से जोड़ने का संकल्प भला हिंदी के बगैर कैसे चल सकता था। बैंक का सीधा संबंध देश की जनता से होता है। बैंकिंग सेवाएं देश के गाँव–गाँव व दूर–दराज के क्षेत्र की जनता तक पहुंच रही है, और उनकी समझने व बोलने वाली भाषा स्थानीय भाषा हिंदी ही होती है। इसलिए हिंदी भाषा आज बैंको के लिए कारोबार की जरुरत बन गयी है।

अतः हिंदी के प्रयोग से ग्राहकों की अपेक्षित सेवाएं सहज और सफलतापूर्वक पूरी की जा सकती है। हिंदी से प्रभावित होने वाले बैंकिंग क्षेत्र में सर्वप्रथम परामर्श बैंकिंग है। वास्तव में ग्राहक पहली बार बैंक शाखा में एक उत्सुक ग्राहक के रुप में ही आता है अगर उसकी उत्सुकता एवं जिज्ञासा को उसकी अपनी भाषा में शामिल किया जाए जो ग्राहक और बैंक आसानी से समझते हो, तो परामर्श बड़ा ही सार्थक होगा। अतः ऐसी भाषा हिंदी ही हो सकती है क्योंकि हिंदी के द्वारा ग्राहकों की अपेक्षाओं को आसानी से पूरा किया जा सकता है और ग्राहक संतुष्ट ही नहीं होता, अपितु वह हमारा सच्चा मित्र भी बन जाता है। अतः इस भाव को बढ़ाने में हिंदी बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

# सावन बरसे खेत में

संजीव कुमार ''शास्त्री'', प्रबंधक(राजभाषा), यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, करनाल (अब दिल्ली)

कविता

चंचल चपला चपल छमाछम
नाचे जलद निकेत में
घन मृदंग का धीर मंद्र रव
पावन संग लहराए
गायक पिक चातक मयूर शुक
दादुर रटनि सुहाये
नृत्य ताल संग गीत तान लय
गूँजे स्वर समवेत में

तन भीगे मन लह लह लहके
बरसे सावन खेत में
श्यामा वसुधा का दुकुल नव भीग–भीग
लहराए रस बूंदन बरसे धन
छन–छन क्षितिज छोर छू जाए
कल–कल गीत गा रही जीवन धारा
मन के रेत में तन भीगे मन
लह लह लहके बरसे सावन खेत में।।

**कविता**

# बाढ़ की त्रासदी

आयुष सिन्हा, कक्षा–12
डी–16, एनडीआरआरआई कैम्पस, करनाल
(यह कविता केरल व देश के बाढ़–पीड़ितों को समर्पित है)

खत्म होगी क्या, देश में बाढ़ की परेशानी,
आरंभ होती हर वर्ष, आते ही बारिश का पानी।

ये है मौसम की वही कहानी, करती है बस अपनी मनमानी।
होती कहीं वर्षा सुहानी, कहीं अकाल–सूखा, नहीं जरा भी पानी।

होती वर्षा ऋतु बड़ी सुहानी, पर साथ लाती बाढ़ का भी पानी।
जब बढ़ जाता बाढ़ का पानी, दिखता हर ओर पानी ही पानी।

आरंभ होती कृषकों की परेशानी, डूबते घर–द्वार व खेत–खलिहानी,
भर जाते सड़कों व पटरियों पर पानी, रोड–रेल बंद दिखे बस पानी ही पानी।

आए–जाए ना माल, लगने से पानी; मुनाफाखोरों की शुरू होती मनमानी;
कीमतें हो जाती दूनी–चौगुनी; गरीबों को बस मिलती परेशानी।

देखते ऊपर बस रंग आसमानी, कोई हेलिकॉप्टर कहीं फेंके कुछ दाना–पानी।
पीने को नहीं एक बूंद भी पानी, चारों ओर भरा है, बस पानी ही पानी।

खत्म होगी क्या देश में बाढ़ की परेशानी
आरंभ होती हर वर्ष, आते ही बारिश का पानी।

कृषक, जो अन्न उपजा पूरे देश को खिलाए, वही आज दाने–दाने को हाथ फैलाये।
क्या खाए वो किसान, क्या बच्चों को खिलाए, भूखे मवेशी भी, सभी भूखे ही सो जाएं।

सड़े–गले जल–जमाव से फैलती बिमारियाँ, पहले भूख, फिर मारती ये बिमारियाँ।
हर वर्ष की बाढ़ समस्या है गंभीर; उच्च–स्तर पर हल करने को कोई नहीं गंभीर।
मंत्री जी कह गए नहीं समस्या ये गंभीर, पक्के बांध से नहीं होगी मुश्किल फिर।

अगले वर्ष पुनः वही कहानी, पक्का बांध रह गई मंत्री जी की जुबानी।
मंत्री जी सब बातें कहने को कह गए; आते ही बाढ़ घर–खेत पुनः बह गए।

खत्म होगी क्या देश में बाढ़ की परेशानी।
आरंभ होती हर वर्ष, आते ही बारिश का पानी।

# वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्यपरकता की आवश्यकता

आलेख

सोनी कुमार, प्रबंधक, पंजाब एण्ड सिंध बैंक,
आँचलिक कार्यालय, करनाल (अब पंचकूला)

प्राचीन काल में शिक्षा के विषय में एक सूक्ति बड़ी ही प्रसिद्ध एवं प्रचलित थी– **'सा शिक्षा या विमुक्तये'** अर्थात् शिक्षा वही जो मुक्ति दिलाए। लेकिन वर्तमान में यह सूक्ति शाब्दिक और अर्थ दोनों ही तरह से अपना स्वरूप कुछ इस प्रकार बदल चुकी है–**'सा शिक्षा या नियुक्तये'** अर्थात् शिक्षा वही जो नियुक्ति दिलाए। कारण स्पष्ट है कि वर्तमान में हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो रोजगारपरक हो, जिससे हम धनार्जन कर सकें, क्योंकि आज के युग में धनार्जन हमारी सबसे अहम जरूरत बन चुकी है। इसीलिए हर माता–पिता अपने बच्चों को शिक्षा के उसी क्षेत्र में भेजना पसंद करता है जिसमें वह अधिक से अधिक धन कमा सके। नौबत तो यहाँ तक आ पहुँची है कि आज के समय में माता–पिता बच्चे के पैदा होते ही अपनी इच्छानुसार यह तय कर देते हैं कि वो क्या बनेगा ? लेकिन धनार्जन की ओर बढ़ती हमारी शिक्षा–व्यवस्था के कार्यान्वयन से कहीं–न–कहीं हमारे नैतिक मूल्यों का पतन अवश्य हुआ है। अनेक बार ऐसे लोगों के बारे में ऐसी बातें सुनने में आती हैं कि वे स्वयं अच्छे पदों पर नियुक्त होते हैं और अच्छा पैसा कमाने के साथ–साथ ये लोग अच्छा जीवन जी रहे होते हैं लेकिन जब उनके माता–पिता के बारे में बात आती है तो कुछ इस तरह की आश्चर्यजनक बातें सुनने में आती हैं कि वे या तो उनके द्वारा उपेक्षित होते हैं या किसी वृद्ध आश्रम के सहारे उन्हें छोड़ दिया जाता है। यहाँ सवाल उठता है कि क्या उनके माता–पिता ने यही सोचकर उन्हें शिक्षित किया था ? ऐसे में शिक्षा–व्यवस्था पर भी एक प्रश्न चिह्न लग जाता है कि कहीं–न–कहीं यह हमारी शिक्षा–व्यवस्था में एक दोष है, कि हम अच्छे व्यवसायी तो तैयार कर रहे हैं लेकिन अच्छे नागरिक नहीं। यूँ तो हमारे देश में शिक्षा–प्रणाली में सुधार के लिए समय–समय पर आवश्यक परिवर्तन होते रहे हैं और इसके लिए कई आयोग, घोषणा–पत्र, एक्ट भी बनाए गए। यथा–1813 का चार्टर एक्ट एवं 1854 का वुड का घोषणा–पत्र द्वारा शिक्षा क्षेत्र में हुई प्रगति की समीक्षा के लिए 1882 में हंटर कमीशन, विश्वविद्यालय आयोग एवं अधिनियम, सैडलर आयोग, हर्टोग समिति, कोठारी आयोग आदि। लेकिन इन सभी में लगभग एक ही मुख्य बात पर विशेष बल दिया गया–व्यवसायिक दक्षता। पिछले दो दशकों से यह देखने में आया है कि पाश्चात्य शिक्षा पद्धति, भारतीय शिक्षा पद्धति पर भारी पड़ रही है और इसको अपनाते हुए हम भारतीय इस पाश्चात्य शिक्षा पद्धति की ओर पूरी तरह से उन्मुख हो चुके हैं। आज जहाँ इस शिक्षा प्रणाली के फलस्वरूप इंजीनियर, वैज्ञानिक, डॉक्टर, शिक्षक आदि व्यवसायियों की लंबी कतारें हैं वहीं आदर्श नागरिकों का समाज में अभाव है, जिससे आदर्श समाज के निर्माण की परिकल्पना एक मिथक बनकर रह गई है। वर्तमान में यह देखने में भी आया है कि दिनों–दिन अपराधों की संख्यिा बढ़ रही है। फिर चाहे वह किसी के धन चोरी से जुड़े मामले हों या फिर किसी के अपमान या अस्मत से जुड़ा। प्रतिदिन ऐसे अपराध निरंतर बढ़ रहे हैं। हमारे सांस्कृतिक समाज में ये भयंकर परिवर्तन हमारी बदलती शिक्षा प्रणाली का ही परिणाम हैं। यहाँ ध्यिान दिए जाने की बात यह है कि निस्संदेह हमारे देश में शिक्षा में व्यावसायिक दक्षता पर जोर देते हुए इसमें आवश्यक सुधार हुए हैं लेकिन एक सफल सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों की महत्ता को भी नकारा नहीं जा सकता। यहाँ आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा में व्यवसायिक दक्षता के साथ–साथ मूल्यपरक शिक्षा को भी समान महत्व दिया जाए तभी हम आदर्श भारतीयों का निर्माण कर सकते हैं। यदि विद्यार्थियों को उनके व्यवसायिक विषय से जुड़े प्रशिक्षण के साथ–साथ सामाजिक संबंधों, भावनाओं, रिश्तों तथा सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों का भी उनके शिक्षा काल में ही ज्ञान कराया जाएगा तो काफी हद तक हम आदर्श समाज की ओर बढ़ सकते हैं। कुछ आवश्यक सुधार जो हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति में किए जाने चाहिए, निम्नानुसार हैं :–

### प्राथमिक स्तर पर नैतिकता :–

1. शिक्षा मनोवैज्ञानिकों के अनुसार शिशु एक कोरे कागज की तरह होता है उसके जीवन रूपी कागज पर वही लिखा नजर आएगा जो शिक्षक रूपी कलम उस पर लिख देगी। अतः शिक्षकों का यह परम उत्तरदायित्व बन जाता है कि वे बच्चों को नैतिकता के ऐसे बगीचे में ले जाएं जिसमें उच्चतर आदर्शों के गुलाब खिले हैं। जिनकी महक से उनके जीवन में केवल उच्च आदर्शों से महकती खुशबू का ही संचार हो।

2. मनोवैज्ञानिक वैलेंटाइन ने शैशवावस्था को ''सीखने का आदर्श काल'' माना है। अतः विद्यालयों में शिक्षकों को इस बात पर खास ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है कि वे बच्चों के जीवन के इस आदर्श काल को नैतिकता का स्वर्णिम काल बनाएं तथा साथ ही परिवारजन भी इसमें अपनी भूमिका का निर्वाह उचित प्रकारेण करें।

3. कहा जाता है कि पहले हम अपनी आदतों का निर्माण करते हैं और फिर हमारी आदतें हमारा निर्माण करती हैं। अतः इस बात को ध्यान में रखते हुए शिशुओं के माता–पिता तथा शिक्षकों को शिशुओं में सच बोलने, बड़ों का आदर करने, अपने काम को समय पर करने, अनुशासन जैसी अच्छी आदतों का निर्माण करना चाहिए, क्योंिक बाद में यही आदतें फिर उनकी जीवन–शैली का निर्माण करती हैं।

कविता

# कविता द्वारा पर्यायवाची शब्द

पंकज सिंह
टीजीटी, केंद्रीय विद्यालय, करनाल

सोम सुधाकर शशि राकेश
राजा भूपति भूप नरेश
पानी अम्बु वारि या नीर
वात हवा और अनिल समीर
दिवा दिवस दिन या वासर
पर्वत अचल शैल महिधर
विश्व जगत जग भव संसार
घर गृह आलय या आगार
अग्नि पावक आग दहन
चक्षु नेत्र नयन लोचन
विषधर सर्प या नाग भुजंग
घोड़ा घोटक अश्व तुरंग
हिरन कुरग सुरभी सारंग
गज हाथी करि नाग मतंग
वस्त्र वसन अम्बर पट चीर
तोता सुआ सुग्गा कीर

दुग्ध दूध पय अमृत क्षीर
गात कलेवर देह शरीर
सिंह केशरी शेर मृगेन्द्र
सुरपति मघवा इन्द्र महेन्द्र
अमिय सुधा अमृत मधु सोम
नभ अम्बर आकाश व्योम
बन्दर वानर मर्कट कीश
भगवन ईश्वर प्रभु जगदीश
दानव राक्षस दैत्य तमीचर
कमल कंज पंकज इन्दीवर
असि तलवार खड़ग करवाल
आम्र आम सहकार रसाल
पुत्र तनय सुत बेटा पूत
कोयल कोकिल पिक परभूत
बेटी पुत्री सुता आत्मजा
यमुना कालिन्दी व भानुजा

रक्त लहू शोणित अरु खून
पुष्प सुमन गुल फूल प्रसून
गिरि पर्वत या पहाड़ धराधर
वारिद बादल नीरद जलधर
बिजली चपला तड़ित दामिनी
रात निशा शर्वरी यामिनी
भौंरा मधुकर षटपद भृंग
खग पक्षी द्विज विहग विहंग
मित्र सखा सहचर या मीत
घी घृत अमृत या नवनीत
रक्तनयन हारीत कबूतर
चोर खनक मोषक रजनीचर
अम्बुधि नीरधि या रत्नाकर
सूरज भानु सूर्य दिवाकर
सर तालाब सरोवर पुष्कर
आशुतोष शिव शम्भू शंकर।।

कविता

# हिन्दी–हमारी मातृभाषा

डा. चित्रनायक, वरिष्ठ वैज्ञानिक
डेरी अभियांत्रिकी विभाग, रा.डे.अनु.सं., करनाल

छायी है सबों पर सिर्फ अंग्रेजी, पर गाते सभी हिन्दी हिन्दी।
साल भर चलती सिर्फ अंग्रेजी ही अंग्रेजी,
बस आज ही के दिन गाते सभी हिन्दी हिन्दी।
पूछते पड़ोसी व मित्रगण, पढ़ता बच्चा तुम्हारा कौन सा मीडियम ?
कहते सीना तान विद्यालय है उसका इंग्लिश मीडियम।
अगर जो पढ़ता बच्चा हिन्दी मीडियम
सभी कहते तुम्हें, है ही नहीं तुम्हे बच्चों के भविष्य का गम।
सुबह–सुबह बच्चे बोलते–गुड मार्निंग सर।
अरे! शुभप्रभात क्या होता है– ये भी तो बताओ मगर।
दवाइयाँ भी खाते हम रोज अंग्रेजी।
आयुर्वेद के तो नाम से भी, हमें है परहेजी।
हिन्दी शुद्ध बोलने वालों पर करते कुछ लोग व्यंग्य।
पर उनके अंग्रेजी और हिन्दी दोनों भाषाओं में हैं हाथ तंग।
भाषा होती नहीं है, कोई भी बुरी,
फिर आपने अंग्रेजी के चक्कर में हिन्दी ही क्यों छोड़ी ?
जरूरी है अंग्रेजी भाषा, सीखनी ही चाहिए।
पर हिन्दी है मातृभाषा, इसे ना भुलाइये।

कविता

# चिंता और चिता

सोनी कुमार डेहरिया,
प्रबंधक–राजभाषा, पंजाब एण्ड सिंध बैंक, आँचलिक कार्यालय, करनाल

मैं पैदा जब हुआ इस जग में,
शुरु किया चिल्लाना,
फिर धीरे–धीरे, हंसना–मुस्कुराना,
आया था जब, इस जग में,
तो सिर्फ, उस ईश्वर को जानता था,
नहीं पता था कि अब, मैं इस नश्वर संसार के,
मायाजाल में फंसने आ गया हूँ।
न था जानता चिंता को, जो शुरु होती है,
जीवन के सबसे सुंदर काल,
बचपन के बीतने के बाद,
कभी पढ़ने की, कभी परिवार की,
कभी कुछ पाने, और कभी आगे बढ़ने,
तरह–तरह की चिंता, लगी रहती है सबको,
क्या पता था कि अब, मैं इस चिंता की,
दलदल में धंसने आ गया हूँ।
पढ़ते समय परिवार की चिंता,
पढ़ाई खत्म हुई तो,
कुछ बनने की चिंता,
कुछ बने तो,
आगे बढ़ने की चिंता,
ऐसा लगता है,
कि कभी खत्म नहीं होगी,
मेरी ये चिंता,
धीरे–धीरे फिर महसूस हुआ,
लगता है मैं,
इस चिंता की आग में,
पल–पल जलने आ गया हूँ।
पल–पल इस आग में मैं, जलता जा रहा हूँ,
और जिन्दगी के सफर में,
बस यूँ चलता जा रहा हूँ,
लगता है ऐसा कि,
समय के साथ बढ़ती जाएगी, ये चिंता,
जीते हुए भी मैं, चिंता से जैसे,
घुट–घुटकर मरने आ गया हूँ।
जीते जी इस चिंता ने,
पीछा न छोड़ा,
जब देखा एक अर्थी को,
तो लगा,
कि जीवन है सीमित और बहुत थोड़ा,
जैसे इस चिंता ने,
उस अर्थी वाले व्यक्ति की,
चिता का रूप धारण कर लिया हो,
और उसके जीवन को,
अपना ग्रास कर लिया हो,
सवाल कौंधा फिर मन में,
क्या मैं भी इसी चिता की आग में,
खुद को जलाने आ गया हूँ?
पूरी जिंदगी बीत गई,
चिंता का कारण समझने में,
पर समझ नहीं आया था,
जब उस अर्थी को जलते देखा,
तो समझ में आया था,
कि बेकार की है मेरी ये चिंता,
असल में सच तो, ये चिता है, न कि मेरी ये चिंता,
जहां आने पर 'डेहरिया', हर आदमी की,
खत्म हो जाती है, सब तरह की चिंता।।

# राजभाषा की दशा व दिशा

आलेख

कुलजीत सिंह, वरिष्ठ लिपिक, स्थापना–1 अनुभाग,
भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

विश्व के प्रत्येक देश की अपनी एक भाषा है। हर देश की अपनी एक भाषा और संस्कृति होने के कारण ही वह देश पहचाना जाता है जो लोग अपने देश की भाषा और संस्कृति को न अपना कर दूसरे देश की भाषा को अपनाते हैं, वह देश सांस्कृतिक रूप से गुलाम माना जाता है, क्योंकि जिस देश के लोग जिस भाषा में पले बढ़े होते हैं। लेकिन बाद में वह किसी दूसरी भाषा को अपना लेते हैं वह देश कहीं–न कहीं सांस्कृतिक रूप से गुलाम ही माने जाते हैं। आईए हम बात करते हैं अपने देश की राजभाषा हिन्दी की। भारत के संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा 14 सितम्बर 1949 को मिला और भारत का संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ और यह माना गया कि धीरे–धीरे हिन्दी भाषा अंग्रेजी भाषा पर आधिपत्य स्थापित कर लेगी और अंग्रेजी भाषा का प्रभाव खत्म हो जायेगा। लेकिन यह हमारे देश की विडम्बना ही है कि आज तक भी हम अंग्रेजी भाषा के प्रभाव को कम नहीं कर सके। अंग्रेजों की गुलामी के बाद से हिन्दी भाषा का प्रचार, प्रसार भी किया गया। लेकिन आज भी लोग यह कहते हैं कि हमारी हिन्दी थोड़ी कमजोर है। उसका तात्पर्य यह हुआ कि उन लोगों का अंग्रेजी भाषा पर ज्यादा पकड़ है। लेकिन यदि कोई लोग यह कहें कि हमारी हिन्दी भाषा बहुत अच्छी है, इसका मतलब यह निकाल लिया जाता है कि वह लोग ज्यादा पढ़े लिखे नहीं क्योंकि उन्हें अंग्रेजी के बारे में ज्यादा ज्ञान नहीं है यह हमारी विडम्बना है।

आजकल स्कूल से लेकर कॉलेज, विश्वविद्यालय तक की पढ़ाई में केवल अंग्रेजी पर जोर दिया जाता है लेकिन इसके बावजूद भी हम किसी भी अन्य राज्य में चले जायें वहाँ पर केवल हमें हिन्दी भाषा ही एक दूसरे से जोड़ती है, यदि हमें हिन्दी आती है। हम बोलना और समझना जानते हैं तो हमें किसी भी राज्य में भाषा सम्बन्धी कोई परेशानी नहीं होगी।

आजादी के इतने सालों बाद भी हम अंग्रेजी भाषा के प्रभुत्व को समाप्त नहीं कर पाये। हिन्दी भाषा को जो स्थान मिलना चाहिए था वह स्थान आज तक भी नहीं मिला। इसके बावजूद हम जानते हैं कि राजभाषा हिन्दी का जो स्थान मिलना चाहिए, उसे हासिल किया जा सकता है केवल हमें अपनी मानसिकता को बदलना होगा।

## आईए जानते हैं हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्य :

1. हिन्दी भाषा संस्कृति के शब्द सिन्धु शब्द से उत्पत्ति हुई और सिन्धु क्षेत्र में आने के कारण ईरानी लोग इसे हिन्द, हिन्दी व हिन्दुस्तान कहने लगे।
2. संवैधानिक रूप से हिन्दी भाषा को राजभाषा का दर्जा 14 सितम्बर 1949 को मिला और इसे आगे बढ़ाने के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा तथा बाद में महात्मा गांधी द्वारा भी आंदोलन किये गए।
3. विश्व में सबसे अधिक चीनी भाषा के बाद हिन्दी भाषा बोली जाती है। हिन्दी भाषा केवल भारत देश में ही नहीं बल्कि पाकिस्तान, म्यांमार और नेपाल देशों में भी बोली जाती है।
4. इसके अतिरिक्त जहाँ भी हमारे प्रवासी भारतीय मौजूद हैं जैसे कि अमेरिका, युगान्डा, दक्षिण अफ्रीका, कनाडा, ब्रिटेन आदि देशों में भी हिन्दी भाषा ही बोली जाती है। यह कहने में भी कोई अतिशयोक्ति न होगी कि हमारे देश का नागरिक चाहे किसी भी विश्व के देश में चले जायें वहाँ पर वे हिन्दी भाषा का प्रचार–प्रसार करते हैं।
5. राजभाषा हिन्दी हमारी सबसे उन्नत व व्यवस्थित भाषा है, अर्थात् जो हम लिखते हैं, वहीं बोलते है और उसका मतलब भी वही निकलता है यह सबसे अद्भुत है जबकि अन्य भाषाओं में यह नहीं होता।
6. राजभाषा हिन्दी सबसे सरल भाषा है इसे सीखना सबसे आसान है जबकि चीनी भाषा को सीखने में काफी वर्ष लग जाते है।
7. हिन्दी में त्रुटि ना के बराबर है इसे समझना सबसे आसान है।
8. राजभाषा हिन्दी का शब्दकोश भी अद्भुत है इसमें हम अपनी भावना को कई शब्दों द्वारा प्रकट कर सकते हैं जबकि अन्य भाषाओं में ऐसा नहीं होता।
9. हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है और कितने ही उपन्यास व साहित्य हिन्दी भाषा में छपे हैं, यह अपने आप में अद्भुत है।
10. आज इंटरनेट व मोबाइल में जो सूचना की क्रान्ति हुई है उसमें हिन्दी भाषा भी किसी भाषा से पीछे नहीं है।
11. इंटरनेट की दुनिया में विश्व के सबसे बड़े सर्च इंजन गूगल द्वारा भी राजभाषा हिन्दी को वर्ष 2009 में अपनाया गया और इंटरनेट पर भी हमें हिन्दी में सभी कार्य करने में किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होती।

लेकिन इससे बड़ी विडम्बना क्या होगी कि हमारे देश के लोग हिन्दी भाषा को बोलने में संकोच करते हैं। जरूरत है केवल अपनी मानसिकता अपनी सोच बदलने की। अधिक से अधिक सरकारी कार्यों में हिन्दी का प्रयोग होना चाहिये और इसको बढ़ावा देने के लिए सितम्बर माह में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं ताकि सरकारी कार्यों में हिन्दी को ज्यादा से ज्यादा अपनाया जाये इसके अतिरिक्त जो कर्मचारी पूरे वर्ष हिन्दी में कार्य करते हैं। उन्हें प्रोत्साहन राशि भी दी जाती है, लेकिन जिस स्तर तक हिन्दी का कार्य होना चाहिये वह नहीं हो रहा है।

बैंकों का कार्य एवं अदालत का कार्य, यहाँ तक कि जो बिल जैसे कि बिजली, पानी, गृह कर आदि लोगों तक पहुचते हैं, वह भी हिन्दी में ही जारी किये जाने चाहिये। बच्चों को अधिक से अधिक हिन्दी पत्रिकाएं, पुस्तकालय में पढ़ने हेतु जोर देना चाहिये।

यदि हम अपने संस्थान की बात करें तो वैज्ञानिकों को ज्यादा से ज्यादा शोध पत्रों को हिन्दी में प्रसारित करना चाहिये ताकि उनकी तकनीक को हिन्दी भाषा में किसानों तक पहुँच सके और वह इसका सदुपयोग कर सकें। सभी सरकारी कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में हो, इसके लिये अन्य स्तर के कर्मचारियों/अधिकारियों की भागीदारी बहुत ही आवश्यक है। यह मेरा मानना है कि यदि अधिकारी अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को हिन्दी में काम करने की प्रेरणा दें तो वह कर्मचारी निश्चित रूप से हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करेंगे।

जरूरत है केवल प्रोत्साहन की निःसन्देह जब हम लोग हिन्दी में कार्य करते हैं। तो हमें संकोच नहीं करना चाहिए। बल्कि अपनी राजभाषा को आगे बढ़ाने में प्रयास करने चाहिये। और राजभाषा हिन्दी को जो स्थान मिलना चाहिये उसे आगे ले जाने की कोशिश करनी चाहिए। जब विश्व के दूसरे देशों के लोग आज हमारी राजभाषा हिन्दी में बात करते है तो हमें अपनी भाषा में बात करने में संकोच होता है कि यह समझ से परे है। घर पर भी बच्चों से अंग्रेजी की बजाय हिन्दी में बात करें और उन्हें राजभाषा के महत्व के समझाना होगा, तभी हमारा देश सांस्कृतिक रूप से मजबूत हो पायेगा

आओ हम प्रण लें कि हम अपनी राजभाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा हिन्दी का दर्जा दिलाकर ही दम लेंगे।

# भाषा

सुमित कुमार
प्रबंधक, केनरा बैंक, एसएमई सुलभ, करनाल

भाषा अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। भाषा के माध्यम से ही हम एक दूसरे से जुड़ते हैं। हर देश की अपनी एक भाषा होती है जिसमें वहां के लोग आपस में विचारों का अदान प्रदान करते हैं। हिंदी विश्व में बोली जाने वाली मुख्य भाषाओं में से एक है। हिन्दी का इतिहास बहुत पुराना है। हिन्दी भाषा अपने आप में एक बहुत समृद्ध भाषा है। हिंदी इतनी समृद्ध भाषा है कि यहाँ एक वस्तु को सम्बोधित करने के लिए अनेक शब्द उपलब्ध हैं जैसे–सूर्य के लिए रवि, भानु, मार्तण्ड, भास्कर, प्रभाकर आदि, चंद्रमा के लिए शशि, इंदु, सुधाकर, मयंक आदि। जबकि अंग्रेजी में सूर्य के लिये एक ही शब्द है–सन, और चंद्रमा के लिए भी एक ही शब्द है; मून। इसके अतिरिक्त अन्य कोई शब्द नहीं है। इसके अतिरिक्त हिंदी भाषा को लिखने या बोलने के लिए जो व्याकरण प्रयोग होती है वो कई सहस्र वर्षों से समान ही है उसमें कोई भी भेद नहीं आया है इसलिए उसे मानक हिंदी व्याकरण कहते हैं। हिन्दी ने अपने आप में कई भाषाओं के शब्दों को आत्मसात् कर लिया है। हिंदी ने न केवल स्थानीय भाषाओं अपितु विदेशी भाषाओं को भी प्रभावित किया है एवं हिंदी के बहुत से शब्द अंग्रेजी भाषा में ज्यों के त्यों प्रयोग किए जाते हैं जैसे–अवतार, जंगल, कर्म, लूट, मंत्र, पक्का, ठग, योग इत्यादि। इसी प्रकार आजकल हिंदी भाषा में अंग्रेजी भाषा के शब्दों की अधिकता बहुत बढ़ गई है। परन्तु हास्यप्रद एवं गम्भीर विषय यह है कि आजकल हम अपने हिंदी के शब्दों का उच्चारण भी अंग्रेजी में करने लगे हैं। खुद को निम्न एवं अंग्रेज एवं उनकी भाषा को उच्च बनाने में हम इस कदर जुटे हुए हैं कि योग कब योगा हो गया, राम कब रामा हो गया, अशोक कब अशोका हो गया पता ही नहीं लगा। आइये इस विषय को समझने की कोशिश करते हैं कि आखिर ये सब हो क्यों रहा है।

जिस प्रकार हिंदी की वर्णमाला में स्वर एवं व्यंजन होते हैं और एक पूर्ण अक्षर को लिखने के लिये या बोलने के लिये व्यंजन के साथ स्वर को जोड़ा जाता है उसी प्रकार यदि हम हिंदी के शब्दों को अंग्रेजी में लिखेंगे तो अवूमस को अक्षर के अंत में जोड़ा जाता है जिससे वह अक्षर एवं शब्द पूर्ण होता है।

आइये देखते हैं कुछ इस प्रकार के शब्दों को जो अंग्रेजी उच्चारण के कारण अपना वास्तविक स्वरूप लगभग खो चुके हैं:

| अंग्रेजी शब्द | हिंदी उच्चारण (शुद्ध) | हिंदी उच्चारण (अशुद्ध) |
|---|---|---|
| Rama | राम | रामा |
| Ashoka | अशोक | अशोका |
| Yoga | योग | योगा |
| Kerala | केरल | केरला |
| Kurukshetra | कुरुक्षेत्र | कुरुक्षेत्रा |
| Chandra | चंद्र | चंद्रा |
| Shukla | शुक्ल | शुक्ला |
| Sachdeva | सचदेव | सचदेवा |
| Shiva | शिव | शिवा |
| Krishna | कृष्ण | कृष्णा |

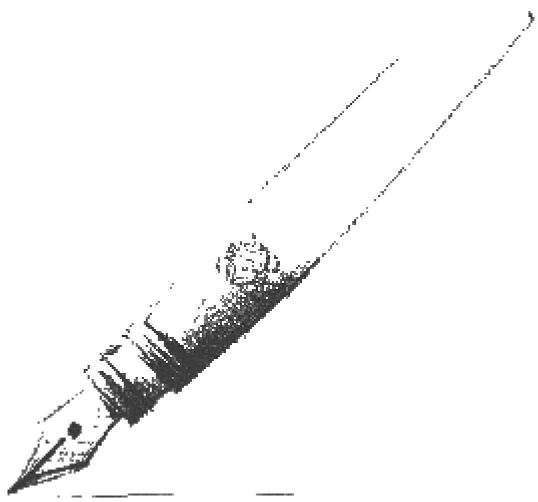

विडम्बना यह है कि हम अंग्रेजी के शब्दों के सही उच्चारण पर इतना अधिक जोर देते हैं कि यदि कोई हिंदी भाषी किसी अंग्रेजी के शब्द का गलत उच्चारण करें तो हम उसका उपहास करते हैं और इतना ही नहीं हम अपनी वर्तनी भी उन्हीं के पश्चिमी देशों की वर्तनी के समान करना चाहते हैं परंतु दूसरी ओर हम अपने ही शब्दों का जाने अनजाने गलत उच्चारण करने में लगे हुए हैं।

कोई अहिंदी भाषी यदि हिंदी के शब्दों का उच्चारण गलत करे तो समझ में आता है परंतु यदि कोई हिंदी भाषी अपने शब्दों का गलत उच्चारण करें तो यह दुःखद एवं शोचनीय है। हमारी भाषा समृद्ध एवं प्रबुद्ध तभी रह पायेगी जब हम उसका सम्मान करेंगे वरना समय के साथ हिंदी अपनी सुंदरता एवं स्वरूप खो देगी ।

# राजभाषा कार्यान्वयन और तकनीक

**आलेख**

श्रवण कुमार मिश्रा
यूको बैंक, हरियाणा अंचल कार्यालय, करनाल

सूचना प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुकी है । वर्तमान युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। सभी कार्यालयों में अधिकतर काम कंप्यूटरों पर ही किये जाते हैं। नित–प्रतिदिन नए–नए सॉफ्टवेयर एवं टूल विकसित किए जा रहे हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में हिंदी को कार्यालयीन भाषा का दर्जा प्राप्त है। इसलिए कंप्यूटर पर ही हिन्दी का काम किए जाने से राजभाषा के कार्यान्वयन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। आधुनिक युग कंप्यूटर का युग है जिसने मनुष्य की कागज पर निर्भरता को काफी हद तक कम कर दिया है। कंप्यूटर के आगमन, प्रसार तथा इस पर हमारी बढ़ती निर्भरता ने कुछ समय तक के लिए भारत जैसी तीसरी दुनिया के देश के लिए स्थानीय भाषाओं के पतन का संकट पैदा कर दिया था परंतु नित नए तरीके से विकसित होते इस यंत्र ने ऐसी बाधाओं को पार कर लिया है और अब यह सभी भारतीय भाषाओं के प्रसार के लिए इलेक्ट्रॉनिक माध्यम उपलब्ध करा रहा है। कंप्यूटर ने टाइपिंग के लिए उपयोग किए जाने वाले टाइपराइटर को चलन से बाहर किया परंतु शुरुआत में यह स्थानीय भाषाओं के लिए सहज नहीं था। इस समस्या का समाधान यूनिकोड के आगमन से हुआ जिसने हिन्दी के साथ–साथ अन्य भारतीय भाषाओं के लिए भी कंप्यूटर पर काम करने के लिए आसान प्लेटफॉर्म निर्मित किया। यूनिकोड ने हिन्दी में टाइपिंग को आसान बना दिया है।

आज का युग सूचना, संचार व विचार का युग है। सूचना प्रौद्योगिकी एक सरल तंत्र है जो तकनीकी प्रयोग के सहारे सूचनाओं का संकलन, प्रक्रिया व संप्रेषण करता है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग मे कंप्यूटर का महत्व कल्पवृक्ष से कम नहीं है जिससे व्यवसायिक, वाणिज्यिक, जन संचार, शिक्षा, चिकित्सा आदि कई क्षेत्र लाभांवित हुये हैं। कंप्यूटर व सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जो विकास हुआ है वह भाषा के क्षेत्र में भी मौन क्राँति का वाहक बन कर आया है। अभी तक भाषा जो केवल मनुष्यों की आवश्यकताओं को पूरा कर रही थी, उसे सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में मशीन व कंप्यूटर की नित नई भाषायी मांगों को पूरा करना पड़ रहा है।

संविधान के अनुच्छेद 343 के आधार पर हिंदी को भारत में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है जिसकी वजह से हिंदी भाषा का प्रयुक्ति क्षेत्र वृहद है। सभी सरकारी कार्यालयों में हिंदी को कार्यालयीन भाषा का दर्जा प्राप्त है व इसका कार्यक्षेत्र केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों, कार्यालयों, निगमों, विभागों व उपक्रमों आदि तक फैला हुआ है। समकालीन समय में सूचना प्रौद्योगिकी जिसकी आत्मा कंप्यूटर है, किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी बना हुआ है।

यह सर्वज्ञात है कि कंप्यूटर ने राजभाषा हिंदी में कार्य करना सुगम बनाया है। हिंदी में कंप्यूटर सॉफ्टवेयर विकसित करने का कार्य काफी पहले प्रारंभ हुआ और अब यह आंदोलन की शक्ल ले चुका है। यह कार्य सर्वप्रथम सी–डैक द्वारा किया गया था। वर्तमान में हिंदी भाषा के लिये कई संगठन कार्य करते है, जिसमें सी–डैक, गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग केंद्रीय हिंदी संस्थान और अनेकों गैर सरकारी संगठन जैसे सराय, इंडलिक्स आदि प्रमुख हैं। एक ओर जहाँ यूनिकोड के प्रयोग ने हिंदी के प्रयोग को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है वहीं आज भी सिस्टम जेनरेटेड प्रोग्रामों में हिंदी की स्थिति कुछ अच्छी नहीं है। अधिकतर सॉफ्टवेयर प्रोग्राम पहले ही तैयार कर लिये जाते हैं, उसके बाद उनमें हिंदी की सुविधा तलाश की जाती है। इसके बावजूद भी यह संतोष का विषय है कि भाषा के प्रचार–प्रसार में सूचना प्रौद्योगिकी की भूमिका अहम हो गयी है व भाषाओं के मानकीकरण का कार्य आसान हो गया है। हिंदी यूनिकोड के अस्तित्व में आने के बाद अब हर कंप्यूटर, लैपटॉप, स्मार्ट–फोन आदि पर भी हिंदी में काम करना व करवाना कोई बड़ा मुद्दा नहीं रह गया है। यूनिकोड एक अंतर्राष्ट्रीय मानक कोड है जिसमें हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं सहित विश्व की अनेक भाषाओं के लिये कोड निर्धारित किये गये हैं। चूँकि कंप्यूटर मूल रूप से किसी भाषा से नहीं बल्कि अंकों से संबंध रखता है, इसलिये हम किसी भी भाषा को एनकोडिंग व्यवस्था के तहत मानक रूप प्रदान कर सकते हैं। साथ ही इसी आधार पर उनके लिये फॉण्ट भी निर्मित किये जा सकते हैं। जैसे अंग्रेजी भाषा अथवा रोमन लिपि के लिये एरियल फॉण्ट की एनकोडिंग की गयी है, उसी तरह हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिये निर्मित आधुनिक यूनिकोड फॉण्ट्स की भी एनकोडिंग की गयी है, जिसे अंतराष्ट्रीय स्तर पर एप्पल, आइबीएम, माइक्रोसॉफ्ट, सैप, साइबेस, यूनिसिस जैसी सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग की प्रमुख कंपनियों ने अपनाया है। मानकीकरण का यह कार्य अमेरिका स्थित लाभ ना कमाने वाली एक संस्था, यूनिकोड कंसोर्शियम, द्वारा किया जाता रहा है। भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिक विभाग ने भी इस कंसोर्शियम के जरिये हिंदी के यूनिकोड फॉण्ट जैसे मंगल, कोकिला, एरियल यूनिकोड एमएस आदि की एनकोडिंग करायी है, जिसकी वजह से आधुनिक कंप्यूटरों में यह फॉण्ट पहले से ही विद्यमान होते हैं । यूनिकोड एक एनकोडिंग व्यवस्था है जो कि प्राचीन भाषाओं से भी परिचित है। इसकी विशेषता यह है कि एक कम्प्यूटर के पाठ को दुनिया के किसी भी अन्य यूनिकोड आधारित कम्प्यूटर पर खोला व पढ़ा जा सकता है । इसके लिए अलग से उस भाषा के फॉण्ट का प्रयोग करने की अनिवार्यता नहीं होती, क्योंकि यूनिकोड केन्द्रित हर फॉण्ट में सिद्धांततः विश्व की हर भाषा के अक्षर मौजूद होते हैं। यूनिकोड आधारित

कम्प्यूटरों में प्रत्येक कार्य भारत की किसी भी भाषा में किया जा सकता है, बशर्ते कि 'ऑपरेटिंग सिस्टम' पर प्रतिस्थापित सॉफ्टवेयर यूनिकोड व्यवस्था आधारित हो। आज बाजार में आने वाला हर नया कंप्यूटर व अन्य गैजट ना सिर्फ हिंदी, बल्कि दुनिया की आधिकतर भाषाओं में कार्य करने में सक्षम है क्योंकि यह सभी लिपियाँ यूनिकोड मानक में शामिल हैं।

मौजूदा समय में हिंदी "ग्लोबल हिंदी" में परिवर्तित हो गयी है, आज तकनीकी विकास के युग में दूसरे देशों के लोग भी, विपणन के लिए ही सही, हिंदी भाषा सीख रहे हैं। आज स्थिति यह है कि भारत व चीन के व्यवसायिक संबंधों को बढ़ाने की संभावनाओं की तलाश के लिये लगभग दस हजार लोग चीन में हिंदी सीख रहे हैं। आज से लगभग पाँच दशक पूर्व कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य आरंभ हुआ और इसी तरह एनकोडिंग व डिकोडिंग के माध्यम से विश्व की विभिन्न भाषाएँ भी कंप्यूटर पर सुलभ होने लगी। इस तकनीकी विकास ने भारतीय भाषाओं को जोड़ा है। कंप्यूटर के माध्यम से विभिन्न सॉफ्टवेयरों, सी—डैक संस्था के हिंदी सीखने सीखाने के विभिन्न कंप्यूटरीकृत कार्यक्रमों जैसे—प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ पाठ्यक्रमों के लिये लीला वाचिक तकनीक के प्रयोग ने भाषा सीखने की प्रक्रिया को विभिन्न भाषा माध्यमों से बहुत ही आसान बना दिया, जिससे भाषायी निकटता का उदय हुआ, जिसके वजह से भाषायी एकता आना स्वाभाविक था।

वर्तमान समय में मोबाइल फोन ने लैंडलाइन फोन का स्थान ले लिया है। मोबाइल फोन पर हिंदी समर्थन हेतु निरंतर कार्य चल रहा है। प्रायः सभी मोबाइल कंपनियाँ हिंदी टंकण, हिंदी वॉइस सर्च व हिंदी भाषा में इंटरफेस की सुविधा प्रदान कर रही हैं। इसके साथ ही आज आई—पैड पर हिंदी लिखने की सुविधा उपलब्ध है। अंग्रेजी के साथ—साथ आज हिंदी भाषा भी पूरे विश्व में फैलती जा रही है। जागरण, वेब दुनिया, नवभारत टाइम्स, विकिपिडिया हिंदी, भारत कोष, कविता कोश, गद्य कोश, हिंदी नेक्स्ट डॉट कॉम, हिंदी समय डॉट कॉम आदि इंटरनेट साइटों पर हिंदी सामग्री देखी जा सकती है। आज विज्ञापन से संबंधित एसएमएस से ले कर खाते में बकाया शेष राशि तक की जानकारी हिंदी भाषा में प्राप्त की जा सकती है।

हिंदी के बड़े बाजार की नब्ज़ को देखते हुये माइक्रोसॉफ्ट ने अपने सॉफ्टवेयर उत्पादों से संबंधित सहायक साहित्य तथा मार्गदर्शक सूत्रों को विशेषज्ञों की सहायता से हिंदी में उपलब्ध कराने हेतु प्रयास शुरू कर दिया है। बहुप्रचलित विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम के साथ एमएस वर्ड, पावर प्वाइंट, एक्सेल, नोटपैड, इंटरनेट एक्सप्लोरर जैसे प्रमुख सॉफ्टवेयर उत्पाद अब हिंदी में कार्य करने की सुविधा प्रदान करते हैं। माइक्रोसॉफ्ट का लैंग्वेंज इंटरफेस पैकेज स्थानीयकरण का बेहतर उदाहरण है। आज विश्व के कई देशों के पास अत्यंत ही सक्षम अनुवाद टूल हैं। इनकी सहायता से वैश्विक मंचों पर विभिन्न देशों का आपसी मिलन आसानी से संभव हुआ है। भारत में भी अनुवाद टूल बनाने की दिशा में कई सॉफ्टवेयर बनाए गए हैं जिनमें सी—डैक, आईआईटी कानपुर, आईआईटी मुंबई जैसी संस्थाओं की अहम भूमिका है।

इसके अलावा हिंदी में शब्द संसाधन के लिये विशेष रूप से तैयार ई—पुस्तक, राजभाषा विभाग की साइट पर उपलब्ध है। गूगल ट्राँसलेशन के माध्यम से विभिन्न भाषाओं का अनुवाद किया जा सकता है । आज हमारे पास लिपियों को बदलने का सॉफ्ट्वेयर गिरगिट उपलब्ध है। भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद करने हेतु अनुसारक नाम का सॉफ्टवेयर मौजूद है। हिंदी ऑप्टिकल कैरेक्टर के माध्यम से ओसीआर इंपुट करके ओसीआर आउटपुट में 15—16 वर्ष के पहले की सामाग्री को भी परिवर्तित किया जा सकता है। सीडैक के श्रुतलेखन सॉफ्टवेयर से भाषण—स्पीच से पाठ रूप में पहुँचा जा सकता है। गूगल के टूलों में वाचक, प्रवाचक, गूगल टेक्स्ट—टू—स्पीच के जरिये पाठ से भाषण की सुविधा उपलब्ध है व गूगल के वॉइस टाइपिंग के जरिये स्पीच को टेक्स्ट में बदलने की सुविधा उपलब्ध है। गूगल वॉइस टाइपिंग में हम गूगल डॉक्स के द्वारा अपनी आवाज के माध्यम टाइपिंग करने का आनंद उठा सकते हैं ।

## हिन्दी नायाब है.... (संकलित)

**सार्थक कुशवाहा, कक्षा–6, केन्द्रीय विद्यालय, करनाल**

छू लो तो चरण
अड़ा दो तो टाँग
धँस जाए तो पैर
आगे बढ़ाना हो तो कदम
राह में चिह्न छोड़े तो पद

प्रभु के हों तो पाद
पिता की हो तो लात
गधे की पड़े तो दुलत्ती
घुंघरू बाँध दो तो पग
खाने के लिए टंगड़ी

खेलने के लिए लंगड़ी
अंग्रेजी में तो केवल एक ही शब्द है – 'लेग'!

लघुकथा

## दायित्व

प्रभजीत सिंह बहल
सहायक, लेखा एवं संवितरण अनुभाग
भा.कृ.अनु.प.–रा.डे.अनु.संस्थान(एनडीआरआई), करनाल

बीते कुछ दिन पहले मैं और मेरी पत्नी मंदिर गये थे। लौटते वक्त हम गन्ने का रस पीने के लिये रूके। हम कुर्सियों पर बैठे तो मेरी नजर पास में ही पड़ी खाली पॉलिथीन व चिप्स के रैपर पर पड़ी। मैंने सोचा कि इस कचरे को उठाकर डस्टबीन में डाल दूं। मैं उठने ही वाला था कि दुकान वाले भैया ने उसे उठाकर डस्टबीन में डाल दिया।

मैं सोचने लगा कि यह तो उन्होंने अच्छा किया, लेकिन अब यह बिना हाथ धोये इन्ही हाथों से हमारे लिए गन्ने का रस बनायेंगे। लेकिन इसके विपरीत उन्होंने एक और जाकर हैंडवॉश से हाथ साफ किये और फिर हमें गन्ने का रस बनाकर दिया।

यह देखकर मुझे अच्छा लगा। मैंने पैसे देते वक्त इस बात के लिए उनकी तारीफ भी की। इस पर वो बोले कि यह तो हमारी नैतिक जिम्मेदारी और फर्ज है। अगर हर व्यक्ति की यही सोच हो जाये तो पूरा भारत स्वच्छता में नंबर वन बन सकता है।

## आप भी सफल हो सकते हैं (लेख)

**राजीव कुमार, उच्च श्रेणी सहायक**
**भारतीय जीवन बीमा निगम, मण्डल कार्यालय,करनाल**

प्रतिस्पर्द्धा के इस युग में आज का विद्यार्थी वर्ग अपेक्षाओं, आशाओं, निराशाओं की भंवर में कुछ इस प्रकार उलझ गया है कि लाख प्रयास करने पर भी स्वयं को बाहर लाने में असमर्थ है। क्या एक शिक्षक या अभिभावक होने के नाते हमारा यह कर्तव्य नहीं कि हम इस भंवर से बाहर आने के लिए सहायता का हाथ उनकी ओर बढ़ाएँ। आज हर माता–पिता अपनी सन्तान को इस प्रतिस्पर्द्धा में अग्रणी देखना चाहते हैं परन्तु वे भूल जाते हैं कि प्रत्येक बालक प्रथम कैसे हो सकता है? हम सभी जानते हैं कि हर बालक की बौद्धिक क्षमता समान नहीं होती फिर उनसे समान अग्रणी होने की अपेक्षा क्यों? हमारी यही अपेक्षाएँ जहाँ एक ओर मेधावी छात्रों को निरन्तर आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित करती है वही सामान्य एवं सामान्य से निम्न स्तर के छात्रों को निरन्तर निराशाओं एवं कुण्ठाओं के अंधकार में धकेल देती हैं। वे माता–पिता का सामना करने से भागने लगते हैं परिणामस्वरूप अपने निकटतम माता–पिता से उनकी दूरी धीरे–धीरे बढ़ने लगती है और वे उनसे दूर होते–होते जीवन की राह में भटक जाते हैं।

आवश्यकता है, इन सामान्य अथवा निम्न स्तर की बौद्धिक क्षमता वाले छात्रों को उचित मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन देने की, जिससे वे भी सबके साथ कदम से कदम मिला कर चल सकें। अपनी निराशाओं और कुण्ठाओं से उबर सकें। अपने माता–पिता एवं शिक्षकों को अपना शत्रु नहीं मित्र समझ सकें और इसके लिए सर्वप्रथम हमें उनकी बौद्धिक शारीरिक एवं सामाजिक क्षमता को परखना होगा तथा उनसे उनकी क्षमताओं के अनुसार ही अपनी अपेक्षाओं को सीमित करना होगा, जिससे हम उन्हें उनकी निराशाओं से उबार कर उन्हें अपने लक्ष्य हेतु निरन्तर प्रयास करने के लिए प्रेरित कर सकें। सिर्फ पढ़ाई ही नहीं अन्य विभिन्न क्षेत्रों में भी बच्चों की क्षमताओं को पहचानकर उन्हें प्रोत्साहन देना जरूरी हैं।

आज हमें अपनी सोच बदलने की आवश्यकता है। आज भी हममें से अधिकांश की सोच प्रशासनिक अधिकारी, इंजीनियर, डॉक्टर, या मैनेजर तक ही सीमित है, जहाँ तक पहुँचना हर एक के लिए संभव नहीं है। आज कम्प्यूटर एवं सूचना जैसी तकनीकी क्षेत्र ने छात्रों के लिए कैरियर के अनेक द्वारा खोल दिये हैं, आवश्यकता है–जागरूकता सतर्कता एवं सतत् परिश्रम की। ये ऐसे क्षेत्र हैं, जहाँ सामान्य बौद्धिक क्षमता रखने वाले छात्र भी सफलता के नये आयाम स्थापित कर सकते हैं।

# हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा देय पुरस्कार/शील्ड

### 1. राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना

| क्र.सं. | श्रेणी | विवरण |
|---|---|---|
| क) | सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम | 'क' क्षेत्र में स्थित कार्यालय<br>'ख' क्षेत्र में स्थित कार्यालय<br>'ग' क्षेत्र में स्थित कार्यालय |
| ख) | नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति | 'क', 'ख', 'ग' क्षेत्रों में स्थित एक–एक नरकास को |
| ग) | हिन्दी गृह पत्रिका | 'क', 'ख', 'ग' क्षेत्रों में प्रथम और द्वितीय पुरस्कार |

### 2. वैयक्तिक स्तर पर भारत सरकार द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कारों से संबंधित विवरण

| क्र.सं. | राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की योजना | पुरस्कार | पुरस्कार राशि |
|---|---|---|---|
| क) | हिन्दी में ज्ञान–विज्ञान मैलिक पुस्तक लेखन के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार (अर्थात् तकनीकी/विज्ञान की किसी विधा या समसामयिक विषय पर मौलिक पुस्तक लेखन) | प्रथम<br>द्वितीय<br>तृतीय<br>प्रोत्साहन | 2,00,000<br>1,25,000<br>75,000<br>10,000 |
| ख) | हिन्दी में मौलिक पुस्तक लेखन के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार | प्रथम<br>द्वितीय<br>तृतीय<br>प्रोत्साहन | 1,00,000<br>75,000<br>60,000<br>30,000 |
| ग) | पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेख के लिए हिन्दी भाषी | प्रथम<br>द्वितीय<br>तृतीय | 20,000<br>18,000<br>15,000 |
| घ) | हिन्दीतर भाषी | प्रथम<br>द्वितीय<br>तृतीय | 25,000<br>22,000<br>20,000 |

## संदेश

डिम्पल शर्मा, पी.जी.टी.हिन्दी,
जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल

बेफ्रिक हो क्योंकर मौन हो।
उठो कि देश बुलाता है,
कुछ करने का है वक्त अभी,
ये वक्त भी बीता जाता है,
तुम उठो आज ये प्रण कर लो,
नवयुग जब सृष्टि बनाओगे
जो काम न कोई ऐसा कर सका,
कुछ ऐसा तुम कर जाओगे।
ज्ञान, शक्ति और कौशल में,
सामर्थ्य मिलाकर के देखो।
दूरदर्शिता के मिश्रण में,
हौंसला मिलाकर के देखो।
था विश्व गुरू यह देश मेरा,
फिर इसको गुरू बनाना है।
यह देश चले सबसे आगे,
हर देश को पथ दिखाना है।
कहीं चूक हो गई, अगर
आयाली जग में बिखरे हैं।
रखना तुम कदम संभल संभल कर,
बैरी से ढ़ेरों खतरे हैं।
जो सोच लिया, कर जाओगे,
जो ठान लिया, पा जाओगे।
घनघोर अंधेरा फैल रहा,
आशा का दीप जलाओगे।
संसार की सूरत कैसी हो,
तय करना था ये पेंरागन,
किन्तु बदल दे सूरत जग की,
ठान ले अगर ये जन गण मन।

# कविताएँ

## सोच (कविता)

श्वेता, कक्षा–12
जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल

कसमें तो बहुत खाई हैं
वादे तो बहुत किए हैं
पर क्या उन्हें निभा पाए हैं
इस रूढ़िवादी सोच से क्या खुद को बचा पाए हैं।
मैंने दर्द में लोगों को तड़पते देखा है
जमाना बदल रहा है दोस्त
मैंने लोगों की निगाहों से
खुद को बिलखते देखा है
दुनिया की भाग–दौड़ में
एक–दूसरे को हराते हैं लोग
वक्त बदलता है
तो हालत बदल जाते हैं
इंसान वही रहता है पर अंदाज बदल जाते हैं।
लोग अपने सुख के लिए
दूसरों के घर जलाते हैं क्योंकि
हर इंसान में सब्र नहीं
सारी दुनिया की सोच है यही
लोग बाद में बदलेंगे
पहले खुद बदलना होगा,
खुद की सोच को बदलना होगा
तभी कुछ कर पाओगे
पहचान अपनी नयी बनाओगे।।

# ग्लोबल वार्मिंग से पृथ्वी को आ गया बुखार

नुक्कड़ नाटक

पंकज सिंह
केन्द्रीय विद्यालय, करनाल

निदेशक– भाई सुनो–सुनो
बोले जमूरा सुनो–सुनो
काम की बात सुनो।
जमूरा– धरती को है हुई बीमारी
खत्म हो रही दुनिया सारी
कहाँ रहोगे फिर तुम, बोलो
अब तो तुम अपना मुँह खोलो।
निदेशक सुनो–सुनो भाई सुनो–सुनो
बड़े काम की बात सुनो
जमूरा : आज जीवन दूभर हो रहा ऐसे
पल–पल हम मर रहे हों जैसे
माता : लाल मेरा है सबसे प्यारा और सीधा।
बता नीलू तूने आज स्कूल से क्या है सीखा?
नीलू : कहा टीचर ने हमारी।
हो बीमार रही धरती हमारी।।
माता : नहीं होता ऐसा मेरे लाल।
करता है तू अजब सवाल।।
नीलू : नहीं माँ। बढ़ रहा धरती का तापमान।
नहीं बचेगा आगे कोई भी जीने का सम्मान।।
माता : तू भोला है और थोड़ा नटखट।
चल खा ले खाना अब तू झटपट।।
निदेशक तभी आते दादा जी गाँव से हैं।
पिता प्रणाम कर बैठते छाँव में हैं।।
पिता : आपने पिता जी क्यों कष्ट किया है।
मैं लेने आ जाता, क्यों संदेशा नहीं दिया है।।
दादाजी: नहीं बेटा तुम रहते व्यस्त हो।
हो क्यों गये ऐसे सुस्त से हो।।
पिताजी: क्या कहूँ पिताजी क्या चल रहा है।
मौसम जो हर साल बदल रहा है।।
दादाजी : हाँ बेटा सब घोर कलयुग है।
लगता नहीं कोई महफूज है।।
निदेशक : सब मिलकर देखते टेलीविजन हैं।
**प्रेम लता माँ संग विज्ञानो, बता रही बात महत्वपूर्ण है।**
प्रेमलता : बढ़ रहा पेड़ कटने में धरती का तापमान है।
जिम्मेदार इसका ये इंसान है।।
नीलू : सही बताया प्रेमलता जी ने।
यही कहा था मेरे गुरू जी ने।।
दादाजी : वाह! नीलू तू बड़ा समझदार है।
और बता क्या–क्या समाचार है?
नीलू : प्रमाण करूं मेरे दादा जी।
धरती पर आन पड़ी है बड़ी विपदा जी।।
: पेड़ हमारे धरती की जान है।
काटते इनको हम इंसान हैं।।
: पेड़ों से ही मिलता जीवन है।
बिना पेड़ों के जीवन नामुकिन है।।
दादा जी : और कौन–कौन से कारण है इसके।
ये भी बता दे, ये सब लोग भी जिन्हें जान सकें।।
नीलू : डालते हम कूड़ा फैक्ट्रियों का नदियों में।
पेड़ों के बसे प्राण हैं, उन नदियों में।।
: इससे जहरीला होता पानी है।
पेड़ कटने, मौसम के बदलने की भी यही कहानी है।।
माता : वाह बेटा नीलू तू तो बड़ा होशियार है।
सब कुछ सीख तू तो समझदार है।
निदेशक : छोटा नीलू बताता मौसम बदलने का कारण है।
बिन मौसम बारिश इसका उदाहरण है।।
नीलू : आओ दोस्तों। आज प्रण लेवें हम।
एक पौधा लगाकर, उसे बड़ा करेंगे हम।।
पिताजी : हाँ बेटा नीलू। सही कहा तूने।
यही राह अपनानी है हमनें।
दादाजी : घोर कलयुग में जगी आस है।
नीलू जैसे बच्चे जब, हमारे पास हैं।।
माताजी : सही कहा आपने पिताजी सबसे।
यही राह हमें अपनानी है अब से।।
नीलू : जो कहते हैं हमको हमारे टीचर।
माने सदा उसको, तभी है हमारा फ्यूचर।।
जमूरा : देखा दुनिया वालों तुम सबने उसको।
दिखा गया राह हम सबको।।
निदेशक : सुनो–सुनो भाई सुनो–सुनो
एक पते की बात सुनो।
निदेशक/जमूराः सुनो–सुनो भाई सुनो–सुनो (2) पूरी लाईन
एक पते की बात सुनो–4
सुनो सुनो भाई सुनो सुनो
सुनो सुनो भाई सुनो सुनो
सुनो सुनो भाई सुनो सुनो
सुनो सुनो भाई सुनो सुनो

**(जय हिन्द)**

# कविताएँ

## एक चाह

नरेश कुमार वर्मा, प्रधान वैज्ञानिक
अध्यक्ष, पशु आनुवंशिकी विभाग एवं
प्रभारी, पी. एम. ई.सेल
राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल
ईमेल : nkverma.497@gmail.com

कभी आता है अपनी हंसी पर भी गुस्सा,
कभी जग को हँसाने को जी चाहता है।
छुपा लेता हूँ कभी गमों को किसी कोने में,
फिर हंसी से सब बयाँ करने को जी चाहता है।

कभी आते नहीं आंसू रोने पर भी,
कभी हंसने पर भी सैलाब सा चला आता है।
देख कर दीवानगी इस दुनिया की,
अपने आप पर ही मुस्कराने को जी चाहता है।

कभी पड़ता है कम आसमान भी उड़ने के लिए,
कभी आशियाने में ही पंख फैलाने को जी चाहता है।
दिल करता है कर लूँ आसमां अपनी मुट्ठी में,
आसमां और भी है जहाँ से आगे
ये सोच दिल ठहर सा जाता है ।

लगती नहीं बोझ, कभी हाथ पावों में बेड़ियाँ भी,
कभी प्यार की इक डोर से बंध जाने को जी चाहता है।
आ ही जाता है तब जुबान पर नाम खुदा का,
सजदे में जब किसी के उसे मनाने को जी चाहता है।

कभी होता नहीं भरोसा अपने पर भी ,
कभी दूसरों पर मर मिटने को जी चाहता है।
हम जो चाहते हैं सब मिलता नहीं इस जहाँ में,
बस इसी पर दुनिया छोड़ जाने को जी चाहता है।

ऐ खुदा, पूरा करने अपनी चाह को
लौटकर फिर इसी दुनिया में आने को जी चाहता है।
आउँ तो, मांगे ये नर इश (नरेश) से अपने
प्यार से, प्यार पर, प्यार की खातिर,
मिट जाने को जी चाहता है।

## स्वच्छ-भारत

विजयपाल सहरावत
पीआरटी
केन्द्रीय विद्यालय,
करनाल

स्वच्छ–भारत यह अभियान,
स्वच्छता ही अपनी पहचान।
गाँव, शहर, मंदिर, गुरूद्वारे,
क्या कूड़े के ढ़ेर हैं सारे।
आज मानव कुछ बदल गया है,
अपने सारे फर्ज भूल गया है।
गन्दी करता सड़क और दीवार,
बदल गया बच्चों का व्यवहार।
बच्चा–बच्चा भारत की शान,
स्वच्छ–भारत यह अभियान,
स्वच्छता ही अपनी पहचान।
सहज भाव से कूड़ा फैलाता,
रेल–बस में या पैदल जाता,
खाना–पीना सब हो जाता,
लेकिन कूड़ा वहीं गिराता।
झूठी करता, अपनी शान,
प्रयोग करें सब कूड़ादान।
स्वच्छ–भारत यह अभियान,
स्वच्छता ही अपनी पहचान।
प्रकृति ने सबको स्वच्छ बनाया,
पर्वत, नदी, वन–पेड़ लगाया।
निज–स्वार्थ की कैसी माया,
लूट लिया सब जो भी पाया।
निर्मल रहा न गंगा जल,
क्या सोचा कैसा होगा कल?
स्वच्छता में ही हैं भगवान,
स्वच्छ भारत यह अभियान,
स्वच्छता ही अपनी पहचान।।

# मेरी दो कविताएँ

कविता

डा. रविन्द्र कुमार
भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल

## मन्दिरों में रहा हूँ मैं

मस्जिदों में रहा हूँ मैं।
मन्दिरों में रहा हूँ मैं।

पूजते रहे हो तुम जिन्हें देवता की तरह,
उन्हीं पत्थरों में रहा हूँ मैं।

नहीं भाता है मुझे मजहबी दंगल,
हमेशा ही दिल ए दिलबरों में रहा हूँ मैं।

ना खींच पायी है मुझे महलों की रौनक,
सुदामा के घरौंदो–विदुरों के घरों में रहा हूँ मैं।

मस्जिदों में रहा हूँ मैं।
मन्दिरों में रहा हूँ मैं।

ना मुझे भाएं ढोंगी मुल्ला और पण्डित,
मोहब्बत के रहबरों में रहा हूँ मैं।

कभी रूठा हूँ मैं रूकमणि से,
तो कभी मीरा के अधरों में रहा हूँ मैं।

लोग कहते हैं नारायण मुझको,
मगर हमेशा नरों में रहा हूँ मैं।

मस्जिदों में रहा हूँ मैं।
मन्दिरों में रहा हूँ मैं।

## स्वच्छता का संकल्प

तू कर्तव्य की पुकार सुन,
तू अपने ह्रदय की ललकार सुन।
ना आस–पड़ोस को मलिन कर,
जीने की राह न कठिन कर।
कर तो तू प्रयास जरा,
हो तुझे आभास जरा।
स्वच्छता में कुछ खास है,
इसमें देवों का वास है।
संकुचित है क्यूं मन तेरा,
धरती तेरी ये, है गगन तेरा।
गुण स्वच्छता का गांधीजी ने भी गाया है,
स्वच्छता को आजादी से भी ऊपर बताया है।
तू गांधी की आत्मा की चीत्कार सुन,
भाई मेरी तू मनुहार सुन।
गन्दगी एक अभिशाप है,
इसको सहना भारी पाप है।
सहना इसको नहीं तुझे,
रहना इसके संग नहीं तुझे।
ले जरा एक संकल्प तू,
स्वच्छता को बना एक प्रकल्प तू।
स्वच्छता अब आदतों मे तेरी शुमार होगी,
गन्दगी का प्रत्युत्तर स्वच्छता ही हर बार होगी।
स्वच्छता हो हर घर आंगन, गली कूचे मोहल्ले में,
प्रयासरत स्वच्छता योद्धाओं की कतार होगी।
स्वच्छ–स्वस्थ बन खुशहाल होगा भारत,
गन्दगी भारत भूमि से बाहर होगी।
स्वच्छता है हम सबकी जिम्मेदारी,
इसमें हो हम सबकी भागीदारी।

# स्वस्थ लोकतंत्र के चार प्रमुख स्तम्भ

आलेख

डा. चित्रनायक सिन्हा[1] एवं राकेश कुमार[2]
[1]वरिष्ठ वैज्ञानिक, [2]सहायक निदेशक,
दोनों भाकृअनुप-राडेअनुसं, करनाल

भारत में स्वस्थ व सफल लोकतंत्र के संचालन हेतु इनके चार प्रमुख स्तम्भों यथा, कार्यपालिका, व्यवस्थापिका, न्यायपालिका व मीडिया को अपनी जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी से निभानी होगी। भारतीय लोकतंत्र का स्थान विश्व में सबसे ऊपर है और इतने बड़े लोकतंत्र की सफलता इनके चारों प्रमुख स्तम्भों के अच्छे व ईमानदार कार्य–प्रणाली पर निर्भर है।

लोकतंत्र के पहले स्तम्भ की भूमिका सरकार निभाती है जो कार्यपालिका (एक्जीक्यूटिव) होती है, व देश के सर्वोच्च पद यथा राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, मंत्रीगण, आई.ए.एस., आई.पी.एस. व अन्य अधिकारी पदों पर आसीन होकर पूरे देश में हरेक वर्ग व क्षेत्र के विकास व विस्तार के लिए कार्य करती हैं। देश की सुरक्षा, शिक्षा व विज्ञान, स्वास्थ्य सेवाएं आदि योजनाओं का विकास, विस्तार व निष्पादन भी देश की कार्यपालिका द्वारा ही होता है। भारत जैसे विशाल देश के सम्पूर्ण विकास व हरेक क्षेत्र में अग्रसर होने में लोकतंत्र के प्रथम स्तम्भ–कार्यपालिका बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही है।

देश के लोकतंत्र के दूसरे स्तम्भ के रूप में है, व्यवस्थापिका (लेजिस्लेटिव), इनके अंतर्गत देश की संसद–लोकसभा, राज्य सभा, राज्य–स्तर पर विधान सभा, एम.पी., एम.एल.ए., विधान परिषद, आदि आते हैं, जिनका चुनाव देश की जनता द्वारा हर पाँच वर्षों में चुनाव द्वारा होता है। जनता द्वारा चुने हुए ये प्रतिनिधि अपने क्षेत्रों के लोगों की सुरक्षा, विकास व भलाई का कार्य करते हैं, जिससे जनता को सभी मूलभूत सुविधाएं प्राप्त होती हैं। सड़क, अस्पताल, विद्यालय, महाविद्यालय, बिजली, पानी आदि जैसी मूलभूत सुविधाओं की जिम्मेदारी इस–दूसरे स्तम्भ व्यवस्थापिका (लेजिस्लेटिव) की होती है।

देश के लोकतंत्र का तीसरा महत्वपूर्ण स्तम्भ होता है–न्यायपालिका (ज्यूडिशियरी), इसके अंतर्गत देश का उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालय, जिला न्यायालय, कचहरी, मुख्य–न्यायाधीश, वकील, मजिस्ट्रेट आदि आते हैं। इनकी जिम्मेदारी देश की जनता में सुरक्षा की भावना, न्याय की उम्मीद व सच्चाई की जीत से जुड़ी है। देश का गरीब से गरीब व्यक्ति, व कमजोर से कमजोर आदमी भी अगर यह समझता व मानता है कि अगर उसे कहीं न्याय नहीं मिलेगा, तो न्यायालय है। न्यायपालिका उसे बिना किसी भेद–भाव के न्याय जरूर देगी, जब तक एक गरीब व कमजोर वर्ग का यह विश्वास देश के इस तीसरे स्तम्भ पर कायम है तभी तक देश का लोकतंत्र सफल व सुदृढ़ है। जिस दिन जनता का विश्वास न्यायपालिका व्यवस्था पर उठने लगेगा, तो समझ लें, देश का लोकतंत्र खतरे में है।

देश में लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ की भूमिका में देश का संचार माध्यम यथा, टीवी, रेडियो, समाचार पत्र–पत्रिकाएं व आधुनिक माध्यम, इंटरनेट सम्मिलित है। कहा गया है 'विचार' की गति तीव्र होती है–विचार क्रान्ति लाते हैं। तख्त पलट जाते हैं, सरकारें गिर जाती हैं। इन क्रान्तिकारी विचारों के संचारण की जिम्मेदारी संचार माध्यम की होती है। इतिहास गवाह है कि किस प्रकार आजादी की लड़ाई के दौरान क्रान्तिकारी लेख व विचार देश के एक कोने से उठे और संचार माध्यम द्वारा पूरे देश तक फैल गए। इसमें देश के प्राचीन लेखकों व क्रान्तिकारियों के देशप्रेम से ओत–प्रोत संभाषण, विचार आदि सम्मिलित हैं जिनके द्वारा हमारा देश अंग्रेजों के चंगुल से आजाद हो पाया।

उदाहरणार्थ, नवाबराय (प्रेमचंद) की लिखी पुस्तक 'सोजे वतन' जब 1908 में प्रकाशित हुई तो इसने देश में आजादी का संदेश फैलाया। तत्पश्चात् अंग्रेजी सरकार ने नवाबराय (प्रेमचंद) की लिखी इस रचना से डरकर सन् 1918 में सोजे वतन की प्रतियाँ जलवाई, ताकि प्रेमचंद जी का देशभक्ति से भरा संदेश संचार माध्यम द्वारा जन–जन तक न पहुँच सके।

रविन्द्रनाथ जी की देशभक्ति से ओत–प्रोत कविताओं ने पूरे देश में आजादी के लिए संघर्ष को बढ़ावा दिया और सारे देश भक्तों को एकजुट होकर अंग्रेजों से लड़ने हेतु प्रेरित किया। जब देश अंग्रेजों का गुलाम था तो उस वक्त रविन्द्रनाथ जी की ये दो पंक्तियां, जिसमें सम्पूर्ण भारत सम्मिलित है–''पंजाब, सिंध गुजरात, मराठा, द्रविड़ उत्कल बंग; विन्ध्य हिमाचल यमुना, गंगा; उच्छल जलधि तंरगा'' ने संचार माध्यम द्वारा ही पूरे देश में आजादी के संदेश को जन–जन तक संचारित किया।

देश में पहला हिन्दी समाचार पत्र दिनांक 30 मई 1826 के दिन कलकता में प्रकाशित हुआ। जिसका नाम 'उदंत मार्तण्ड', अर्थात्, 'उगता सूर्य' था। देश के प्राचीनतम पत्र के बाद आधुनिकतम संचार माध्यम 'इंटरनेट' की शुरूआत भारत में दिनांक 15 अगस्त, 1995 के दिन हुई। वर्तमान में लगभग 46 करोड़ भारतीय इंटरनेट से जुड़े हैं व इनमें उपलब्ध विविध प्रकार की जानकारियों से अवगत हो रहे हैं। इंटरनेट में उपलब्ध नई–नई सूचनाएँ, सरकारी योजनाएँ, नए नियम व कानूनों की जानकारी, शिक्षा, स्वास्थ्य, मौसम व अनेक जानकारियाँ तुरन्त ही सभी को उपलब्ध हो जाती हैं। देश में यह संचार का काफी लोकप्रिय माध्यम बन चुका है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार देश के सरकारी रिकार्ड (आरएनआई) में एक लाख पाँच हजार चार सौ तैंतालीस समाचार–पत्र व पत्रिकाएं रजिस्टर्ड हैं। देश

में ब्रॉडकास्टिंग सेवा सन् 1927 में एवं ऑल इंडिया रेडियो सन् 1965 में मुम्बई व कलकत्ता में प्रारंभ हुई। बीसवीं सदी में रेडियो देश में संचार का प्रमुख साधन रहा। देश की तात्कालिक परिस्थितियों के अनुसार कई बार समाचारों को पूर्णतः प्रतिबंधित किया जाता है, जिसे 'ब्लैंकेट–बैन' की संज्ञा दी गई है। समाज में होने वाले हर गलत–सही को मीडिया तुरन्त ही पूरी दुनिया के समक्ष प्रस्तुत कर देता है। टी.वी. के चैनल हर महत्वपूर्ण जानकारी लाइव दिखाते हैं व कुछ भी छुपाना अब सहज नहीं रहा। अभी देश में लगभग 892 टीवी चैनल उपलब्ध हैं जिनसे कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रह पा रहा है।

समाज में जिस प्रकार न्यायपालिका पर भरोसा है कि अगर कहीं न्याय नहीं मिलेगा, तो कोर्ट है–वहाँ जरूर सच जीतेगा, उसी प्रकार गलत करने वालों के मन में भी यह डर जरूर रहना चाहिए कि मीडिया हमें देख रहा है। मीडिया को इतना जागरूक होना चाहिए कि उससे कोई भी चीज छुपी नहीं रह सके।

जिस प्रकार चार धामों की यात्रा के बगैर तीर्थ सम्पूर्ण नहीं होता, चार–पायों के बगैर चारपाई स्थिर नहीं हो सकती, चार दिशाएँ होती हैं, उसी प्रकार स्वस्थ, आजाद व विकसित लोकतंत्र हेतु देश के चारों स्तम्भों, कार्यपालिका, व्यवस्थापिका, न्यायपालिका व मीडिया को मजबूत होना होगा। देश के चारों स्तम्भ जितनी निष्पक्षता एवं पारदर्शिता तरीकों व ईमानदारी से अपना कार्य निष्पादित करेंगे, देश उतनी ही तेजी से विकास की ओर अग्रसर होगा।

लघुकथा

# त्याग

**हुकम चन्द, अभि.सहायक, दूरदर्शन केन्द्र, करनाल**

दक्षवीर अभी चौथी कक्षा में पढ़ाई कर रहा था। वह एक अच्छे और महंगे विद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर रहा था। आज दक्षवीर की छुट्टी का दिन था। उसके पास रिमोट से चलने वाली लाल रंग की एक महंगी कार थी। वैसे तो उसके पास और भी बहुत से खिलौने थे, लेकिन आज उसने अपनी प्रिय कार से खेलने का मन बनाया। वो कार को लेकर अपने घर के सामने वाली सड़क पर आ गया और खुशी–खुशी मन लगाकर उल्लास के साथ, रिमोर्ट से कार को आगे पीछे घुमाने लगा।

बरसात का मौसम था और जगह जगह पर सड़क पर पानी और कीचड़ पड़ा हुआ था। खेलते–खेलते दक्षवीर की प्रिय कार कीचड़ में फंस गई और गन्दी हो गई। दक्ष के घर के सामने एक कच्ची बस्ती थी उसमें नंदू और कालू नाम के दो बच्चे रहते थे। उनके माता–पिता तो काम पर गए हुए थे लेकिन वो दोनों घर पर अकेले थे।

जब उन्होंने देखा कि दक्ष की कार कीचड़ से गंदी हो गई तो अपने घर से एक बाल्टी में पानी, पोछा, मग आदि लेकर आ गए और दक्ष की कार को अपने नन्हें–नन्हें कोमल हाथों से धोने लग गए। दक्ष ने उन्हें बहुत मना भी किया लेकिन वो नहीं माने और बहुत मन से कार्य करने लगे। कुछ ही देर में नंदू और उसके छोटे भाई कालू ने दक्ष की कार को जबरदस्त धुलाई करके उसे चमका दिया। दो छोटे बच्चों के सहयोग से, दक्ष की कार पहले जैसी हो गई थी। अब वो बहुत खुश था।

दक्ष फिर कार से खेलने लगा। उसे नंदू और कालू को भी, अपने साथ खेल में मिला लिया। दक्ष ने उन दोनो को भी रिमोट से कार चलाना सिखा दिया। फिर जब वो खेलकर थक गए तो दक्ष अपने घर जाने लगा। दक्ष ने नंदू से पूछा, ''आपके पास कौन सी कार है।'' नंदू ने कहा'' हमारे माता–पिता तो गरीब हैं अतः हमारे पास तो कोई भी कार नहीं है। दक्ष ने एक क्षण के लिए सोचा और फिर उसने अपनी प्रिय कार नंदू और कालू को दे दी। नंदू और कालू ने बहुत मना भी किया लेकिन दक्ष नहीं माना। दक्ष ने देखा कि कार पाकर दोनों बच्चे बहुत खुश हुए। उनके चेहरों से लग रहा था कि उनकी प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं है। उनको खुश देख कर दक्ष के चेहरे पर भी अति संतोष और खुशी के भाव छा गए और वो मन ही मन फूला नहीं समा रहा था। दक्ष ने, दिल से महसूस किया कि असली खुशी तो बाँटने में है, प्राप्त करने में नहीं। आज अपनी प्रिय कार का त्याग करके, दक्ष असली खुशी अनुभव कर रहा था।

दक्ष जब घर आया तो ये सारी बातें उसने अपनी माँ को बताई। उसकी माँ रोशनी ने, दक्ष को गले से लगा लिया और कहा–बेटा दक्ष यही तो हमारी संस्कृति है। हमारे ऋषि–मुनि भी यही कहते हैं। हमारे पूर्वजों ने भी इसे अपनाया, लेकिन जीवन की आपा–धापी में, हम यह सब भूल गए थे। आज सचमुच तुमने भी त्याग का पाठ पढ़ा दिया। जुग–जुग जियो मेरे लाल। सच्ची सेवा जरूरतमंदों की मदद करने में है। बाँटने में है, उसके संचय में नहीं। चाहे वह वस्तु हो या ज्ञान।

**नगरस्तरीय प्रतियोगिता की सराहनीय प्रविष्टि के रूप में प्रकाशित**

## आओ एक वृक्ष लगाएं– पुराने दिनों में लौट जाएँ

कविता

दीपक कुमार, राजभाषा अधिकारी,
यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल

दुनिया जब से आई है
वह सजी–सजाई है।
हरी–भरी थी प्रकृति
हरियाली की विशाल आकृति ।
शीतल हवाओं का झोंका लिए
निर्मल ठंडे जल लिए,
झर–झर बहते थे झरने
लगते पर्यावरण के गहने ।
ऊंचे पेड़ आसमानों पे जाकर
अपना सर टकराते,
धरती की प्यास बुझाने
कभी बादल लाते, कभी वर्षा लाते ।
हम सब आगे बढ़े,
हम सबने उन्नति की
हर दिन एक नई प्रगति की ।
हम सबने विकास किया
एक जमीन और आकाश किया ।
पर वातावरण में कहर घोला
समीर और नीर में जहर घोला ।
पेड़ों को काट, जंगलों को छांट
हमने इनका बहिष्कार किया,
सुखी धरती, बंजर भूमि
जाने क्यों स्वीकार किया ।
जहरीली हवाओं को निमंत्रण दे
सूखे रेत अंगीकार किया ।
पर, अब नहीं इस तरह
हरियाली को पतझड़ बनने देंगे,
इतनी निर्ममता से
पेड़ों को न कटने देंगे ।
धरती को बचाने को
धरती को सजाने को
हरी–भरी रंग–बिरंगी
जीवन खुशहाल बनाने को
आओ बचाएं हर वृक्ष
हम सब संकल्प लें
आओ लगाएं एक वृक्ष ।

## मुझे ऐसा बना दो मेरे पिता (परमात्मा)

कविता

रमीन्द्र कुमार, निपुण सहायक कर्मचारी,
सूक्ष्म जीवाणु प्रभाग, भाकृअनुप–राडेअनुसं करनाल

जीवन में लगे ठोकर न कहीं।
जाने अनजाने भी मुझसे,
नुकसान किसी का हो न कहीं ।।
उपकार सदा करता जाऊँ मैं,
दुनिया अपकार भले ही मेरा करे।
बदनामी न हो जग में मेरी,
कोई इनाम भले ही न दे मुझे।
जो तेरा बनकर रहता है,
कांटों में फूल सा खिलता है।
तू ही बस मेरा ऐसा सहारा है,
जो दुःख में भी साथ मेरा त्यजता नहीं।
दुनिया मुझे प्यार करे या न करे,
खोऊँ तेरा प्यार न कभी कहीं।
मन हो मधुपूर्ण कलश मेरा,
आँखों में ज्योति छलकती हो।
प्रभु से मधु ऐसा पीने को,
जागता ही रहूँ सोऊँ न कभी।
मैं क्या हूँ, राह मेरी क्या है,
यह सत्य सही मैं समझ सकूँ।
इस राह पर चलते–चलते कभी,
मेरे पाँव थकें न और रूकें न कभी।।

# मुसद्दी का लेनदेन

लघुकथा

सारिका, बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल

मुसद्दीलाल के पिताजी शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत थे। बचपन से घर शिक्षा को ही महत्व दिया जाए, ऐसा माहौल था। घर में बहुत ही शांतिपूर्ण माहौल था व किताबों की खूशबू की महक से सरोबार होने से स्वाभाविक रूप से मुसद्दी पढ़ाई में काफी अग्रसर था। बचपन से ही उनमें बड़ों का आदर, शिष्टाचार, जैसे गुण बस गए थे। दसवीं एवं बारहवीं कक्षा में उन्होंने अस्सी प्रतिशत के लगभग अंक प्राप्त किए। और कड़ी मेहनत कर आई.आई.टी में प्रवेश भी पा लिया। बचपन से ही मुसद्दी ने अपने पिताजी को कड़ी मेहनत करते देखा था। लेकिन कभी अपने पिताजी को पैसा कमाने की होड़ में शामिल होते नहीं देखा। पिताजी जितना कमाते थे, उतने में ही घर का काम चलता था। मुसद्दी ने तब ही सोच लिया था कि वह बहुत मेहनत करेगा और घर वालों को सब खुशियाँ ला कर देगा। एक बड़ा मकान खरीदेगा, पिताजी के लिए गाड़ी, माँ के लिए गहने। बड़े–बड़े सपने लिए एक सुशील बालक मुसद्दीलाल ने अपनी इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की और एक मल्टी नेशनल कंपनी में काम करने लगा। माहौल बदला, सिगरेट, शराब का कभी–कभी सेवन, एक लत में बदल गया। माँ पिताजी गाँव में ही रहते थे और मुसद्दी ने एक अच्छे पद की सरकारी नौकरी की परीक्षा पास की और अपनी नई नौकरी ज्वाइन कर ली। लेकिन बुरी आदतों का साया छूटे से ना छूट पा रहा था। साथ ही ऊँचे मुकाम पर पहुँचने की लालसा भी दिल में थी। समय बीतता गया और मुसद्दीलाल ने अपने सरकारी पद का दुरूपयोग करना शुरू कर दिया। चूंकि मुसद्दी प्राइवेट संस्था में काम कर चुका था और वहाँ की अच्छाई बुराई से वाकिफ था। टेंडर पास करने के लिए वह पैसे लेने लगा। उसने गाँव में एक बहुत बड़ा मकान बनाया और एसे घर को सुख सुविधाओं से लैस कर दिया। और उसी तरह शहर में भी काफी संपत्ति एकत्रित कर ली। बड़ी–बड़ी कंपनियों के सेठों से उसकी दोस्ती हो गई जिनका काम वह चुटकियों में कराने लगा चाहे गलत हो या सही। पैसों की भूख आदमी की सही गलत सोचने की ताकत छीन लेती है। कोलकाता, जहाँ वह रहता था, वहाँ एक बहुत बड़े पुल का निर्माण टेंडर निकला। टेंडर पास करने की पॉवर मुसद्दी के पास थी। उसने उस कंपनी को टेंडर दिया, जिसने सबसे ज्यादा रिश्वत ऑफर की। उसके ऑफिस के सदस्यों ने उसे काफी समझाया कि यह कंपनी बहुत ही घटिया स्तर का सामान उपयोग में लाती है। लेकिन वह नहीं माना। टेंडर उस कंपनी को दे दिया गया। कंपनी के मालिक की बेटी का रिश्ता मुसद्दी के पास आया और महीने भर में उसकी शादी हो गई। महीने बीते, साल से भी ऊपर हो गया, मुसद्दी के माता–पिता उस से मिलने कोलकाता आ रहे थे। मुसद्दी की कोई मीटिंग होने के कारण, उसकी बीवी उसके माता पिता को रेलवे स्टेशन लेने पहुँची। मुसद्दी की मीटिंग के दौरान ही टेलीविजन पर खबर आई कि वह पुल जिसका निर्माण हाल फिलहाल ही हुआ था, वह गिर गया और कई लोगों की जानें चली गई। मीटिंग पूरी कर घर पहुँचा तो पाया कि घर पर कोई नहीं है। पूछताछ करने पर पाया कि जिस पुल के नीचे कई लोग की जानें चली गई, उनमें से एक गाड़ी उसके खुद के परिवार की थी। जिस परिवार के लिए उसने गलत रास्ते अपनाए, वह आज उसके साथ नहीं रहा। पैरों तले जमीन खिसक गई। अपने स्वार्थ और लालच को वह अपने परिवार की खुशियों का नाम देता था। आज वही बहाना नहीं रहा। आगे जो कार्यालय की कार्यवाही एवं पुलिस निरीक्षण में जो होना था, वो तो हुआ ही।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि लालच, भ्रष्टाचार, गलत लोगों से दोस्ती, ये बुराइयाँ आपके जीवन को बर्बाद कर देती हैं। इनसे हमें हमेशा दूर रहना चाहिए। गलत संगत भी आपको गलत रास्ते पर ले जाने के लिए काफी है। रिश्वत बहुत बड़ा कुकर्म है। एक हाथ से अगर बहुत कुछ मिल रहा है तो बदले में दूसरे हाथों से बहुत कुछ छिन भी जाना है। अतः अपना काम ईमानदारी से करना चाहिए।

**नगरस्तरीय प्रतियोगिता की सराहनीय प्रविष्टि के रूप में प्रकाशित**

# शिक्षा को समर्पित नारे

सारिका, बैंक ऑफ बड़ौदा, करनाल

1. बाल हो या बाला, हर जगह हो शिक्षा का बोलबाला।
2. शिक्षा है सबका अधिकार, घर घर हो इसका प्रचार।
3. शिक्षित बच्चे, बनें कल के नागरिक सच्चे।
4. गर पढ़ोगी आज तुम बहना, होगा यही कल तुम्हारा गहना।
5. आज के शिक्षित बच्चे, कल के कर्णधार सच्चे।
6. जिस घर में होगा शिक्षा का प्रचार, वहीं होगा कामयाबी का संचार।

**नगरस्तरीय प्रतियोगिता की सराहनीय प्रविष्टि के रूप में प्रकाशित**

# सपनों का संसार "बाल मन्दिर"

लघुकथा

सुश्री चरनजीत
ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स, करनाल

शाम ढ़लने लगी, सूर्यदेव भी अपने लालिमा बिखेरता हुए पहाड़ी के पीछे जाने लगा, पक्षी भी चहचहाते हुए झुण्डों में वापिस अपनी मंजिलों की तरफ उड़ने लगे, प्रकृति भी शाम का आँचल ओढ़ आराम फरमाने लगी, हल्की–हल्की पवन सुगन्धि बिखेर तन–मन को शीतलता प्रदान कर रही थी। मन अशान्त सा था ऐसे में सोच रही थी और अपनी जिन्दगी के सुनहरे पन्ने पलटने लगी। वक्त गुजरता गया। घटना 12 वर्ष पहले की है। शाम होते ही बच्चे घर आ गये और बच्चों के पापा भी। बच्चों ने जिद् पकड़ ली कि आज बाहर किसी अच्छे रेस्टोरेंट में खाना खायेंगे। खूब शॉपिंग करेंगे। घर से कुछ ही दूरी पर स्थित नूरमहल के सामने गाड़ी खड़ी कर हम लोग अन्दर शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में चले गये। बच्चों ने मनपसन्द खाना खाया व कपड़े खरीदे। इसके पश्चात् हम लोग वापिस अपनी कालोनी में घर आ गये तभी मेरी नजर सामने वाले घर पर गयी, जहाँ कुछ बच्चे खेल रहे थे। एक बड़े घर का बच्चा अपनी टॉय कार के पास बैठा था और उसके पास दो बच्चे भी खड़े थे। उसमें से एक बच्चे ने अपने हाथ में पानी से भरी छोटी बाल्टी व छोटा सा तौलिया पकड़ा था व दूसरा छोटा बच्चा, उस बड़े घर के बच्चे की कार साफ कर रहा था। दोनों बच्चे दिखने में गरीब घर के लग रहे थे, जैसे किसी मजदूर या रिक्शा चालक के झोपड़ियों में रहने वाले बच्चे हों। उक्त दृश्य को देख मन खिन्न हो उठा, ओह, अभी से यह बच्चे बाल मजदूरी सरीखे कार्य में लगे हैं। वक्त इतना जालिम कैसे हो गया कि खेलने, खाने व स्कूल जाने की उम्र में यह बच्चे अभी से ही बाल–मजदूरी के काम में लग गये। कार का सपना देखने की उम्र में कार सफाई का काम करने लगे। उनकी दशा देखकर मन खिन्न हो गया। मन में एक ख्याल कौंध गया क्यों न ऐसे बच्चों के लिए कुछ अलग से किया जाए। ऐसा कुछ जिससे कोई भी बच्चा सुख–सुविधाओं से वंचित न रह जायें। सपने देखने की उम्र में उनके सपनों को पंख मिलें, ऐसे बच्चों के लिए कुछ ऐसा किया जाए कि वे पढ़ लिख कर जिन्दगी में अच्छा मुकाम हासिल करें। रात भर ऐसे ही ख्यालों व दुविधा में कट गयी। अन्तर्रात्मा से एक ही आवाज आती रही। कुछ तो अलग कर...... कुछ तो समाज में अपना योगदान कर......., ताकि जीवन सार्थक हो सके। जिन्दगी की हर खुशी पर हर बच्चे का अधिकार है!

सुबह की पहली किरण मेरे लिए एक नया सवेरा लेकर आयी। मैंने निश्चय कर लिया कि ऐसे बच्चों के लिए कुछ नया व अलग ही करना है। हमारी पुरखों की जमीन खाली पड़ी थी। मैंने अपने परिवार वालों को अपनी सोच व दृढ़ निश्चय से अवगत कराया, सभी ने मेरे विचारों को सराहा व अपना योगदान देने को तत्पर हो गये। हमने अपने कैनवस में रंग भरने शुरू किये व उस पुरखों की खाली पड़ी जमीन पर पाँच कमरों की बिल्डिंग का निर्माण करवाया, जिसका नाम रखा (बाल मन्दिर)। बाल मन्दिर.......... जहाँ गरीब बच्चों की पढ़ाई का इन्तजाम किया गया। नर्सरी व किन्डर गार्डन कक्षाऐं आरम्भ की गयीं। बच्चों को स्वस्थ रहना सिखाया, पढ़ना लिखना सिखाया गया। बच्चों से कोई फीस नहीं ली जाती व उन्हें मुफ्त खाना व कपड़े भी प्रदान किये जाते। बच्चों के सपनों के संसार को साकार रूप दिया जाता। धीरे–धीरे वक्त का पहिया चलता रहा 12 वर्ष बीत गए, शहर के अन्य जाने माने व अमीर लोगों ने भी हमारी इस मुहिम में हमारा साथ दिया। आज यह बच्चों की संस्था कक्षा–12 तक की पढ़ाई की सुविधा मुहिया कराने लगी है। शहर में बाल मन्दिर का अपना ही स्थान है।

लगता है जीवन का अर्थ सार्थक हो रहा है, मन को शान्ति मिलने लगी। प्रकृति भी हमारी इस मुहिम में शामिल हो मुस्करा उठी। मन्द मन्द शीतल बयार भी हमारा शुक्रिया कर रही है। लगता है सारी धरा भी हमारा धन्यवाद कर रही हो।

................................काश हर व्यक्ति के जीवन की सुबह एक नयी रोशनी, नई मुहिम, नया सवेरा लेकर आये, ताकि ऐसे बच्चों के सपनों के संसार का ''बाल मन्दिर'' हर शहर–शहर, हर गाँव–गाँव खुले ताकि कोई भी बच्चा खुशियों से महरूम न रहे और ऐसे बच्चों के सपने साकार हों। ........ वे कार साफ ना करें, कार के मालिक बनें, गरीब न रहें, गरीबी भूखमरी व बाल मजदूरी को खत्म करें।

यही दुआ है यही तमन्ना है कि हर बच्चे को अपने सपनों का संसार नसीब हो।

**नगरस्तरीय प्रतियोगिता की सराहनीय प्रविष्टि के रूप में प्रकाशित**

# दूरदर्शन पर एक सनसनीखेज समाचार

डा. चित्रनायक, वरिष्ठ वैज्ञानिक, राडेअनुसं, करनाल

मोहन एक दूरदर्शन चैनल में कार्यरत था। उसे नये–नये समाचारों की आवश्यकता होती थी, ताकि उसके चैनल को अधिक से अधिक लोग देखें व उनकी टी आर पी अधिकतम हो। मोहन की उनके अधिकारियों के साथ हमेशा अपने चैनल की टी आर पी बढ़ाने हेतु चर्चाएं होती थी। वे बताते थे कि वर्तमान में भारत में 1,05,443 कुल समाचार पत्र पत्रिकाएं पंजीकृत हैं व लगभग 800 से अधिक टी.वी. के चैनल उपलब्ध हैं। इन स्थितियों में अगर अपने चैनल को ऊपर लाना है तो हमें लोगों को आकर्षित करने वाले कार्यक्रम दिखाने होंगे। समाचारों को भी मिर्च–मसाला लगाकर परोसना होगा, ताकि लोग इन्हीं में लगे रहें। सभी मित्र हमेशा मनोरंजक व सनसनी आदि से जुड़े समाचार दिखाने की कोशिश करते व छोटी–मोटी घटनाओं को भी बड़ा व उत्तेजक बनाकर पेश करते। मोहन भी इसी दौड़ में शामिल हो गया, पर उसकी अंतर्रात्मा नहीं मानती थी।

मोहन के अन्य साथी किसी बड़ी हस्ती, फिल्मी सितारों, स्टारों आदि की खबरें दिखा–दिखाकर अपनी ड्यूटी पूरी कर ले रहे थे। मोहन अपने कैमरे व अपने ज्ञान का पूरा उपयोग करना चाह रहा था। पर उसे मौका नहीं मिल पर रहा था। एक रात मोहन अपने चैनल पर एक सामान्य सा कार्यक्रम करके घर लौट रहा था। कार्यक्रम सामान्य होने के कारण उसे अच्छा बनाने के चक्कर में काफी लेट हो चुका था।

देर रात को लौटते वक्त मोहन ने पाया कि सड़कें सुनसान हो चुकी हैं। थोड़ा समय लगा, पर वह अपने घर की ओर बढ़ता गया। थोड़ी ही दूर जाने पर उसने देखा कि एक कार रूकी व उससे निकलकर एक व्यक्ति भागने की कोशिश कर रहा है, तभी पीछे से निकलकर दूसरे व्यक्ति ने उसपर चाकू से वार किया। मोहन काफी दूरी पर था, परंतु उसने तुरन्त ही इस घटना को अपने प्राफेशनल कैमरे में कैद कर लिया। मोहन ने जोर–जोर से पुलिस–पुलिस की आवाज लगानी शुरू कर दी, जिससे चाकू चलाने वाला घबरा गया व अपने साथी के साथ कार में चढ़कर भाग निकला।

मोहन ने तब तक पूरी घटना रिकार्ड कर ली थी। वह दौड़कर घायल व्यक्ति के पास गया व उसे लेकर तत्काल अस्पताल पहुँचाया। संयोगवश घायल व्यक्ति बच गया। मोहन ने घायल व्यक्ति से पूरी बातें पूछी। घायल व्यक्ति ने बताया कि उसपर हमला करवाने वाले उनके पार्टनर के लोग ही हैं। उन्होंने हमला करके लगभग दस लाख रूपये छीन लिए हैं। वो किसी तरह कार से निकलकर भागने की कोशिश कर रहा था कि जानकारी के पहले ही मोहन सारी सच्चाई जान चुका था। हमलावरों की पहुँच बहुत ही ऊपर तक थी। उन्हें यह भी पता नहीं था कि उनकी करतूतें कैमरे में कैद हो चुकी हैं और वे भी मीडिया के कैमरे में।

अगले दिनों में पुलिस और रिपोर्ट की कहानी शुरू हो गई। मोहन ने ये बातें अपने अधिकारियों को बताई तो वे उसे तुरन्त ही सनसनीखेज समाचार बनाकर दिखाने की जिद करने लगे, पर मोहन पूरी बात की तह तक जाना चाहता था।

इस बीच हमला करने वालों ने पैसे व शक्ति के जोर पर घायल व्यक्ति को पैसा चुराकर भागने के आरोप में उलटा कैद करा दिया। पर मीडिया से सच्चाई कहाँ तक छुप सकती है। मोहन ने पूरा का पूरा सच जनता तक लाने की ठान ली थी। मोहन ने उस रात की घटना का वीडियो, फिर उनकी कंपनी में जाकर पूछताछ कर सभी बातों का सच्चाई से पता किया। इस प्रकार मोहन को पूरी जानकारी मिली कि हमलावरों ने धोखा दिया व पैसे छीनकर उस व्यक्ति पर जानलेवा हमला किया। मोहन ने समाज के सजग प्रहरी की भूमिका निभाते हुए अंत में वो पूरा वाक्य पूरी सच्चाई व प्रमाण के साथ प्रसारित किया। इसमें भले ही थोड़ा ज्यादा समय लगा, पर सच और सिर्फ सच ही सामने आया। इस समाचार के कारण दोषियों को सजा भी मिली। मोहन ने इस समाचार को कवर करने पर संतोष का अनुभव किया। उसे लगा कि आज उसने समाज के एक सजग प्रहरी की भूमिका अदा की है। उसका ये समाचार सिर्फ एक सनसनी फैलाने वाला या महज मनोरंजन भर का नहीं था, बल्कि इसका एक उद्देश्य था, जो पूर्ण रूप से सफल रहा। जिस प्रकार लोगों का न्यायालय पर भरोसा होता है कि अगर कहीं न्याय नहीं मिलेगा तो वे कोर्ट जाएंगे। उसे न्याय न्यायालय में अवश्य मिलेगा। उसी प्रकार मीडिया–जो लोकतंत्र का चौथा–स्तम्भ है, उसकी भी समाज के प्रति गंभीर जिम्मेदारी है–और वो जिम्मेदारी है, सच दिखाने की। विचार समाज में क्रान्ति फैला सकते हैं। मीडिया की यह जिम्मेदारी बनती है कि वो देश में एकता, भाईचारा, सद्भाव, विकास प्रेम के विचारों का संचारण सम्पूर्ण देश में करें ताकि पूरा देश एक सूत्र में पिरोया जा सके। किसी का किसी दूसरे से द्वेषभाव न हो। सभी क्षेत्रों में शन्ति हो व आपस में प्रेमभाव बने।

गलत व चोरी करने वालों के मन में यह भय हमेशा बना रहना चाहिए कि मीडिया के नजरों से कोई नहीं बच सकता हैं।

अपराध करने वालों के मन में इस बात का डर हमेशा रहना चाहिए कि रात हो या दिन हमेशा कोई मोहन तैयार है अपने कैमरे के साथ उनकी इस गलत हरकत को अपने कैमरे मे कैदकर जनता के सामने सच्चाई लाने के लिए। पत्रकारिता व चैनल में कार्य करके समाज के समक्ष सच्चाई उजागर करना बड़ा ही चुनौती पूर्ण कार्य है। इस जिम्मेदारी को निभाने वाली हमारी मीडिया सच का उजागर कर रही है व समाज में संचार माध्यम लोकतंत्र का चौथा स्तंभ होती है–कथन को सच साबित कर रही है। आज बड़े से बड़े अपराधी व गलत करने वाले नेता मीडिया से जरूर डरते हैं। उन्हें इस बात का हमेशा डर बना रहता है कि बातें मीडिया तक न पहुँच जाए। यह डर इन बड़े अपराधियों में हमेशा बना रहना चाहिए ताकि वे भी अपराध करने से डरें। इसी प्रकार विश्व के हमारे सबसे बड़े लोकतंत्र की रक्षा संभव है।

लोकतंत्र की रक्षा के लिए मीडिया की स्वतंत्रता बहुत ही जरूरी है। लोकतंत्र तभी स्वस्थ होगा जब हमेशा सच सामने आएगा व सच्चाई की जीत होगी। जब मोहन जैसे सच को सामने लाने वाले रिपोर्टर निडर होकर सच दिखाएंगे। इसी प्रकार मीडिया हमारे समाज के सजग प्रहरी की भूमिका सफलतापूर्वक निभा सकता है।

## क्यों रंग यहाँ पर बिकते हैं....

दीपक कुमार, वरिष्ठ प्रबन्धक
यूको बैंक, अंचल कार्यालय, हरियाणा

अक्स बिका यहाँ, शख्स बिका यहाँ,
तन भी बिका यहाँ, मन भी बिका है,
जब कुछ ना रहा यहाँ बिकने को ,
अब रंग यहाँ पर बिकते हैं।

आईने ने उस अक्स को बेचा,
जो उसकी परछाई थी,
संगीत ने उस साज को बेचा,
जो उसकी शहनाई था,
इक–इक कर सब बिकने लगा यहाँ,
जीवन का पहिया यूँ रुकने लगा यहाँ,
जब कुछ ना रहा यहाँ बिकने को ,
अब रंग यहाँ पर बिकते हैं।

कलम ने उस स्याही को बेचा,
जो उसकी तकदीर थी,
मौसम में उस सावन को बेचा,
जो उसकी तस्वीर थी,
इस जहाँ का वो सजना संवरना,
मतलब के आगे झुकने लगा यहाँ,
जब कुछ ना रहा यहाँ बिकने को ,
अब रंग यहाँ पर बिकते हैं।

नफरत के आगे वो चाहत बिकी,
राँझा की जिसमें हीर थी,
अपनों के आगे वो यादें बिकी,
प्यार की जिसमें तस्वीर थी,
जब जीवन का कोई रंग ना रहेगा तो क्या कहेंगे,
कौन यहाँ पर बिकते हैं,
जब कुछ ना रहा यहाँ बिकने को ,
अब रंग यहाँ पर बिकते हैं ।

**कविताएँ**

## पता ही नहीं चला ....

शालिनी राकेश

समय चला, पर कैसे चला
पता ही नहीं चला।
जिन्दगी की आपाधापी में
कब निकली उम्र हमारी
कंधे पर चढ़ने वाले बच्चे
कब कंधे तक आ गए
पता ही नहीं चला।
किराये के घर से
शुरू हुआ था सफर अपना
कब अपने घर तक आ गए
पता ही नहीं चला।
साइकिल के पैडल मारते हुए
हांफते थे उस वक्त
कब से हम कारों में घूमने लगे हैं
पता ही नहीं चला।
कभी थे जिम्मेदारी हम माँ बाप की
कब बच्चों के लिए हुए जिम्मेदार हम
पता ही नहीं चला।
एक दौर था जब दिन में भी
बेखबर सो जाते थे
कब रातों की उड़ गई नींद
पता ही नहीं चला।
जिन काले घने बालों पर
इतराते थे कभी हम
कब सफेद होना शुरू कर दिया
पता ही नहीं चला।
दर दर भटके थे नौकरी की खातिर
कब रिटायर होने का समय आ गया
पता ही नहीं चला।
बच्चों के लिए कमाने बचाने में
इतने मशगूल हुए हम
कब बच्चे हमसे हुए दूर
पता ही नहीं चला।
भरे पूरे परिवार से सीना चौड़ा रखते थे हम
अपने भाई–बहनों पर गुमान था
उन सब का साथ छूट गया
कब परिवार हम दो पर सिमट गया
पता ही नहीं चला।
अब सोच रहे थे कुछ अपने
लिए भी कुछ करे
पर शरीर साथ देना बंद कर दिया
पता ही नहीं चला।।

# ज्ञान, विज्ञान और अनुसंधान में हिंदी भाषा

**निबंध**

चित्रनायक, भाकृअनुप-राडेअनुसं, करनाल

हिन्दी भारत की राजभाषा सन् 1949 को 14 सितंबर के दिन बनाई गई। देश में अभी भी विज्ञान व कानून के क्षेत्र में हिन्दी का प्रचलन बहुत ही सीमित है। विज्ञान के क्षेत्र में बारहवीं कक्षा तक तो हिन्दी की पुस्तकें, लगभग देश के हरेक भाग में मिल जाती हैं, परन्तु बारहवीं कक्षा के आगे हिन्दी भाषा में विज्ञान विषय पर बहुत ही सीमित पुस्तकें मिल पाती हैं।

सर्वप्रथम हम अगर 'ज्ञान' की बात करें, तो वो हम अपनी मातृभाषा में सबसे सहज व आसान तरीके से हासिल करते हैं। हमारी मातृभाषा हिन्दी है और हमें हिन्दी में जितनी जल्दी कोई भी बात समझ में आ जाती है, वह किसी भी अन्य भाषा में नहीं। बच्चों की सर्वप्रथम शिक्षिका उनकी 'माता' होती हैं, जो उन्हें मातृभाषा में अच्छी–अच्छी बातें सिखाती हैं। इसी प्रकार आगे की पढ़ाई–लिखाई का माध्यम भी अगर मातृभाषा में ही हो जाए तो ज्ञान का स्तर बढ़ता जाता है।

यहाँ यह बताना आवश्यक है कि 'ज्ञान' का स्तर भाषा के आधार पर नहीं होता। ज्ञान, ज्ञान ही होता है चाहे वह किसी भी भाषा में हो। चीनी भाषी, जापानी लोग आज इतनी तरक्की व विकास इसलिए कर पा रहे हैं कि उनके अनुसंधान कार्य व विज्ञान की पुस्तकें उनकी मातृभाषा में उपलब्ध हैं। वे लोग सिर्फ अंग्रेजी में ही नहीं लिखते व पढ़ते हैं, वे लोग अपनी मातृभाषा में ही लिखते व पढ़ते हैं और साथ ही साथ अनुसंधान भी अपनी भाषा में ही करते हैं।

हमें इस मानसिकता से भी बाहर निकलना जरूरी है कि जो वैज्ञानिक अंग्रेजी में अपनी रचना नहीं लिखता वह अच्छा शोधकर्त्ता नहीं है। सिर्फ अंग्रेजी में ही अपनी बातें कहने व अंग्रेजी के जर्नलों में शोध–पत्र छापने वाले वैज्ञानिक व शोधकर्त्ता ही उत्तम श्रेणी के कर्मचारी हैं, हमें इस सोच व मानसिकता से बाहर निकलकर हिन्दी के प्रकाशनों को भी बढ़ावा देने की आवश्यकता है। हिन्दी में लिखने वाले शोधकत्ताओं को बढ़ावा देने से ही हिन्दी में विज्ञान व अनुसंधान दोनों बढ़ेंगे। हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूरे देश के लोगों तक आसानी से पहुँच सकती है।

देश मे अगर विज्ञान व अनुसंधान को बढ़ावा देना है तो हिन्दी प्रकाशनों को तरजीह देनी होगी। विचार के संचरण की गति सबसे तीव्र होती है। विचार क्रांति लाते हैं–चाहे वो देश में चारों ओर फैलने वाली आजादी के लिए हो, हरित क्रांति हो, श्वेत क्रांति हो, जिससे भारत दुग्ध उत्पादन में पूरे विश्व में प्रथम स्थान तक पहुँच गया या फिर चाहे वो ब्लू क्रांति हो जिससे मत्स्य उत्पादन में अपार वृद्धि हुई। पूरे देश को अगर शिखर पर लाना है तो पूरे देश की सोच एक करनी होगी–जो हिन्दी द्वारा ही संभव है। हिन्दी ही सम्पूर्ण भारत को एक धागे में पिरो सकती है। कश्मीर से कन्याकुमारी व पूर्वोत्तर के राज्यों से गुजरात–राजस्थान तक घूमने पर हमने हर जगह हिन्दी के प्रयोग करने पर उचित सम्मान ही पाया, साथ ही यह भी पाया कि कहीं भी किसी प्रकार की भाषा संबंधित कोई समस्या नहीं हुई।

सरकारी आँकड़ों के अनुसार देश में अभी 1,05,443 समाचार पत्र, पत्रिकाएं आदि रजिस्टर्ड है। इनमें लगभग 32793 हिन्दी के, दूसरे स्थान पर अंग्रेजी के 111478 व शेष समाचार पत्र–पत्रिकाएं बंगाली, तमिल, मराठी, पंजाबी, गुजराती आदि भाषाओं में छपती हैं। इन आँकड़ों के आधार पर हम कह सकते हैं कि हिन्दी पूरे देश में पढ़ी, समझी व उपयोग में लाई जा रही है, तो यह अतिशयोक्ति बिल्कुल नहीं होगी। तो फिर हिन्दी विज्ञान व अनुसंधान के क्षेत्र में क्यों पीछे छूट रही है। वर्तमान में अभियांत्रिकी, मेडिकल साइंस (चिकित्सा विज्ञान) आदि क्षेत्रों में हिन्दी की अच्छी पुस्तकों का घोर अभाव है।

वर्तमान डाटा के अनुसार सन् 2017 में भारत के 107 जर्नल ऐसे हैं जिनको इम्पैक्ट–फैक्टर दिया गया है, सन् 1995 में इम्पैक्ट–फैक्टर वाले 47 भारतीय वैज्ञानिक जर्नल थे। दुःख की बात यह है कि वर्तमान के 107, वैज्ञानिक व शोध जर्नलों में से एक भी हिन्दी का नहीं है। क्या हम भारतीयों की हिन्दी खराब है या हमारा विज्ञान का शोध कमजोर है।

हम वर्तमान समय में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा छपने वाली पत्रिकाओं यथा फल–फूल, खेती, कृषि चयनिका आदि तथा संबंधित संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली गृह–पत्रिका यथा राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित होने वाली गृह–पत्रिका, दुग्ध–गंगा आदि तक ही अपने अनुसंधान व हिन्दी शोध–पत्रों को सीमित न रखें बल्कि इसे पूरे देश तक, सामान्य जनों तक इसे पहुँचाने व स्थानीय स्तरों पर इन रचनाओं को छपवाने व कृषकों तक पहुँचाने की भी व्यवस्था करें। कृषकों व विद्यार्थियों तक हिन्दी के शोध–पत्र व विज्ञान की सामग्री पहुँचने पर ही उन्हें ये चीजें आसानी व सहजता से समझ आएंगी और वे भी विज्ञान व अनुसंधान के विकास में सहयोग देकर देश के सर्वांगीण विकास में सहभागी बन पाएंगे।

हम सबसे अच्छी तरह अपनी मातृभाषा में ही सोच व समझ सकते हैं। विज्ञान, ज्ञान व अनुसंधान को भारत में अगर विश्व स्तरीय पहुँचाना है तो उसका माध्यम अंग्रेजी भाषा न होकर सिर्फ हिन्दी ही हो सकती है। हिन्दी हमारी मातृभाषा है, हम हरेक, क्लिष्ट व मुश्किल विषय भी अपनी मातृभाषा में आसानी से समझकर उसका हल निकाल सकते हैं, जिससे अच्छे स्तर का अनुसंधान व शोध कार्य हो सकता है। इसके वितरीत अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं में पढ़ने–लिखने पर विषय वस्तु को समझने में ही अधिक ऊर्जा चली जाती है, फलस्वरूप शोधकार्य भी विश्व स्तरीय कम हो पाते हैं।

ज्ञान–विज्ञान का संचार संपूर्ण भारत में देश की अपनी भाषा में जल्दी व तीव्र गति से संभव है, जबकि आजकल हम पूरे देश में प्राथमिक शिक्षा स्तर से ही अंग्रेजी व सिर्फ अंग्रेजी को ही बढ़ावा दिए जा रहे हैं। आज देश के पिछड़े से पिछड़े क्षेत्र व गाँवों में भी अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की बाढ़ सी आ गई है, व हरेक व्यक्ति चाहे वह शहर का हो या ग्रामीण, सभी अपने बच्चों की शिक्षा कॉन्वेन्ट व अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में दिलाना चाहते हैं। इन विद्यालयों में दाखिले के लिए नर्सरी स्तर के फार्म के लिए लोग सुबह उठकर ही लाईन में लग जाते हैं–आखिर क्या है इन अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की शिक्षा में जो हमारे हिन्दी या स्थानीय भाषाओं के विद्यालयों में नहीं है।

पूरा देश प्राथमिक स्तर से ही अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा की ओर ही अग्रसर है, अतः ज्ञान, विज्ञान और अनुसंधान सभी अंग्रेजी भाषा में ही बढ़ रहे हैं, पर इनका संचारण व इन पर बातें तो हिन्दी में हो ही सकती हैं। हम हिन्दी में विज्ञान व अनुसंधान की चर्चाओं को बढ़ावा देकर, कृषकों एवं विद्यार्थियों को सहभागी बनाकर हिन्दी भाषा में ज्ञान–विज्ञान को बढ़ा सकते हैं। कृषक खुद एक शोधकर्त्ता होता है। वह खेत की वर्तमान स्थिति समझकर खुद उसका मौके पर ही हल भी निकालता है। रात में पशुओं को उचित उपचार देकर उनकी सेवा करता है। अतः अगर हम हिन्दी व क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग से अनुसंधान व विज्ञान के विकास हेतु इन कृषकों के ज्ञान का भी उपयोग कर पायें तो यह सर्वोत्तम होगा। देश का विकास, देश के कृषकों की भाषा व उनके सहयोग से तीव्र गति से होगा।

**नगरस्तरीय प्रतियोगिता की सराहनीय प्रविष्टि के रूप में प्रकाशित**

## खुशियाँ उगाकर देख लो

**कविता**

मुकेश कुमार तोमर ''मूक''
वरिष्ठ तकनीशियन, दूरदर्शन उच्च शक्ति प्रेषित्र, करनाल।

लौट आएगा वो शायद
फिर बुलाकर देख लो।
अपनी शम–ए–आरज़ू
फिर जलाकर देख लो।
वक्त की चोट ने
चेहरा बदल डाला मगर
दिल नहीं बदला है
चाहे आज़मा कर देख लो।
लाख धोखे खाए हैं तूने
जमाने भर के लिए
एक धोखा मेरी खातिर
और खाकर देख लो।
जो उदासी का पुजारी है
उदासी पाएगा वो
उसके आँगन में कोई
खुशियाँ उगाकर तो देख लो।

फिर वो ही आँसू बहेंगे
फिर वो ही चटकेगें लब
गीत मेरे हर पल के साथी
फिर से गाकर देख लो।
एक सी तासीर
हर एक दास्तां में है यहाँ
कोई सुनकर देख ले या
फिर कोई सुनाकर देख ले।
दूर रहकर तुमसे अब,
बेचारा ''मूक'' जाएगा कहाँ
वो रहेगा तेरे पास ही
तुम दूर जाकर देख लो।

# वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी



सोनिका यादव, सहायक, भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल

**परिचय :–** भाषा किसी भी राष्ट्र की संस्कृति एवं अस्मिता होती है। भाषा के द्वारा ही एक मनुष्य दूसरे से सम्पर्क व अपने उद्‌गार व्यक्त कर सकता है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति तभी हो सकती है, जब उसके नागरिक अपनी राजभाषा का सम्मान करें व उसे बोलने व प्रयोग करने में गर्व महसूस करें। हिन्दी हमारे राष्ट्र की राजभाषा है। राजभाषा(हिंदी) राजभाषा अर्थात् राज कार्यों की भाषा। इसका अर्थ है कि वह सरकारी कामकाज में प्रयोग होगी। हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर 1949 को प्राप्त हुआ। इसके बाद राजभाषा अधिनियम (1963) तथा राजभाषा नियम (1976) से इसे राजकाज के कार्यों में इस्तेमाल करने के प्रावधान किए गए। संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा हिंदी व अन्य क्षेत्रीय भाषाओं (कुल 22) को अनुच्छेद 8 में शामिल किया गया, ताकि सभी का समान रूप से प्रचार–प्रसार हो सके। जैसे–जैसे समय बीतता गया, वैसे–वैसे हिंदी अपनी सहजता व सरलता के कारण विकास की ओर बढ़ती जा रही है।

**वैश्वीकरण (या भूमंडलीकरण):–** वैश्वीकरण के दौर में आज सारा विश्व एक वैश्विक गांव बन गया है। इसने सारी दुनिया को समतल बना दिया है, जिससे सम्पर्क, व्यापार व संस्कृति को दूसरे देशों में स्थापित करना सरल हो गया है। वैश्वीकरण (यानि विश्व में विस्तार) से पहले संपर्क तथा व्यापार अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत धीमा था, लेकिन संचार, सूचना प्रौद्योगिकी, मंनोरंजन, रेडियो, इंटरनेट, ब्लॉगिंग, कम्प्यूटर आदि से राजभाषा हिंदी के विस्तार में बहुत वृद्धि हुई है। वैश्वीकरण के कारण विभिन्न देशों में संस्कृति व सभ्यता को बचाने व उसे आगे बढ़ाने की जंग शुरू हो गई है, और इसका माध्यम उस राष्ट्र की राजभाषा ही है, जिससे सभ्यता व संस्कृति को बचाया जा सकता है। राजभाषा हिंदी अब विश्व के कोने–कोने तक पहुँच गई है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं रहा जहां इसने अपना वर्चस्व स्थापित न किया हो। राजभाषा हिंदी के विस्तार व प्रसार अर्थात् उसके वैश्वीकरण में विभिन्न माध्यमों का योगदान रहा है, जो इस प्रकार है।

**1. हिंदी का मानकीकरण :–** अगर हिंदी राजभाषा को विश्व के हर क्षेत्र मे पहुंचाना था तो इसके लिए उसके मानकीकरण की आवश्यकता थी ताकि उसमें एकरूपता आ सके और वह शिक्षण, प्रशिक्षण, अनुसंधान, कम्प्यूटर आदि में प्रयोग की जा सके।

**2. कम्प्यूटर व प्रौद्योगिकी :–** आज के वर्तमान युग में प्रौद्योगिकी व कम्प्यूटर ने हिंदी को विश्व स्तर तक ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है, जहाँ कम्प्यूटर का प्रयोग न हो ऐसे में बिना कम्प्यूटर से जोड़े हिंदी को विश्व स्तर पर पहचान दिलवाना मुश्किल था। लेकिन तकनीकी एवं हिंदी के जुड़ाव से मुश्किल भी आसान हो गई।

**यूनिकोड :–** वर्ष 2003 में यूनिकोड के आने से हिंदी के व्यापक प्रचार में भी बढ़ोत्तरी हुई। यूनिकोड एक टेक्नॉलाजी है जिसके अंदर हर वर्ण को 4 अक्षरों या संख्या का यूनीक नंबर दिया गया है। यूनिकोड के कारण अब हिंदी का उपयोग करना सरल हो गया है। आज के विंडोज़ 2000 या उसके बाद के सभी ऑपरेटिंग सिस्टम में तो यूनिकोड इनबिल्ट होता है। अतः कम्प्यूटर व प्रौद्योगिकी ने हिंदी को काफी ऊँचाइयों तक पहुँचाया है।

**3. सूचना व जन–संचार :–** आज का युग सूचना व प्रौद्योगिकी का युग है। वैश्वीकरण के इस दौर में राजभाषा हिंदी को प्रसारित करने में व विश्व विख्यात करने में जन संचार माध्यमों जैसे कि श्रव्य, दृश्य, इलैक्ट्रॉनिक, प्रिंट व विज्ञापन आदि का अतुलनीय योगदान रहा है। मनोरंजन व सूचना माध्यमों ने राजभाषा हिंदी को विस्तृत क्षेत्र प्रदान किया। विज्ञापन की दुनिया में अपने कदम स्थापित कर हिंदी ने अपना वर्चस्व दुनिया को दिखा दिया है। सिनेमा जगत (बॉलीवुड) ने भी हिंदी को मनोरंजन के माध्यम से पहचान दिलवाई है। भारतीय हिंदी फिल्में विदेशों में अच्छा व्यापार कर रही हैं, इससे भी हिंदी का विस्तार विश्व में हो रहा है।

**4. बाजारवाद व लोकतंत्र एवं विकसित होती अर्थव्यवस्था :–** चढ़ते सूरज व बढ़ते चंद्रमा को सब पूजते हैं। उसी प्रकार भारत की अर्थव्यवस्था वैश्वीकरण की ओर उन्मुख है। भारत देश जो कि सबसे अधिक जनसंख्या, सबसे बड़ा लोकतंत्र व बाजार व व्यापार की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है, ऐसे में उसकी राजभाषा हिंदी की अवहेलना नहीं की जा सकती। अब तो अमेरिकी प्रशासन ने भी यह मान लिया है कि राष्ट्रीय सुरक्षा व समृद्धि के लिए हिंदी अमेरिकी नागरिकों को भी सीखनी चाहिए। भारत की अर्थव्यवस्था एक ऐसे स्तर पर बढ़ती जा रही है कि बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी इसकी ओर आकर्षित हो रही है। वे भी अपने कर्मचारियों को हिंदी सिखाने में लगी हैं ताकि वे भारत में अपने व्यापार को फैला सकें।

**आंकड़े :–** भारत में 40 करोड़ के करीब लोग हिंदी को बोल व लिख सकते हैं। विश्व में लगभग 1 अरब से अधिक लोग हिंदी बोलते व समझते हैं। 10 जनवरी 2017 के विश्व हिंदी सम्मेलन की रिपोर्ट के अनुसार राजभाषा हिंदी ने चीन की भाषा मंदारिन को नंबर एक सिंहासन से हटा दिया है। इसे देखकर ऐसा लगता है कि हिंदी भाषा अपने स्वर्णिम काल से गुज़र रही है।

**5. शिक्षण, अध्ययन, वैज्ञानिक अनुसंधान :–** वर्तमान में राजभाषा हिंदी को विश्व के 135 विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जा रहा है। यही नहीं, भारत तथा इसके पड़ोसी देश नेपाल, भूटान, पाकिस्तान आदि के अलावा भी मॉरिशस, सूरीनाम, न्यूजीलैंड, त्रिनिडाड व टुबैगो जैसे कुल 46 से भी अधिक देशों में राजभाषा हिंदी को समझा, बोला जाता है एवं उसका प्रशिक्षण भी होता है। बाजारवाद के दबाव में इन सभी देशों ने हिंदी के महत्व को समझा है, इसलिए उसके शिक्षण व अध्ययन की ओर ध्यान दिया और इससे राजभाषा का विश्व में विस्तार हुआ है।

**अनुसंधान :–** ज्ञान–विज्ञान के युग में आज भाषा का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा किसी काम को करने में सहायक है। लेकिन भाषा ज्ञान को पहुँचाने का माध्यम तो बन सकती है, पर उसमें ज्ञान नहीं होता। अगर ऐसा होता तो चीन, जापान, फ्रांस ने जो सफलता प्राप्त की है वह सम्भव नहीं होती। किसी भी राष्ट्र की राजभाषा ही उसको विश्व में पहचान दिलवा सकती है। आजकल अनुसंधान एवं खोज भी राजभाषा हिंदी को विश्व–स्तर पर पहचान दिलवाने में अपना योगदान दे रहे हैं। अनुसंधान कार्य को हिंदी भाषा में शोध पत्र द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है, जिससे

हिंदी भाषा को जानना विश्व की एक आवश्यकता बनती जा रही है। इन्हें पढ़ने व अनुवाद के लिए हिंदी शब्दकोश का प्रयोग किया जाता है। वैज्ञानिक अनुवाद में एकरूपता व एकात्मकता होने के कारण राजभाषा हिंदी को समझना आसान हो गया है।

**6. इंटरनेट व ब्लॉगिंग :–** आज का युग कम्प्यूटर, तकनीकी व इंटरनेट का है। अगर किसी भी भाषा को विश्व भाषा बनाना है तो उसे कम्प्यूटर से जोड़ना होगा और विविध क्षेत्रों में उसका प्रयोग करना होगा। हमारी राजभाषा हिंदी इन सभी पहलुओं पर खरी उतरी है। इंटरनेट पर सोशल वेबसाइटों जैसे कि फेसबुक, टेलीग्राम, ट्वीटर आदि से इसका विस्तार बढ़ता जा रहा है। ई–मेल, पत्राचार आदि सभी में हिंदी का प्रयोग बढ़ा है। आज गूगल पर धड़ल्ले से हिंदी में जानकारी खोजी जा रही हैं। इससे हिंदी विश्व पटल पर विस्तृत होती जा रही है।

वैश्वीकरण के इस वर्तमान युग में तकनीक ने हिंदी को विश्व के कोने–2 तक पहुँचाने का काम किया है। ब्लॉगिंग से तो हिंदी भाषा की वर्जनाएं टूट ही गई और वह विश्व भाषा बनने में लगी है। ट्वीटर पर बड़ी–बड़ी हस्तियाँ हिंदी भाषा में ट्वीट कर इसके विस्तार में अपना योगदान दे रही हैं।

**7. राजनीतिक क्षेत्र :–** हमारे देश के प्रधानमंत्री अपने सभी भाषण हिंदी भाषा में देकर युवाओं में रूझान पैदा कर रहे हैं। विदेश मंत्री भी हिंदी में संबोधन से इसके विस्तार में लगी हैं।

हिंदी राजभाषा के विस्तार के लिए सबसे पहले भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने सामान्य सभा (संयुक्त राष्ट्र संघ) में अपना भाषण वर्ष 2002 में हिंदी में दिया था। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को पहचान व सम्मान दिलाने के लिए सभी राजनेता अपने–अपने स्तर पर कोशिश कर रहे हैं व विदेशी भूमि पर अपने भाषण हिंदी में देकर उसके प्रति लगाव पैदा करने में जुटे हैं।

राजभाषा हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए हर नागरिक को अपना योगदान देना होगा, तभी तो हम कह सकते हैं कि

**''राजभाषा है हिंदी मातृभाषा है हिंदी,**
**युग चाहे कोई भी हो विकसित और विकसित होती जाएगी हिंदी**
**यह तो है भारत माता के मस्तक पर**
**सम्मान की बिंदी।''**

अतः हम कह सकते हैं कि आज वैश्वीकरण के युग में जब सारा विश्व एक ग्लोबल विलेज़ बन गया है, राष्ट्र की सभ्यता व संस्कृति को बचाने का माध्यम उस राष्ट्र की राजभाषा ही बन सकती हैं। राजभाषा हिंदी को वैश्वीकरण के युग में अपना स्थान दिलाने में संचार साधनों, सूचना क्रांति, सिनेमा, मनोरंजन, कम्प्यूटर तकनीकी व प्रौद्योगिकी का योगदान अतुलनीय है। आज इसकी उपयोगिता को समझते हुए ऐसे राष्ट्र जो अंग्रेजी के वर्चस्व के बीच हिंदी व अन्य भाषाओं को नगण्य समझते थे, वे भी अंग्रेजी सीखने में लगे हैं। अतः

हम कह सकते हैं किः–

**''मान बढ़ेगा, शान बढ़ेगी, दुनिया में पहचान बनेगी।**
**अगर हिंदी को अपनाओगे तो हर जगह सम्मान पाओगे।**

**नगरस्तरीय प्रतियोगिता की सराहनीय प्रविष्टि के रूप में प्रकाशित**

## नराकास करनाल के उल्लेखनीय कार्य

- सदस्य कार्यालयों को राजभाषा के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन हेतु मार्गदर्शन
- नराकास करनाल के समस्त कार्यालयों के डाटाबेस को अद्यतन रखना
- समिति के पत्राचार को कागज न्यून से कागज विहीन(लेस पेपर से पेपरलेस) करना
- समय–समय पर विभिन्न राजभाषा प्रतियोगिताओं एवं राजभाषा संगोष्ठियों का आयोजन
- उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालयों एवं कार्यालय प्रधानों का राजभाषा शील्ड व ट्राफी से सम्मान
- उत्कृष्ट कार्य करने वाले राजभाषा अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशस्ति–पत्र से सम्मान
- समिति के वित्तीय अभिलेखों की समय पर लेखा–परीक्षा
- समिति की पत्रिका का समय पर प्रकाशन
- छमाही बैठकों में सदस्य कार्यालयों के प्रशासनिक प्रधानों की प्रतिभागिता
- प्रशासनिक प्रधानों के स्टेशन से बाहर रहने पर अगले वरिष्ठतम अधिकारी द्वारा प्रतिभागिता
- राजभाषा विभाग, गृह–मंत्रालय को ऑनलाइन रिपोर्ट/सूचनाओं का प्रेषण

**''भाषा बहता नीर सरल''**

# प्रधान मंत्री मुद्रा योजना : रोजगार सृजन एंव देश के सामाजिक व आर्थिक विकास का एक प्रभावी साधन

आलेख

बिंदेश्वरी प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक, इंडियन बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल

हम सभी प्रधानमंत्री मुद्रा योजना से लगभग पूर्णतः परिचित हैं लेकिन फिर भी मैं आपके समक्ष अपने विचारों को शीर्षकों में विभक्त करके प्रस्तुत कर रहा हूँ :–

## परिचय

युवाओं में कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए स्किल/कौशल योजना लागू करने के बाद प्रधानमंत्री की दूरदर्शी सरकार ने उनके कारोबार और रोजगार की भावना का विकास करने और उन्हें प्रात्साहित करने के लिए इस वित्तीय सहयोग की योजना का शुभारंभ किया। इस के माध्यम से सरकार पर वित्तीय समस्या से जूझ रहे असंगठित क्षेत्र के व्यवसायों और सस्ते ब्याज वित्त उपलब्ध कराने के साथ ही कोई नया व्यवसाय शुरू करने को इच्छुक युवाओं को भी प्रोत्साहित करने का लक्ष्य रखा है। इस संबंध में गौरतलब है कि अब तक देश की आबादी, खासकर निचले तबके का एक बड़ा भाग औपचारिक बैंकिग प्रणाली के लाभों से वंचित रहा है। वो कृषि से लेकर कोई छोटा काराबोर करने के लिए साहूकारों पर निर्भर करते थे जिसके लिए उन्हें भारी ब्याज चुकाना पड़ता था और फिर वो उनके चकव्यूह मे फंस जाते थे। वहीं दूसरी तरफ कुछ इसी तरह की समस्या से लघु व्यावसायिक इकाईयों को भी जूझना पड़ रहा था। अब तक उनके लिए न तो कोई नियामक संस्था थी और न ही कोई बैंकिग प्रणाली जिससे उन्हें वित्तीय सहयोग मिल सके। वर्ष 2013 के सर्वे में कहा गया था कि देश में लगभग 5 करोड़ 77 लाख लघु व्यावसायिक इकाईयाँ हैं। ऐसे में जरूरी था कि सरकार कोई इस प्रकार की योजना लाए। अतःइसी महत्वाकांक्षा को संजोए हुए भारत सरकार द्वारा फरवरी 2015 के दौरान संघीय बजट के अंतर्गत घोषित प्रधान मंत्री मुद्रा योजना का उल्लेख करना चाहिए जिसे ''सूक्ष्म इकाईयों का विकास एवं पुनर्वित्त अभिकरण'' (Micro Units Developments and Reginance Agency =MUDRA) के रूप में गठित किया गया था जिसको औपचारिक रूप से 8 अप्रैल 2015 को 20000 हजार करोड़ रूपये के साथ विमुक्त किया गया। इस कोष के साथ 3000 करोड़ रूपए के ऋण गारंटी कोष को भी जोड़ा गया है। इसे सूक्ष्म व लघु औद्योगिक इकाईयों को संस्थानिक वित्त के साथ–साथ विशेषतः नॉन–फार्म क्षेत्र की छोटी इकाईयों को विकास व पुनर्वित्त उपलब्ध कराने के लिए बनाया गया है। प्रधान मंत्री मुद्रा लोन योजना के अंतर्गत मुद्रा कार्ड जारी किया जाता है। यह डेबिट कार्ड के जैसा एक कार्ड है जो मुद्रा ऋण धारक को मुद्रा ऋण के रूपये आहरण करने और भुगतान के लिए दिया जाता है। इस कार्ड की मदद से सूक्ष्म उद्योगी कार्यशील पूंजी को जरूरत के हिसाब से नकद निकासी कर सकते हैं।

मुद्रा बैंक योजना की सोच बांग्लादेश के प्रोफ़ेसर युनूस की है जिसे वर्ष 2006 में लागू किया गया था जिससे कुटीर उद्योग का विकास हुआ और जिसके बाद अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर युनूस जी की खूब प्रशंसा की गई। मुद्रा ऋण योजना के तहत ऋण लेने वाले लोगों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। इस वर्गीकरण का आधार व्यवसाय के तीन चरण हैं :–

1. पहले चरण में व्यवसाय शुरू करने वाले लोगों की तरफ ध्यान गया है।

2. दूसरे चरण में व्यवसाय की मध्यम स्थिति में कारोबार को वित्तीय स्थिरता या मजबूती प्रदान करने के लिए है।

3. तीसरे चरण में व्यवसाय को बढ़ाने के लिए अधिक पूंजी की तलाश में रहने वाले लोगो की तरफ वित्त व्यवस्था का ध्यान किया गया है। इसके द्वारा सूक्ष्म इकाईयों को दी जाने वाली ऋण सुविधा को निम्न प्रकार से प्रस्तुत कर सकते हैं :–

| | |
|---|---|
| शिशु | रु. 50,000/– तक |
| किशोर | रु. 50,001/– से 5,00,000/– तक |
| तरुण | रु. 5,00,001/– से 10,00,000/– तक |

## प्रधान मंत्री मुद्रा योजना के उद्देश्य

1. सूक्ष्म वित्तीय संस्थाओं सहित अन्य अभिकरणों को जो छोटे कारोबारियों, दुकानदारों, स्वयं सहायता समूहों आदि को ऋण उपलब्ध कराते हैं, को वित्त व ऋण गतिविधियों में सहयोग करना।

2. विद्यमान सभी सूक्ष्म वित्तीय संस्थाओं को पंजीकृत करना और उसके प्रदर्शन के आधार पर उसकी श्रेष्ठता सूची बनाना। इस सूची

से संस्था के रिकॉर्ड का आकलन किया जा सकेगा और ऋण लेने वालों को श्रेष्ठ सूक्ष्म वित्तीय संस्था को चुनने में मदद मिलेगी। वहीं दूसरी तरफ श्रेष्ठता सूची बनने से संस्थाओं के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी और वे सभी बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित होंगे। अंततः इसका लाभ ऋण लेने वाले लोगों को मिलेगा।

3. मुद्रा बैंक ऋण लेने वाले लाभार्थियों को व्यवसाय के संबंध में उचित दिशानिर्देश भी उपलब्ध कराएगा जिससे व्यवसाय को संकट से उबारने में मदद मिल सकेगी। साथ ही चूककर्ता की स्थिति में पैसे की वसूली के लिए किस प्रक्रिया का पालन किया जाए, उसके निर्धारण में भी मुद्रा बैंक सहयोग करेगा।

4. मुद्रा बैंक ऋण देने वाली संस्थाओं को प्रभावी तकनीक उपलब्ध कराएगी जिससे ऋण लेने व देने की प्रक्रिया में मदद मिल सकेगी।

5. योजना के तहत मुद्रा बैंक एक उपयुक्त ढांचा तैयार करेगा जिससे व्यावसायिक इकाईयों को छोटे ऋण उपलब्ध कराने के लिए एक प्रभावी प्रणाली विकसित की जा सके।

### अ. आर्थिक विकास में एक प्रभावी साधन के रूप में मुद्रा योजना की भूमिका

इस योजना की एक सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि प्रधान मंत्री जन धन योजना के अंतर्गत ओवर ड्राफ्ट सुविधा प्राप्त खाता धारक सुविधा का लाभ उठाने के लिए मुद्रा योजना में भी पात्र है तथा नॉन–फार्म विनिर्माण, ट्रेडिंग व सेवा क्रियाकलापों को 10 लाख तक दिया गया ऋण प्रधान मंत्री मुद्रा योजना के अंतर्गत आवरित किया जाता है। भारत सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के सभी बैंकों के लिए लक्ष्य निर्धारित कर दिया है जिसकी समीक्षा निरंतर रूप से राज्य स्तरीय बैंकर समिति की बैंठकों में की जाती है। इस योजना के तहत लाभ उठाने के लिए लगभग सभी प्रकार की व्यावसायिक इकाईयों, पेशेवरों और सेवा क्षेत्रों को शामिल किया गया है। इनमें छोटे दुकानदार, फल सब्जी विक्रेता, रेहड़ी वाले, नाई/सैलून, साइकिल व बाइक मरम्मत, दस्तकार, शिल्पी, सहकारी संस्थाएं लघु और कुटीर उद्योग आदि शामिल हैं।

1. रोजगार की उपलब्धताः– अब लोग मुद्रा बैंक से ऋण प्राप्त कर अपने व्यापार क्षेत्र का विस्तार करने के लिए अनेक प्लांट अर्थात् शाखाएँ व उप केंद्र खोलने लग गए हैं, जिसके संचालन के लिए उन्हें मानव संसाधन की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए बहुत सारे कर्मचारियों की आवश्यकता होती है। इस कारण बाजार में रोजगार के अवसर पैदा होते हैं जिसका उल्लेख पहले ही कर चुके हैं और बेरोजगारी जैसी विकराल समस्या समाप्त हो रही है, वह मुद्रा योजना की सफलता का एक महत्वपूर्ण सूचक है।

2. प्रतियोगिता की भावनाः– इससे छोटे व्यापारियों का आत्मविश्वास बढ़ेगा जिससे उनमें प्रतियोगिता की भावना उत्पत्र होगी जो उनकी उन्नति के लिए आवश्यक होगी।

3. आर्थिक विकास में गतिः– लघु व कुटीर उद्योगों का उत्थान तो होगा ही साथ ही देश के आर्थिक विकास को भी गति मिलेगी। इस योजना का सबसे अधिक लाभ हमारे विकासशील देश की अर्थव्यवस्था को हुआ है और उसकी विकास करने की गति अपेक्षाकृत तीव्र हो गई है तथा विश्व के सभी देशों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित कर रही है चाहे वह अपने उत्पादों का निर्माण हमारे देश में करना हो या बाजार के रूप में स्थान उपलब्ध कराना हो।

4. नई नई गतिविधियों का संचारः– छोटे उद्योगों को बढ़ावा देने से देश का पैसा देश में ही रहेगा और नई–नई गतिविधियों का संचार होगा।

5. ग्रामीण क्षेत्रों के लघु उद्यमों को बाजार उपलब्ध करानाः– धन के अभाव में ग्रामीण क्षेत्रों के व्यापारियों जैसे बुनकरों, कास्तकारों, कृषकों व पशुपालकों आदि को अपने द्वारा निर्मित उत्पादों व वस्तुओं को बेचने के लिए पहले उपयुक्त बाजार नहीं मिलता था परंतु अब वही व्यापारी मुद्रा बैंक से ऋण सुविधा प्राप्त कर सक्षम हो जाते हैं कि वो स्थानीय से होते हुए राष्ट्रीय बाजार में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने लगे हैं जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप वो नित नई तकनीक व संसाधनों का उपयोग करने में सक्षम हो गए हैं।

6. विद्यमान उद्यमों की उत्पादन क्षमता में विस्तारः– वर्तमान में देश में विद्यमान सूक्ष्म व लघु उद्यम मुद्रा बैंक से ऋण प्राप्त कर आधुनिक संयंत्रों का उपयोग करके उपनी उत्पादन क्षमता में दिन–दोगुनी तरक्की कर रहे हैं जिसके फलस्वरूप वो अपनी शाखाओं का विस्तार कर रहे हैं और माँग की पूर्ति करने में एक अहम् भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं।

7. उद्यमों की तकनीकी तक पहुँचः– यह सर्वविदित है कि आज के इस दौड़ते युग में तकनीक के बिना किसी भी श्रेणी के उद्यम को अपना अस्तित्व बनाए रखना असंभव सा लगता है। प्रायः हम यह पाते हैं कि आज भी बहुत अधिक मात्रा में सूक्ष्म व लघु उद्योगों में काफी पुरानी तकनीक, उपकरण व मशीनरी का उपयोग किया जाता है परंतु भारत सरकार के निर्देशानुसार अब सभी बैंक व वित्त पोषण संस्थाए सूक्ष्म व लघु उद्योगों को वित्त पोषित करने के लिए आगे आ रहे हैं, जिसका भरपूर लाभ उठाकर सूक्ष्म व लघु उद्योग नए–नए उपकरण व तकनीकी का लाभार्जन कर अपने उद्यमों को ऊँचाई प्रदान कर रहे हैं।

8. मेरुदंड की भूमिका:— मुद्रा योजना के अंतर्गत व्यापार में उच्च वृद्धि दर्ज करने पर सूक्ष्म व लघु उद्यमों के क्षेत्र में यह योजना एक प्रकार से मेरुदंड की भूमिका का निर्वाह कर रही है जिससे सभी वांछित आवश्यकताओं की पूर्ति संभव हो रही है।

9. वित्तीय समावेशन:— प्रायः यह देखा जाता था कि जनता का एक बहुत बड़ा भाग बैंकों की पहुँच से बाहर था, किन्तु मुद्रा योजना के अस्तित्व में आ जाने के बाद बैंकों के दायरे से बाहर का जन भाग अब बैंकों तक आ रहा है तथा वित्तीय रूप से जागरूक हो रहा है।

### ब. सामाजिक विकास में एक प्रभावी साधन के रूप में मुद्रा योजना की भूमिका

1. आमजन के जीवन स्तर में सुधार:— किसी भी मानव को अपने जीवन यापन के लिए तीन चीजों की आवश्यकता होती है: रोटी, कपड़ा और मकान। ये तीनों तभी प्राप्त हो सकते हैं जब आमजन के पास कोई आय का साधन हो जो कि वर्तमान में बहुत ही दुर्लभ हैं। लगभग हर संयंत्र या कारखाने में मशीनें लोगों की जगह लेती जा रही है, जिससे बेरोजगारी उत्पन्न हुई परिणामस्वरूप लोगों का जीना मुश्किल हुआ। प्रधान मंत्री मुद्रा योजना से अब वही आमजन ऋण लेकर संसाधन जुटा पाया और उपरोक्त उल्लेखित तीनों सामग्री जुटा पा रहा है।

2. जनता में आत्मनिर्भरता की भावना का विकास:— मुद्रा योजना से यह लाभ भी हुआ है कि आम जनता में यह भावना विकसित हो गई है कि वो अब आत्मनिर्भर है तथा अब वो परिस्थितियों से निराश न होकर मुद्रा योजना के अंतर्गत ऋण लेकर प्रगति के लिए स्वयं को आगे बढ़ा रहे हैं।

3. समाज की साक्षरता:— समाज अब अर्थजगत में दिन प्रतिदिन हो रही घटनाओं के प्रति स्वयं को जागरूक कर पा रहा है। पहले देखा जाता था कि वो अर्थव्यवस्था तो क्या बैंकिंग के विषय में भी अनभिज्ञ था, किन्तु अब मुद्रा योजना के परिणामस्वरूप समाज वित्तीय रूप से अपेक्षाकृत अधिक सजग हो गया है और बढ़—चढ़ कर इस योजना के अंतर्गत स्वयं को लाभान्वित कर पा रहा है।

4. समाज के अंदर बैठे हुए साहूकारों पर नकेल:— जनता पहले अपने काम—धंधों के विकास या मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए साहूकारों का शिकार हो जाया करती थी। प्रधान मंत्री मुद्रा योजना ने समाज में फैले हुए इन साहूकारों पर नकेल लगाकर इनके आंतक को समाप्त कर दिया है तथा जनता को ऋण या वित्त के लिए अपनी तरफ आकर्षित किया है।

5. सामाजिक एकता का उद्भव:— प्रधान मंत्री मुद्रा योजना के परिणामस्वरूप समाज में एकता देखने में आ रही हैं। अब भिन्न जाति व समुदायों के लोग आपस में मिलजुल कर किसी छोटे—मोटे काम धंधे की शुरूआत करने के लिए मुद्रा योजना के अंतर्गत ऋण लेने के लिए बैंकों में देखे जा सकते हैं।

### निष्कर्ष:—

मेरे विचारानुसार प्रधान मंत्री मुद्रा योजना अपने लक्ष्यानुरूप सफल सिद्ध हुई है तथा इसने अपने नाम को भी सार्थक साबित किया है अर्थात् समाज में छोटे व कुटीर उद्योगो को गति प्रदान करने के लिए मुद्रा जिसे हम धन भी कह सकते हैं, की कमी को काफी हद तक कम कर दिया है। मुझे यह कहने में भी संकोच नही करना चाहिए कि प्रधान मंत्री मुद्रा योजना की सफलता व् सूक्ष्म व लघु उद्यमों के सामर्थ्य विकास के पीछे सार्वजानिक क्षेत्र के बैंक व उनके कर्मठ कर्मचारियों का भी अद्वितीय योगदान है जो निरंतर अथक परिश्रम व श्रम के द्वारा सूक्ष्म व लघु उद्यमों को वित्त पोषित करने में लगे हुए हैं। प्रधान मंत्री मुद्रा योजना ने हमारे देश में विद्यमान लघु व्यावसायिक इकाईयों को प्रगति प्रदान करने के लिए एक सशक्त व सरल मार्ग प्रदान किया है अर्थात् अब भारतवासी बहुत सी घरेलू वस्तुएं जैसे बर्तन, कपड़े, खिलोने, आभूषण, वाहन आदि अपने उपभोग के लिए विदेशों से आयातित उत्पादों को त्याग कर अपने देश में ही निर्मित करने लगे हैं जो प्रधान मंत्री मुद्रा योजना की सफलता का सूचक है।

अंतिम शब्दों में मैं यह कहने से पीछे नहीं हटूँगा कि वास्तविकता में देश में रोजगार सृजन एवं देश के सामाजिक विकास में एक प्रभावी साधन के रूप में मुद्रा योजना की भूमिका अद्वितीय व सराहनीय है।

# विश्व पटल पर राजभाषा हिन्दी



**अमित कुमार, सहायक प्रशासनिक अधिकारी**
**भारतीय जीवन बीमा निगम, मण्डल कार्यालय, करनाल**

विश्व पटल पर राजभाषा हिन्दी की उपस्थिति को उद्घाटित करने के क्रम में सर्वप्रथम हिन्दी की विकास–यात्रा पर संक्षिप्त प्रकाश डालना प्रासांगिक होगा। हिन्दी भारत और विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। इसकी जड़ प्राचीन भारत की संस्कृत में तलाशी जा सकती है। 'हिन्दी' शब्द का सम्बन्ध संस्कृत शब्द 'सिन्धु' से माना जाता है। 'सिन्धु' का पर्याय सिन्ध नदी है और इसके आस–पास के क्षेत्र को 'सिन्धु कहा जाता था। यह 'सिन्धु' शब्द इरानी में जाकर हिन्दू और फिर' हिन्दी' हो गया। बाद में इरानी भारत के अधिकांश भागों से परिचित होते गए और इस शब्द के अर्थ में भी विस्तार होता गया तथा हिन्द शब्द पूरे भारत का वाचक हो गया। इसी में इरानी 'इक' प्रत्यय लगने से 'हिन्दीक' बना जिसका अर्थ है 'हिन्द का'! यूनानी शब्द 'इन्दिका' या अंग्रेजी शब्द 'इण्डिया आदि इस 'हिन्दीक' के ही विकसित रूप है। हिन्दी भाषा के लिए इस शब्द का प्राचीनतम प्रयाग 'जफरनामा' (1442) में मिलता है।

अपने व्यापक प्रसार तथा स्वतन्त्रता आन्दोलन को एकसूत्र में जोड़ने की भूमिका को दृष्टिगत रखते हुए 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा की बैठक में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा देने का प्रस्ताव रखा गया। यह प्रस्ताव तीन महानुभावों ने रखा था– डॉ.बी.आर.अम्बेडकर, प्रो.के.एम.मुंशी एवं डॉ.गोपाल स्वामी आयंगर। यह प्रस्ताव ध्वनिमत से पारित किया गया और हिन्दी संघ की 'राजभाषा' के पद पर सुशोभित हो गयी। हिन्दी को लेकर विरोध की राजनीति करने वालों के लिए दृष्टव्य है कि उक्त तीन प्रस्तावकों में से दो लोग गैर–हिन्दी भाषी क्षेत्र के थे। भारत के संविधान के भाग–17 में 'राजभाषा' का प्रावधान है। संविधान के अनुच्छेद–343 (1) से लेकर 351 तक राजभाषा विकास के विभिन्न प्रावधानों की विकास–यात्रा है।

राजभाषा नीति के अनुपालन के लिए 'राजभाषा अधिनियम–1963 यथा संशोधित 1967 बनाया गया एवं इसी के तहत 'राजभाषा नियम 1976 यथा संशोधित–1987 बनाए गए। इन्हीं नियमों के तहत राजभाषा की दृष्टि से सम्पूर्ण देश को तीन क्षेत्रों–'क' 'ख' तथा 'ग' में बांटा गया है। हिन्दी की भूमिका आज बहुत बड़ी हो गई है। वह न केवल कुछ भारतवासियों की मातृभाषा है, बल्कि वह प्रान्तीय, अंतर्क्षेत्रीय संपर्क भाषा की भूमिका से भी आगे राष्ट्रभाषा और अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में भूमिका निभा रही हैं विश्वपटल पर हिन्दी की उपस्थिति आज उल्लेखनीय है। भारत सहित अन्य देशों में लगभग 80 करोड़ लोग हिन्दी बोलते पढ़ते और लिखते हैं। फिजी, मॉरिशस, गुयाना, नेपाल, सूरीनाम आदि देशों की अधिकांश जनता हिन्दी बोलती है। विश्वपटल पर हिन्दी की स्थिति पर चर्चा करते हुए यह जान लेना भी आवश्यक है कि हिन्दी प्रयोग करने वालों की संख्या के आधार पर 1952 में हिन्दी, विश्व में पॉचवें स्थान पर थीं, 1980 के आस पास वह चीनी और अंग्रेजी के बाद तीसरे स्थान पर आ गई। 1991 की जनगणना के अनुसार हिन्दी भाषियों की संख्या पूरे विश्व में अंग्रेजी भाषियों की संख्या है।

डॉ. जयन्ती नौटियाल से निरन्तर बीस वर्ष तक भारत तथा विश्व में भाषा सम्बन्धी आंकड़ों का विश्लषण करके सिद्ध किया कि विश्व में हिन्दी का प्रयोग करने वालों की संख्या चीन से भी अधिक है और हिन्दी अब प्रथम स्थान पर है। उसने विश्व की अंग्रेजी समेत सभी भाषाओं को पीछे छोड़ दिया है। सन् 1998 के पूर्व, मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं के जो ऑकड़े मिलते थे, उनमें हिन्दी को तीसरा स्थान दिया जाता था। सन् 1997 में भारत जनगणना का भारतीय भाषाओं के विश्लेषण का ग्रंथ प्रकाशित होने तथा संसार भर की भाषाओं की रिपोर्ट तैयार करने के लिए यूनेस्को प्रश्नावली के आधार पर उन्हें भारत सरकार के केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के तत्कालीन निदेशक प्रो. महावीर सरन जैन द्वारा भेजी गई रिपोर्ट है कि मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से संसार की भाषाओं में चीनी के बाद हिन्दी के बोलने वाले सर्वाधिक हैं। विगत दो दशक में उदारीकरण, वैश्वीकरण तथा औद्योगीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई है। इसके परिणामस्वरूप अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भारत में आयी तो हिन्दी के लिए एक खतरा दिखाई दिया था, क्योंकि वे अपने साथ अंग्रेजी लेकर आई थी। मीडिया महारथी 'रूपर्ट मरडोक' स्टार चैनल लेकर आए जो अंग्रेजी में शुरू हुआ था। इसी क्रम में सोनी जैसे दूसरे चैनल भी अंग्रेजी कार्यक्रम लेकर भारत आए। मगर इन सबको विवश होकर हिन्दी की ओर मुड़ना पड़ा, क्योंकि इन्हें अपनी दर्शक संख्या बढ़ानी थी। आज टी.वी. चैनलों तथा मनोरंजन की दुनिया में हिन्दी सबसे अधिक मुनाफे की भाषा हैं। कुल विज्ञापनों का लगभग 75 प्रतिशत हिन्दी माध्यम में हैं।

भारत के केन्द्रीय संस्थान के पूर्व निदेशक प्रा.महावीर सरन जैन ने अपने एक आलेख में हिन्दी की विश्वव्यापी लोकप्रियता का प्रतिपादन करते हुए यह अभिमत व्यक्त किया है कि हिन्दी की फिल्मों, गानों, टी.वी. कार्यक्रमों, ने हिन्दी को कितना लोकप्रिय बनाया है, इसका आकलन करना कठिन है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान में हिन्दी पढ़ने के लिए आने वाले 67 देशों के विदेशी छात्रों ने अपना मत व्यक्त किया है कि हिन्दी फिल्मों, टी.वी. कार्यक्रमों आदि ने उन्हें हिन्दी सीखने में काफी मदद की। अप्रवासी भारतीयों ने भी विश्व पटल पर हिन्दी की मशाल को जलाए रखा है। कोलंबस (अमेरिका) में हिन्दी कविताओं एवं कथाओं का सृजन कर रहे श्री दीपक मशाल का कहना है– ''अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन.... कई तरह की भाषाएं फिज़ा में तैर रही हैं। इन सबके के बीच में हिन्दी का एक वाक्य भी अपने देश की खुशबू को मन मस्तिष्क पर बिखेर जाता है। सारांशतः आज हिन्दी का स्वरूप विश्व व्यापी बन गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ में भी अब इसकी गूँज सुनाई देने लगी है जिसकी शुरूआत तत्कालीन विदेशमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने की थी। वर्तमान नेतृत्व की सकारात्मक पहल से वह दिन दूर नहीं जब संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषाओं में हिन्दी भी जुड़ जाएगी। अपनी सरसता, सहृदयता, बोधगम्यता एवं व्यापक स्वरूप के कारण हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी विश्वपटल पर छा जाए यही हमारी कामना है।

# राष्ट्रीय एकता का आधार–हिन्दी

आलेख

डा. कान्ता वर्मा
प्राध्यापिका, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सीकरी, करनाल

यह एक सर्वव्यापक सत्य है कि यदि कोई राष्ट्र प्रगति करना चाहता है और अपने नागरिकों के चहुंमुखी विकास की चाह रखता है तो इसकी प्रथम एवं अनिवार्य शर्त यह है कि उस राष्ट्र की अपनी एक राष्ट्र भाषा हो। राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक के मन में वह भाषा रची बसी हो। उसका प्रचार–प्रसार एवं प्रयोग औपचारिक न होकर स्वाभाविक हो। दैनिक बोलचाल से लेकर शासन एवं प्रशासन की समस्त गतिविधियाँ उसी भाषा में सम्पन्न हो। राष्ट्र के बच्चे–बच्चे को राजभाषा के प्रयोग पर गौरव का अनुभव हो।

भाषा के सन्दर्भ में यदि भारत की बात की जाए तो निसंदेह भारत भाषायी आधार पर विश्व का सबसे समृद्ध देश है। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को संवैधानिक मान्यता प्राप्त है। लगभग 1600 भाषा एवं बोलियों का प्रचलन पूरे देश में है। हमारे देश में चार कोस पर पानी और दो कोस की दूरी पर वाणी बदलती है। सभी 29 राज्यों एवं सात केन्द्र शासित प्रदेशों के पास भाषा एवं बोलियों का एक विशाल भण्डार है। 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया। हिन्दी वैज्ञानिक आधार पर प्रमाणिक भाषा है। भारत की राजभाषा हिन्दी देश की सीमायें पार कर आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। यदि साहित्य की दृष्टि से बात करें तो हिन्दी भाषा के पास सभी विधाओं में विशाल साहित्यिक भण्डार है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हिन्दी साहित्य खूब फल–फूल रहा है।

भारत मे हिन्दी बोलने वालों की संख्या का प्रतिशत अन्य भाषाओं की तुलना में सबसे अधिक है। हिन्दी सरलता एवं सहजता से सीखी जाने वाली भाषा है। हमारे देश में हिन्दी की जड़ें केवल पुरानी ही नहीं अपितु बहुत गहरी भी हैं। हिन्दी भाषा एक ऐसा वटवृक्ष है जिसके तले अनेक भाषा एवं बोलियों ने प्रसिद्धि प्राप्त की है। हिन्दी भाषा के सहारे ही हिन्दी सिनेमा जगत देश–विदेश में प्रति वर्ष हजारों करोड़ का व्यापार करता है। हिन्दी भाषा के कारण सैकड़ों समाचार पत्र, पत्रिकायें समाचार चैनल, आकाशवाणी केन्द्र, शिक्षण संस्थाऐं और उद्योग–धन्धे अरबों का व्यापार–वाणिज्य कर रहे हैं। हिन्दी भाषा प्रतिवर्ष करोड़ों लोगों को रोजगार देती है। मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर, सुमित्रानन्दन पंत, हरिवंशराय बच्चन, रामचन्द्र शुक्ल, भारतेन्दु जी जैसे हजारों महान कवि, लेखक एवं साहित्यकार हिन्दी भाषा की देन हैं। यदि राजनीतिक क्षेत्र की बात करें तो महात्मा गाँधी, वल्लभ भाई पटेल, अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवाणी, लाल बहादुर शास्त्री, इन्दिरा गाँधी, और निवर्तमान प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र कुमार मोदी के अतिरिक्त ऐसे असंख्य राजनेता है जो हिन्दी भाषा के कारण ही जनता–जनार्दन के ह्रदयों में जगह बनाकर ऊँचे पदों तक पहुँच सके। हिन्दी भाषा के कारण ही सैंकड़ों कलाकार एवं कलमकार प्रतिवर्ष राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बड़े–बड़े सम्मान प्राप्त करते हैं। हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसने पूरे देश को जोड़ने एव समृद्ध करने का कार्य किया है।

लेकिन विडम्बना यह है कि जिस भाषा ने पूरे देश एवं समाज के लिये प्रगति के रास्ते खोले, लोगों को सशक्त एवं समृद्ध किया। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश का गौरव बढ़ाया, वही भाषा पिछले सत्तर साल से अपने ही देश में उपेक्षा का शिकार है। जिन उद्योगपतियों ने हिन्दी भाषा के सहारे अरबों–खरबों का औद्योगिक साम्राज्य खड़ा किया, जिन नेताओं और प्रशासनिक अधिकारियों ने हिन्दी के बलबूते उच्च पद प्राप्त किये। जिन कलाकारों एवं साहित्यकारों ने हिन्दी की बैसाखी के सहारे सितारा पद प्राप्त किया, आज उन्हें ही व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक मंचों से हिन्दी में बोलते हुए शर्म आती है।

यदि आम जनमानस की बात की जाए तो स्थिति यहाँ भी द्रवित करने वाली है। आज हमारे देश का प्रत्येक व्यक्ति, वर्ग समूह एवं अभिभावक एक विदेशी भाषा के पीछे पड़ा हुआ है। अमीर–गरीब प्रत्येक व्यक्ति अंग्रेजी भाषा के माध्यम से अपने बच्चों को शिक्षा दिलवाना चाहता है। बड़ी विचित्र बात है कि जो भाषा हमें भावनात्मक रूप से जोड़ती है, उसी भाषा के माध्यम से हमें शिक्षा ग्रहण करने में शर्म आती है। देश की मानसिकता कुछ इस प्रकार की हो गई है कि हिन्दी के अतिरिक्त हिन्दी बोलने वालों को भी हीन दृष्टि से देखा जाता है। अपनी राष्ट्र भाषा को अनदेखा करके एक विदेशी भाषा को स्टेटस सिम्बल बनाना हमारी मानसिक बीमारी को दर्शाता है। हम समझ कर भी यह नहीं समझना चाहते कि अंग्रेजी के पीछे अंधी दौड़ के कारण शिक्षा व्यवस्था हमारे बच्चों के लिये बोझिल होती जा रही है। यदि वास्तव में हम अपने बच्चों का सर्वांगीण विकास करना चाहते हैं, तो उन्हें रटने से मुक्ति दिलवानी होगी। उन्हें किताबों के बोझ एवं खौफ से मुक्त करने हेतु स्वाभाविक तरीके से शिक्षा देनी होगी। ऐसी शिक्षा केवल मातृभाषा में ही सम्भव है। रोजगार एवं वैश्वीकरण की दुहाई देकर स्वयं को धोखा देने का काम बन्द करना होगा। प्रत्येक अभिभावक का यह कर्तव्य बनता है कि वे टच फीट, मॉम–डैड की अपेक्षा चरण स्पर्श, माता–पिता बोलना सिखाएं। समय रहते हमें यह भी समझना होगा कि अंग्रेजी के पीछे भागने से न केवल बच्चों के कोमल मन पर ही नकारात्मक प्रभाव पड़ता है अपितु यह सोच राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिये भी घातक है। मेरी निजी राय है कि अंग्रेजी माध्यम वाले संस्थानों पर ताले लगाये बिना बात नहीं बन सकती। अंग्रेजी को एक विषय के रूप में पढ़ना ठीक है मगर हर विषय इसी में पढ़ना केवल सनकपन है।

कितने शर्म की बात है कि विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में हिन्दी जैसी समृद्ध भाषा पर राजनीति की जाती है। इसे क्षेत्रवाद की भेंट चढ़ाकर देश में दंगे–फसाद करवाये जाते हैं। देश की आय का एक बड़ा भाग हिन्दी की प्रगति के नाम कर देने, हिन्दी दिवस मना लेने और इसके उत्थान पर केवल भाषण–भाषण खेलने से कुछ नहीं होगा। केन्द्र एवं राज्य सरकारों का हिन्दी के सम्मान एवं विकास के लिये साफ नीयत से काम करना होगा तभी देश को अंग्रेजी की गुलाम मानसिकता से छुटकारा मिल सकता है।

# मंजरी आम की

आलेख

राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक
राजभाषा विभाग, राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

अपने सरकारी क्वार्टर की छत से सटे दो आम के पेड़ हमें क्वार्टर की चाबी के साथ विरासत में मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सौभाग्य इसलिए कि इस पेड़ में लगने वाले और हमारी पहुँच में आ सकने वाले सारे फल हमें सुलभ होंगे। इस खुशफ़हमी के साथ ही सही पर मुझे इन दोनों आम के पेड़ों में फल का इन्तजार रहता है। वैसे मैं बालपन से ही प्रकृति का प्रेमी रहा हूँ। चलते फिरते मेरी नजर पेड़ों, उनके फलों, फूलों, और ऋतु के साथ होने वाले परिवर्तनों पर जरूर रहती है। इस प्रवृत्ति से मुझे अधिकांश पौधों की फौरी जानकारी भी हो चुकी है। बचपन में मुझे पौधे के बीज बोने, उससे अंकुरण फूटने, नई–नई पत्ती निकलने और बड़ा वृक्ष बनने की मंद गति देखना बहुत अच्छा लगता था। अपने 23 वर्षों की केन्द्र सरकार की सेवा के दौरान मुझे 19 से अधिक राज्यों में सेवा करने और वहाँ की भौगोलिक स्थिति व वहाँ की प्राकृतिक छटा व पेड़–पौधों–फूल–पत्तियों को देखने का सुअवसर मिल चुका है। अब मुझे यह अहसास होता है कि पेड़ पौधे जीवन दर्शन को भी दिखाते हैं। जिस प्रकार एक बीज विशाल वटवृक्ष बनता है उसी प्रकार एक छोटा बालक अपनी जीवन यात्रा धैयपूर्वक तय करते हुए एक महापुरूष बन सकता है।

मैंने जब से अपनी छत से सटे आम के पेड़ पर मंजरियाँ फूटते देखा है मुझे हिन्दी साहित्य की वे कुछ पंक्तियाँ याद आने लगी हैं, जिनमें इनका बड़े रोचक ढ़ंग से व्याख्यान हुआ है। कवि बुद्धिनाथ ने अपनी कविता 'ओ मेरी मंजरी' में आम की मंजरी पर लिखा है–

''बीज बहारों के पतझर में, तुम बो जाओ,
मेरी शीतल चंदन वाणी, तुम हो जाओ,
ओ मेरी मंजरी आम की।

कवि पंकज कुमार देव ने मंजिरयों पर लिखा है–

''आम मंजरी की मादकता से वसंत है बौराया,

रविन्द्रनाथ टैगोर ने लिखा है–

ओ मंजरी, ओ मंजरी, आमेर मंजरी (मेरी मंजरी)
क्या तुम्हारा दिल उदास है,
तुम्हारी खुशबु में मिलकर;
मेरे गीत सभी दिशाओं में फैलते हैं।

देवेन्द्र कुमार ने अपनी कविता '' आम में बौर आ गए'' में लिखा है–

''आमों में बौर आ गए,
डार–डार फुदकने लगे,
कब के सिर मौर आ गए।''

ओंकार केदिया लिखते हैं–

आम के ये कमजोर बौर, बड़े जिद्दी हैं।
लड़ लेते हैं मौसम से, रह लेते हैं जिन्दा
संभावनाओं से भरे होते हैं।

''आम की बौर''नवसृजन, नवचेतना, नवयुग की शुरूआत का सन्देश देती है। कवियों ने काव्य में सौंदर्य के प्रतीक के रूप में भी इसे संबोधित किया है। अश्वघोष ने अपनी कविता ''आम्र मंजरी'' में लिखा है–

लज्जा के आँचल से, यौवन को ढाँप;

धरती को देखती पसार अंजुरी, सुधियों में फूल गई आम्र–मंजरी।।

मंजरियों से लदे हुए आम की मदमाती, सुगंध वातावरण को ताजा कर देती है। कवयित्री मधु ने ''पहला बौर आम का '' कविता

में ऋतु चक्र परिवर्तन की शुरूआत आम्र मंजरी की कोपलें फूटने से बताई है:–

''सन्देश गतिमय'' ऋतु चक्र के नाम का;

पहला पहला बौर आम का ''

बृजनाथ श्रीवास्तव ने अपनी कविता '' पहले जैसा'' में पहले के युग और वर्तमान युग में अंतर बताने के लिए भी आम्र मंजरी का सहारा लिया है–

''पहले धर–धर आम्र मंजरी की पूजा करते थे,

एक पेड़ की शाखें जैसी सब मिलकर रहते थे,

स्नेहिल मन, वह लोक अब कहाँ पहले जैसा।

हिन्दी साहित्य ने आम की मंजरियों को बसंत ऋतु के प्रारंभ, जीवन में नई उमंग, नई सोच, नव–सृजन के उदय के रूप में उपमित करने का सफल प्रयास किया है। सच ही तो है आम की मंजरियाँ एक ओर जहाँ इसकी ओर आकर्षित होने वाले पक्षियों को रोमांचित करते हैं, उसी प्रकार मनुष्य के अंतर्मन को भी समान रूप से उल्लासित और उन्मादित करने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं। किसी ने क्या खूब लिखा है–

आम है बौराया हुआ,
देखो वसंत है आया हुआ,
पीले–पीले फूल खिले हैं,
भंवरे मस्ती में फूल गए हैं,
मानव है अलसाया हुआ.......

# नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल के सदस्य कार्यालय, उनके लोगो, कार्यालय प्रधान व ई–मेल

| क्र.सं. | समिति के सदस्य कार्यालय का नाम एवं पता | कार्यालय का लोगो | कार्यालय प्रधान का नाम व ई–मेल |
|---|---|---|---|
| 1 | निदेशक एवं कुलपति, भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (एन.डी.आर.आई), अग्रसैन चौक करनाल, हरियाणा, पिन–132001 (सदस्य एवं समन्वय कार्यालय) | | डा. आर.आर.बी.सिंह, निदेशक एवं अध्यक्ष, नराकास, करनाल। dir.ndri@gmail.com |
| 2 | निदेशक, भाकृअनुप–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (सीएसएसआरआई), काछवा रोड, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | | डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा, निदेशक director.cssri@icar.gov.in |
| 3 | निदेशक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, पी.बी.129, बलड़ी बाईपास, जीटी रोड, करनाल, हरियाणा, पिन–132001 | | डा. रमेश कुमार विज, निदेशक director.nbagr@icar.gov.in |
| 4 | निदेशक, भाकृअनुप–भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान पी.बी.158, कुंजपुरा रोड, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | | डा. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक director.iiwbr@icar.gov.in |
| 5 | अध्यक्ष, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केन्द्र, कुंजपुरा रोड, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | | डा. वी.के.पण्डिता, अध्यक्ष head_karnal@iari.res.in |
| 6 | अध्यक्ष, भाकृअनुप–गन्ना प्रजनन संस्थान क्षेत्रीय केन्द्र, पी.बी.52, अग्रसेन मार्ग, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | | डा. नीरज कुलश्रेष्ठ, अध्यक्ष headsbirc@gmail.com |
| 7 | कार्यपालक अभियन्ता(सिविल), केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, केन्द्रीय मंडल, एनडीआरआई परिसर करनाल, हरियाणा, पिन–132001 | | श्री चरणजीत पसरीचा, कार्यपालक अभियंता(सिविल) |
| 8 | कार्यपालक अभियन्ता(विद्युत), करनाल केन्द्रीय विद्युत डिविजन, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, 208, डी.एच.एस.आई.आई.डी.सी., सेक्टर–3, करनाल, हरियाणा, पिन–132001 | | श्री सुखबीर सिंह राणा, कार्यपालक अभियंता(विद्युत) cpwdckarnal@gmail.com |
| 9 | कार्यालय प्रधान आयकर आयुक्त, सैक्टर–12, करनाल–132001 | | श्री रामेश्वरम सिंह, प्रधान आयकर आयुक्त cit-knl-hry@gov.in |
| 10 | क्षेत्रीय आयुक्त, कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, उप क्षेत्रीय कार्यालय, भविष्य निधि भवन, एसीओ 5–8, सेक्टर–12, अरबन स्टेट, करनाल, हरियाणा, पिन–132001 | | श्री अमित सिंगला, क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त–1 ro.karnal@epfindia.gov.in |
| 11 | प्रवर अधीक्षक डाकघर(सीनियर सुपरिन्टेंडेंट ऑफ पोस्ट ऑफिसेज), करनाल मण्डल, जीपीओ–करनाल, जिला–करनाल, हरियाणा, पिन–132001 | | श्री जे.के. गुलाटी, प्रवर अधीक्षक (डाकघर) ssposknl.dop@gmail.com |
| 12 | मुख्य चिकित्सा अधिकारी, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, सरकारी चिकित्सा सामग्री भंडार, स्वास्थ्य मंत्रालय, करनाल– 132001 | | डा. मो0 मुस्तकीम, मुख्य चिकित्सा अधिकारी(एनएफएसजी) gmsdkarnal@gmail.com |
| 13 | वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी, राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय क्षेत्र संकार्य प्रभाग, सेक्टर–6, एससीएफ 92, अरबन स्टेट, मुख्य बाजार करनाल हरियाणा, पिन–132001 | | श्री सतपाल, वरिष्ठ सांख्यिकी अधिकारी, (प्रभारी) fodsro.knl@gmail.com |
| 14 | रक्षा पेंशन संवितरण अधिकारी, 159, शक्ति कॉलोनी, माल रोड, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | | श्री राजीव गाबा, रक्षा पेंशन संवितरण अधिकारी dpdokarnal.cgda@nic.in |
| 15 | उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी, गृह मंत्रालय, भारत सरकार,हाउस नं. 17–बीपी सेक्टर–8, अरबन स्टेट, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | | श्री रतन सिंह ढ़ाकला, उप केन्द्रीय आसूचना अधि.dhakla29@rediffmail.com |

| | | |
|---|---|---|
| 16 | स्टेशन अधीक्षक, करनाल रेलवे स्टेशन, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | श्री नरेन्द्र कुमार, स्टेशन मास्टर adenkun55@gmail.com |
| 17 | सहायक श्रम आयुक्त(केन्द्रीय), 32, बैंक कॉलोनी, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | मो0 रजी आलम खाँ, सहा0 श्रम आयुक्त alcknlclc.chd@nic.in |
| 18 | क्षेत्रीय निदेशक, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, 06, सुभाष कॉलोनी, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | डा. पूनम कुमारी सिंह, क्षेत्रीय निदेशक rckarnal@ignou.ac.in |
| 19 | प्राचार्य, सैनिक स्कूल कुंजपुरा, करनाल, हरियाणा, पिन–132023 | कर्नल वी.डी.चन्दौला, प्राचार्य sai_kunj@yahoo.com |
| 20 | प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय–करनाल, जिला सुधार गृह के निकट, कैथल रोड, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | श्री राज कुमार, प्राचार्य kvkarnal@gmail.com |
| 21 | प्राचार्य,जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल, हरियाणा, पिन–132001 | श्री जसराम सिंह यादव, प्राचार्य jnvkarnal2009@gmail.com |
| 22 | क्षेत्र प्रबन्धक, भारतीय खाद्य निगम, जिला कार्यालय, काछवा रोड, करनाल, हरियाणा, पिन–132001 | श्री रवि यादव, क्षेत्रीय प्रबन्धक karanahr.fci@nic.in |
| 23 | वरिष्ठ सहायक प्रबन्धक, केन्द्रीय भण्डार गृह(प्रथम), केन्द्रीय भण्डारण निगम, (सेन्ट्रल वेयर–हाउसिंग कॉर्पोरेशन), पुरानी अनाज मण्डी के पास, मटक माजरी, करनाल, हरियाणा, पिन– 132001 | श्री कुणाल श्रीधर, वरिष्ठ सहायक प्रबन्धक kunalsridhar@gmail.com |
| 24 | क्षेत्र प्रबन्धक, राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड, प्लॉट नं 425–426, सेक्टर–3, करनाल, पिन–132001 | श्री मदन पाल, क्षेत्रीय प्रबन्धक amnsckarnal@gmail.com |
| 25 | निदेशक, एम.एस.एम.ई. विकास संस्थान, आई.टी.आई. के पास, करनाल, हरियाणा, पिन–132001 | श्री मेजर सिंह, निदेशक dcdi-karnal@dcmsme.gov.in |
| 26 | महाप्रबन्धक, दूरसंचार, भारत संचार निगम लि0, सेक्टर 8, अरबन स्टेट, करनाल, हरियाणा, पिन–132001 | श्री सुदीप कुमार, प्रधान महाप्रबन्धक gmtd_karnal_har@bsnl.co.in |
| 27 | निदेशक, प्रसार भारती, (भारत का लोक सेवा प्रसारक), दूरदर्शन अनुरक्षण केन्द्र, करनाल, सेक्टर–3, हरियाणा, पिन कोड–132001 | श्री अनिल वधावन, सहायक निदेशक dmcknl@rediffmail.com |
| 28 | वरिष्ठ मंडल प्रबंधक, भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, करनाल हरियाणा, पिन–132001 | श्री जोगेन्द्र कुमार, वरिष्ठ मंडल प्रबन्धक pir.karnal@licindia.com |
| 29 | उप महाप्रबन्धक, ओरियण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स–कोड 8510, क्लस्टर कार्यालय, 97, पहली मंजिल, सोनीपत रोड, रोहतक, हरियाणा, पिन–124001 | श्री राम जनम वर्मा, उप महाप्रबंधक cmo-bb-hyn@obc.co.in |
| 30 | वरिष्ठ मंडल प्रबन्धक, दि न्यू इंडिया एश्योरंस कं.लिमि., मंडलीय कार्यालय, जीटी रोड, गगन बिल्डिंग, बस स्टेंड के सामने, करनाल–132001. | श्री अनिल कु.भोला, वरिष्ठ मंडल प्रबन्धक anil.bhola@newindia.co.in |
| 31 | वरिष्ठ मंडलीय प्रबन्धक, ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडलीय कार्यालय, उन्नीस–226, जीटी रोड, बस स्टेंड के सामने, करनाल 132001. | श्री महावीर सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक mahavir.singh@orientalinsurance.co.in |
| 32 | मण्डलीय प्रबन्धक, नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमि0, मंडलीय कार्यालय, संतोख मार्केट, रेलवे रोड, करनाल, हरियाणा, पिन–132001 | श्री समीर धवन, मण्डलीय प्रबन्धक sameer.dhawan@nic.co.in |
| 33 | वरिष्ठ मंडल प्रबन्धक, यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमि0, मंडल कार्यालय, जीटी रोड, बस अड्डे के पास, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | श्री अश्विनी ऋषि, वरिष्ठ मंडल प्रबन्धक ashwanirishi@uiic.co.in |

| | | |
|---|---|---|
| 34 | मंडल प्रबन्धक, यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमि0, मोटर डीलर कार्यालय, कोड 112300, एससीओ 14, प्रथम मंजिल, सेक्टर 3, नमस्ते चौक के निकट, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | श्री वीरेन्द्र कुमार खर, मंडलीय प्रबन्धक virenderkhar@uiic.co.in |
| 35 | वरिष्ठ प्रबन्धक, कॉर्पोरेशन बैंक, मुख्य शाखा, महफिल बिल्डिंग, जी.टी.रोड, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | श्री कुलदीप तिवारी, मुख्य प्रबन्धक cb0548@corpbank.co.in |
| 36 | वरिष्ठ प्रबन्धक, इण्डियन ओवरसीज बैंक, कर्ण–गेट, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | श्री सुशील दहिया, वरिष्ठ प्रबन्धक iob1414@iob.in |
| 37 | उप महाप्रबन्धक, केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, बेसाइट–17,18, सेक्टर–12, करनाल, हरियाणा–132001 | श्री अमरजीत सिंह, उप महाप्रबन्धक dgmscokar@canarabank.com |
| 38 | वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबन्धक, पंजाब नैशनल बैंक, मंडल कार्यालय, सेक्टर–12, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | श्री के. के. सिंगला, वरिष्ठ क्षेत्रीय प्रबन्धक coknl@pnb.co.in |
| 39 | सहायक महाप्रबन्धक, भारतीय स्टेट बैंक, मुख्य शाखा, शक्ति कॉलोनी, माल रोड, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | श्री गगन कुमार श्रीवास्तव सहायक महाप्रबंधक sbi.00665@sbi.co.in |
| 40 | सहायक महाप्रबन्धक, यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, क्षेत्रीय कार्यालय, प्रथम मंजिल, आसाराम मार्केट, मॉडल टाउन, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | श्री नवनीत कुमार, क्षेत्र प्रमुख mgrolrokarnal@unionbankofindia.com |
| 41 | उप महाप्रबन्धक, बैंक ऑफ बड़ौदा, नमस्ते चौक, डिवेंचर होटल के सामने, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | श्री सत्य प्रकाश, सहायक महाप्रबंधक rm.karnal@bankofbaroda.com |
| 42 | मुख्य प्रबन्धक, मुख्य शाखा, बैंक ऑफ इण्डिया, मुख्य शाखा, फव्वारा चौक, एर्थ प्लेनेट होटल के पास, मुगल कनाल, करनाल,पिन–132001. | श्री अनिल कुमार दुर्गा, मुख्य प्रबंधक karnal.chandigarh@bankofindia.co.in |
| 43 | उप महाप्रबन्धक, इण्डियन बैंक, अंचल कार्यालय, एससीओ 244–245, सेक्टर–12, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | श्रीमती सविता रानी, उप महाप्रबंधक zokarnal@indianbank.co.in |
| 44 | वरिष्ठ प्रबन्धक, इलाहाबाद बैंक, एससीएफ–89, 90, सेक्टर–6, करनाल, हरियाणा, पिन – 132001. | श्री आशीष जिन्दल, वरिष्ठ प्रबंधक zochd1947@gmail.com |
| 45 | वरिष्ठ प्रबन्धक, आन्ध्रा बैंक, उन्नीस–379, गगन बिल्डिंग, बस स्टेंड के सामने, जीटी रोड, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | श्री अभिषेक चौधरी, वरिष्ठ प्रबंधक bm1135@andhrabank.co.in |
| 46 | सहायक महाप्रबन्धक,सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, मुख्य शाखा, कोड–0381, जीटी रोड, माता दुर्गा भवानी मन्दिर, बस स्टेंड के निकट, करनाल | श्री तेजेन्द्र सिंह सोहेल, सहायक महाप्रबंधक bmchan0381@centralbank.co.in |
| 47 | वरिष्ठ शाखा प्रबन्धक, बैंक ऑफ महाराष्ट्र, शाखा कोड–0444, अम्बेडकर चौक, जीटी रोड, करनाल–132001 | श्री रघुवीर सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक brmgr444@mahabank.co.in |
| 48 | वरिष्ठ प्रबन्धक, सिंडिकेट बैंक, मुख्य शाखा, गोविन्द नगर, पुरानी सब्जी मंडी के पास, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | श्री अनिल कुमार अनेजा, वरिष्ठ महाप्रबंधक br.8250@syndicatebank.co.in, |
| 49 | वरिष्ठ प्रबन्धक(मार्केटिंग), नेशनल फर्टिलाजर्स लिमिटेड, एससीओ–12, सेक्टर–8, फर्स्ट फ्लोर, मुख्य बाजार, करनाल, पिन–132001 | श्री एस.एस.पोशवाल, वरिष्ठ प्रबंधक (विपणन) nflaopanipat@gmail.com |
| 50 | जिला युवा समन्वयक, नेहरू युवा केन्द्र संगठन, क्षेत्रीय केन्द्र, कोठी नं.229, न्यू चार चमन, महावीर दल हॉस्पिटल के पास, कुंजपुरा रोड, करनाल | श्रीमती मधु चौधरी, जिला युवा समन्वयक nykskarnal@gmail.com |
| 51 | उप महाप्रबन्धक, यूको बैंक, हरियाण अंचल कार्यालय, करनाल, दुर्गा भवन मंदिर कॉम्प्लेक्स, जी.टी.रोड, बस स्टेंड के पास, करनाल, हरियाणा, पिन–132001. | श्री आई.एस. तुलसी, उप महाप्रबंधक zo.haryana@ucobank.co.in |

# नराकास करनाल द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु वार्षिक नराकास पुरस्कार एवं शील्ड (2017-18) से सम्मानित कार्यालय
## (12 जून 2018 को समिति की छमाही बैठक में सम्मानित)

### केन्द्रीय कार्यालय

| क्र.सं. | कार्यालय का नाम | पुरस्कार |
|---|---|---|
| 1. | एम.एस.एम.ई.—विकास संस्थान, करनाल | प्रथम |
| 2. | जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल | प्रथम |
| 3. | सहायक श्रम आयुक्त(केन्द्रीय), करनाल | द्वितीय |
| 4. | कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल | तृतीय |
| 5. | केन्द्रीय विद्यालय, करनाल | प्रोत्साहन |
| 6. | भारत सरकार मुद्रणालय, नीलोखेड़ी, करनाल | प्रोत्साहन |
| 7. | प्रधान आयकर आयुक्त, करनाल | प्रोत्साहन |

### संस्थान

| क्र.सं. | कार्यालय का नाम | पुरस्कार |
|---|---|---|
| 1. | भाकृअनुप—राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल | प्रथम |
| 2. | भाकृअनुप—केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल | प्रथम |
| 3. | भाकृअनुप—राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल | द्वितीय |
| 4. | भाकृअनुप—भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल | द्वितीय |
| 5. | भाकृअनुप—भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय स्टेशन, करनाल | तृतीय |
| 6. | भाकृअनुप—गन्ना प्रजनन संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल | तृतीय |

### बैंक

| क्र.सं. | कार्यालय का नाम | पुरस्कार |
|---|---|---|
| 1. | यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल | प्रथम |
| 2. | केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल | प्रथम |
| 3. | पंजाब एण्ड सिंध बैंक, आंचलिक कार्यालय, करनाल | द्वितीय |
| 4. | ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स, क्लस्टर कार्यालय, करनाल | तृतीय |
| 5. | बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल | प्रोत्साहन |
| 6. | पंजाब नैशनल बैंक, मंडल कार्यालय, करनाल | प्रोत्साहन |

### निगम एवं लिमिटेड

| क्र.सं. | कार्यालय का नाम | पुरस्कार |
|---|---|---|
| 1. | भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, करनाल | प्रथम |
| 2. | भारतीय खाद्य निगम, जिला कार्यालय, करनाल | द्वितीय |
| 3. | दि न्यू इंडिया एश्यारेंस कंपनी लिमिटेड, मंडलीय कार्यालय, करनाल | तृतीय |
| 4. | युनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडल कार्यालय, करनाल | प्रोत्साहन |
| 5. | नेशनल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड, मंडलीय कार्यालय, करनाल | प्रोत्साहन |
| 6. | केन्द्रीय भण्डार गृह—एक, केन्द्रीय भण्डारण निगम, करनाल | प्रोत्साहन |

# न.रा.का.स. करनाल के अध्यक्षीय कार्यालय भाकृअनुप-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के विभिन्न राजभाषा कार्यकलाप (2018-19)

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में राजभाषा हिंदी के प्रचार, प्रसार एवं कार्यान्वयन हेतु संस्थान में वर्ष 1979 में राजभाषा एकक की स्थापना की गई। संस्थान में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं के नियमानुसार अनुपालन एवं कार्यान्वयन के लिए संस्थान के राजभाषा एकक में वर्ष 1988, 1989 एवं 2011 में क्रमशः हिन्दी अनुवादक, सहायक निदेशक एवं उप निदेशक के पद सृजित किए गए। राजभाषा एकक द्वारा संस्थान के अधिकारियों, वैज्ञानिकों, मंत्रालयिक स्टाफ, तकनीकी स्टाफ आदि को राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए हर संभव सहयोग भी प्रदान किया जा रहा है।

## विभिन्न गतिविधियाँ

- संस्थान में गठित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष में चार बैठकें प्रत्येक तिमाही में आयोजित की गईं। इन बैठकों में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में संस्थान की प्रगति का आकलन किया जाता है एवं भावी कार्यक्रमों हेतु कार्य–योजना तैयार कर उन्हें कार्यान्वित किया जाता है। रिपोर्टाधीन अवधि में दि.19.3.2018, 27.6.2018, 9.10.2018 व 12.12.2018 को तिमाही बैठकों का आयोजन किया गया।
- राजभाषा नियम 1976 के नियम–11 का अनुपालन करते हुये संस्थान द्वारा सभी प्रकार के मानक फार्मों एवं स्टेशनरी सामान आदि को द्विभाषी रूप में प्रयोग करना सुनिश्चित किया जा रहा है।
- राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को सतत् बढ़ाने एवं कर्मचारियों की सरकारी कामकाज में राजभाषा के प्रयोग में होने वाली झिझक को दूर करने के लिए प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।
- संस्थान में 14.9.2018 से 13.10.2018 तक हिन्दी चेतना मास का आयोजन किया गया। दिनाँक 14 सितंबर 2018 को हिन्दी दिवस समारोह एवं 10.10.2018 को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।
- वर्ष 2017–18 की वार्षिक मूल हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता में नियमानुसार 10 सुपात्र कर्मचारियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्रों से पुरस्कृत किया गया।
- वर्ष 2017–18 की ''वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों की मूल हिंदी लेखन प्रतियोगिता'' के अंतर्गत पात्र वैज्ञानिकों/तकनीकी अधिकारियों आदि को नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्रों से सम्मानित किया गया।
- हर वर्ष की भांति संस्थान की वार्षिक गृह पत्रिका ''दुग्ध गंगा'' एवं तिमाही न्यूज लेटर ''डेरी समाचार'' तथा नराकास करनाल के अध्यक्षीय कार्यालय के रूप में समिति की वार्षिक गृह पत्रिका ''कर्णोदय'' को पूर्णतः हिन्दी में प्रकाशित किया जा रहा है।
- संस्थान के वैज्ञानिकों से प्राप्त वैज्ञानिक एवं लोकप्रिय लेख, छात्रों के शोध सारांश, वार्षिक प्रतिवेदन, प्रशासनिक पत्र, परिपत्र, ज्ञापन, विभिन्न समारोहों की प्रेस विज्ञप्ति, गणमान्य अतिथियों, मंत्रियों आदि के संबोधन, व्याख्यान एवं अन्य सामग्री का अनुवाद कार्य संस्थान के राजभाषा एकक द्वारा किया जा रहा है।
- गैर हिन्दी क्षेत्रों से अध्ययन हेतु आए एम.एससी./एम.टेक./पीएच.डी. के छात्र जिन्हें मैट्रिक स्तर तक हिंदी का ज्ञान नहीं है उन्हें हिंदी शिक्षण प्रदान किया गया।
- राजभाषा एकक द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित ''बृहत प्रशासनिक शब्दावली'' की प्रतियाँ संस्थान के कर्मचारियों को उपलब्ध कराई गई हैं। संस्थान में अंग्रेजी टाइपिस्टों/आशुलिपिकों को हिन्दी टाइपिंग सीखने हेतु निरन्तर प्रोत्साहित किया जा रहा है तथा डेस्क प्रशिक्षण के द्वारा कंप्यूटर पर हिंदी टाइपिंग सिखाई जा रही है।

1. नराकास करनाल के द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल को न.रा.का.स. वार्षिक पुरस्कार 2017–18 के अंतर्गत ''प्रथम स्थान'' व राजभाषा ट्राफी का सम्मान प्राप्त हुआ।
2. नराकास करनाल के द्वारा उत्कृष्ट पत्रिका पुरस्कार प्रतियोगिता(2017–18) में भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल की पत्रिका ''दुग्ध गंगा(2017–18) को ''द्वितीय पुरस्कार'' व ट्राफी का सम्मान प्रदान किया गया।
3. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल द्वारा संस्थान को वार्षिक नराकास राजभाषा पुरस्कार 2017–18 पुरस्कार योजना के अंतर्गत ''प्रथम स्थान'' व राजभाषा शील्ड से सम्मानित करते हुए संस्थान के निदेशक डा.आर.आर.बी. सिंह को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया।

# भाकृअनुप-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल : अर्जित राजभाषा पुरस्कार

| | |
|---|---|
| **राजभाषा शील्ड 2017–18**<br>नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल<br>(भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग)<br>के द्वारा संस्थान को राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय<br>कार्य हेतु ''नराकास राजभाषा पुरस्कार (वर्ष 2017–18)<br>**''प्रथम पुरस्कार''** | |
| **उत्कृष्ट पत्रिका पुरस्कार 2017–18**<br>नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल<br>(भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग)<br>के द्वारा संस्थान की पत्रिका<br>''दुग्ध गंगा, 7वाँ अंक (2017–18)'' को<br>**''उत्कृष्ट पत्रिका का द्वितीय पुरस्कार''** | |
| **राजभाषा शील्ड 2016–17**<br>नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, करनाल<br>(भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग)<br>के द्वारा संस्थान को राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय<br>कार्य हेतु ''नराकास राजभाषा पुरस्कार (वर्ष 2016–17)<br>**''प्रथम पुरस्कार''** | |

4. नराकास करनाल के द्वारा संस्थान के श्री राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक (राजभाषा) को प्रमाण पत्र दि. 12.6.2018 जारी किया गया, चूंकि उन्होंने अपने कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार व कार्यान्वयन की दिशा में सराहनीय कार्य किया।

5. जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल के प्राचार्य ने संस्थान के श्री राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक(राजभाषा) को प्रशस्ति प्रमाणपत्र दि. 14.3.2018 से सम्मानित किया, चूंकि उनके द्वारा नराकास करनाल के सदस्य सचिव के रूप में करनाल स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार व कार्यान्वयन की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करके अनुकरणीय कार्य किया जा रहा है।

6. प्रधान महाप्रबंधक दूरसंचार, भारत संचार निगम लिमिटेड, करनाल के द्वारा संस्थान के श्री राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक(राजभाषा) को प्रमाणपत्र दि.29.5.2018 के द्वारा सम्मानित किया गया चूंकि उन्होंने बी.एस.एन.एल. कार्यालय, करनाल में ''राजभाषा प्रबंधन'' विषय पर पावरप्वाइंट प्रस्तुतीकरण के साथ हिन्दी कार्यशाला में प्रभावी व्याख्यान दिया।

7. बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल के महाप्रबंधक ने संस्थान के श्री राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक(राजभाषा) को अभिनंदन प्रमाणपत्र दि.28.12.2018 से सम्मानित किया गया, चूंकि उन्होंने उनके बैंक में नराकास करनाल के बैनर तले आयोजित अंतर बैंक संगोष्ठी(विषय : राजभाषा का भाषायी संदर्भ) में करनाल में स्थित 5 बैंकों के पदाधिकारियों व विपणन अधिकारियों को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित किया।

8. दयाल सिंह कॉलेज, करनाल के द्वारा संस्थान के श्री राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक(राजभाषा) को प्रमाणपत्र दि. 3.10.2018 से सम्मानित किया गया, चूंकि उन्होंने 12 सितंबर 2018 को मुख्य वक्ता के रूप में ''राष्ट्रभाषा हिन्दी : चुनौती एवं सम्भावनाएं'' विषय पर दयाल सिंह कॉलेज के विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।

9. प्रबंधक, भारतीय खाद्य निगम, जिला कार्यालय, करनाल के द्वारा संस्थान के श्री राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक(राजभाषा) को प्रमाणपत्र दि. 14.11.2018 से सम्मानित किया गया, चूंकि उन्होंने 28 सितंबर 2018 को मुख्य वक्ता के रूप में ''राजभाषा हिन्दी का प्रेरणा व प्रोत्साहन के माध्यम से कार्यान्वयन'' विषय पर उनके कार्यालय के पदाधिकारियों व कर्मचारियों को सम्बोधित किया।

10. निदेशक, एमएसएमई विकास संस्थान, करनाल के द्वारा संस्थान के श्री राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक(राजभाषा) को प्रमाणपत्र दि. 14.11.2018 से सम्मानित किया गया, चूंकि उन्होंने 14 सितंबर 2018 को ''हिंदी में ईमेल कैसे करें एवं फाइलों पर हिंदी में टिप्पणियां लिखने में आने वाली कठिनाइयाँ'' विषय पर उनके कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों को सम्बोधित किया।

11. निदेशक, भाकृअनुप–राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल के द्वारा संस्थान के श्री राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक(राजभाषा) को प्रमाणपत्र दि. 25.11.2018 से सम्मानित किया गया, चूंकि उन्होंने 21.6.2018 को ''कार्यालय में पत्रों के मसौदे बनाते समय हिन्दी का प्रयोग' विषय पर उनके कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों को सम्बोधित किया।

12. क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त–1, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल के द्वारा इस संस्थान के श्री राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक(राजभाषा) को प्रमाणपत्र दि. 27.12.2018 से सम्मानित किया गया, चूंकि उन्होंने दिनाँक 27.12.2018 को ''राजभाषा नीति, नियमों व व्यवस्थाओं का प्रबंधन व हिन्दी में ईमेल कैसे तैयार करें' विषय पर आयोजित नगर स्तरीय हिन्दी कार्यशाला में ईपीएफओ व नराकास करनाल के सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों व कर्मचारियों को सम्बोधित किया।

13. अध्यक्ष, नराकास, करनाल के द्वारा श्री राकेश कुमार कुशवाहा, सहायक निदेशक(राजभाषा) को प्रमाणपत्र दि. 30.11.2018 से सम्मानित किया गया, चूंकि नराकास करनाल के द्वारा समिति के सदस्य कार्यालयों के लिए आयोजित की गई समिति की उत्कृष्ट पत्रिका पुरस्कार प्रतियोगिता(2017–18) में भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल की पत्रिका ''दुग्ध गंगा(2017–18) को ''द्वितीय पुरस्कार'' दिलाने में पत्रिका के मुख्य संपादक के रूप में सराहनीय कार्य किया।

14. प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय, करनाल के द्वारा संस्थान के सहायक निदेशक श्री राकेश कुमार को उनके विद्यालय में 4.2.2019 को 5 विद्यालयों के अध्यापकों व 7 बैंकों के अधिकारियों को अंतर कार्यालय संगाष्ठी(विषय–शिक्षण को प्रभावी बनाने में शिक्षक एवं भाषा का योगदान तथा विद्यार्थियों में तनाव प्रबंधन) के द्वारा विद्यार्थियों का रचनात्मक विकास) में विशिष्ट वक्ता के रूप में संबोधित करने के लिए प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया।

15. प्राचार्य, जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा करनाल के द्वारा संस्थान के सहायक निदेशक श्री राकेश कुमार को उनके विद्यालय में 18.2.2019 को 2 विद्यालयों के अध्यापकों व कर्मचारियों को अंतर कार्यालय हिन्दी कार्यशाला–सह–संगोष्ठी में विशिष्ट वक्ता (विषय : भाषा व हिन्दी के द्वारा बच्चों में रचनात्मकता को कैसे बढ़ाया जाए) के रूप में संबोधित करने के लिए प्रमाणपत्र से सम्मानित किया गया।

16. नराकास करनाल के द्वारा आयोजित की गई विभिन्न प्रतियोगिताओं में संस्थान के निम्नलिखित विजेताओं को पुरस्कार प्राप्त हुए–

क. भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, करनाल द्वारा 27 अप्रैल, 2018 को आयोजित की गई नगरस्तरीय हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में संस्थान के डा. चित्रनायक, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने तृतीय पुरस्कार का सम्मान अर्जित किया।

ख. केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल के द्वारा 25 सितंबर 2018 को आयोजित की गई नगरस्तरीय हिन्दी टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता में संस्थान की सुश्री सोनिका यादव, सहायक ने प्रथम पुरस्कार तथा श्री सूरज सिंह मीणा, कुशल सहायक कर्मचारी ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

### नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल के अध्यक्षीय कार्यालय के रूप में राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल के कार्य

1. संस्थान के द्वारा करनाल की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्षीय कार्यालय के रूप में करनाल स्थित केन्द्र सरकार के 51 सदस्य कार्यालयों को राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार व कार्यान्वयन हेतु मार्गदर्शन प्रदान करने का अतिरिक्त कार्यभार भी बखूबी निर्वहन किया जा रहा है।

2. राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा नराकास करनाल के समन्वय कार्यालय के रूप में संस्थान प्रमुख डा. आर.आर.बी. सिंह, निदेशक महोदय की अध्यक्षता में 12 जून 2018 व 30 नवम्बर 2018 को नगरस्तरीय छमाही समीक्षा बैठकों का आयोजन किया गया। दोनों बैठकों में श्री प्रमोद कुमार शर्मा, उप निदेशक(कार्यान्वयन) गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि के रूप में शामिल हुए। इन छमाही बैठकों में समिति के करनाल स्थित 51 सदस्य कार्यालयों से राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग व कार्यान्वयन की स्थिति की व्यापक रूप से चर्चा की गई।

3. राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा नराकास करनाल के समन्वय कार्यालय के रूप में 12.6.2018 को आयोजित छमाही बैठक में वार्षिक नराकास करनाल पुरस्कार(2017–18) के 25 विजेता कार्यालयों को राजभाषा शील्ड व प्रशस्ति प्रमाणपत्रों से सम्मानित किया गया। राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 25 कार्यालय प्रधानों व 25 राजभाषा अधिकारियों को प्रशस्ति प्रमाणपत्रों से भी सम्मानित किया गया।

4. राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा नराकास करनाल के समन्वय कार्यालय के रूप में 30.11.2018 को आयोजित छमाही बैठक में विभिन्न प्रतियोगिताओं के 9 कार्यालय प्रधानों को राजभाषा शील्ड व प्रशस्ति प्रमाणपत्रों से सम्मानित किया गया। इसी प्रकार विभिन्न प्रतियोगिताओं के 30 विजेताओं को प्रशस्ति प्रमाणपत्रों व नकद पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

## नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल के सचिवालय एवं सदस्य कार्यालयों द्वारा समिति के तत्वावधान में संपन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम(समिति की 12 जून व 30 नवम्बर 2018 को संपन्न छमाही बैठक में सम्मानित)

**उत्कृष्ट राजभाषा अधिकारी पुरस्कार (2017) : श्रीमती नीलम, प्रबंधक (राजभाषा), स्केल–दो, बैंक ऑफ बड़ौदा।**

### भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, करनाल द्वारा 27.4.18 को हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

| क्र. | कार्यालय | पुरस्कार | कार्यालय का नाम |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री सचिन | प्रथम | प्रधान आयकर आयुक्त कार्यालय, करनाल |
| 2 | श्री राजीव | द्वितीय | भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, करनाल |
| 3 | डा. चित्रनायक, वरिष्ठ वैज्ञानिक | तृतीय | भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल |
| 4 | सुश्री कुसुम गाँधी | प्रोत्साहन | भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, करनाल |

## ''उत्कृष्ट पत्रिकाओं हेतु पुरस्कार'' प्रतियोगिता

### उत्कृष्ट वार्षिक गृह पत्रिका श्रेणी (2017–18 में प्रकाशित) पुरस्कार

| क्र. | पत्रिका का नाम | कार्यालय का नाम | स्थान |
|---|---|---|---|
| 1 | गेहूँ एवं जौ स्वर्णिमा( 2017) | भाकृअनुप–भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल | प्रथम |
| 2 | ''दुग्ध गंगा'', 2017–18 | भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल | द्वितीय |
| 3 | ''कृषि किरण'', 2017–18 | भाकृअनुप–केन्द्रीय मृदा एवं लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल | तृतीय |
| 4 | पशुधन प्रकाश, आठवां अंक | भाकृअनुप–राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल | प्रोत्साहन |
| 5 | ''कर्ण ज्योति'', 2017–18 | भारतीय जीवन बीमा निगम, मण्डल कार्यालय, करनाल | प्रोत्साहन |

### उत्कृष्ट प्रशिक्षण पुस्तिका/बुकलेट श्रेणी(2017–18 में प्रकाशित) पुरस्कार

| क्र. | प्रशिक्षण पुस्तिका का नाम | कार्यालय का नाम | स्थान |
|---|---|---|---|
| 1 | प्रशिक्षण पुस्तिका, ''कृषक आय बढ़ाने में नवीनतम गन्ना प्रौद्योगिकियों की भूमिका'' | गन्ना प्रजनन संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल | प्रथम |
| 2 | शीतकालीन फसलों व सब्जियों का बीज उत्पादन(बुकलेट) | भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय स्टेशन, करनाल | द्वितीय |

### उत्कृष्ट ई–पत्रिका(2017–18 में प्रकाशित) पुरस्कार

| क्र | ई–पत्रिका का नाम | कार्यालय का नाम | स्थान |
|---|---|---|---|
| 1 | मधुबन, मार्च–2018, अंक 6 | पंजाब एंड सिंध बैंक, आँचलिक कार्यालय, करनाल | प्रथम |
| 2 | हरिधारा, प्रथम अंक 2018 | यूको बैंक, हरियाणा अंचल कार्यालय, करनाल | द्वितीय |

### ''उत्कृष्ट लेख पुरस्कार (समिति की ''कर्णोदय 2017–18'' पत्रिका में प्रकाशित आलेखो में से चयनित)''

| क्र. | प्रमाणपत्र | आलेख का नाम | रचनाकार | कार्यालय |
|---|---|---|---|---|
| 1 | प्रथम | राजभाषा हिन्दी और अंग्रेजी का द्वंद्व | श्री सोनी कुमार, प्रबंधक(राजभाषा) | पंजाब एंड सिंध बैंक, आँचलिक कार्यालय करनाल |
| 2 | द्वितीय | भारत–एक कहानी | सुश्री दीपशिखा श्रीवास्तव, सहायक श्रेणी–3 | भारतीय खाद्य निगम, जिला कार्यालय, करनाल |
| 3. | तृतीय | पहल(शुरूआत) | श्रीमती ऊषा कत्याल, आशुलिपिक, ग्रेड–1 | एम.एस.एम.ई. विकास संस्थान, करनाल |
| 4. | प्रोत्साहन | जीवन के खट्टे–मीठे अनुभव | श्री मुकेश कुमार तोमर, वरिष्ठ तकनीशियन | दूरदर्शन, करनाल |

## संदेशदायक चित्र प्रतियोगिता(2018–19) का परिणाम

| क्र. | विजेता का नाम व कक्षा | विद्यालय का नाम | स्थान |
|---|---|---|---|
| 1 | सार्थक, कक्षा 5 | केन्द्रीय विद्यालय, करनाल | प्रथम |
| 2 | झलक, कक्षा 9 | केन्द्रीय विद्यालय, करनाल | द्वितीय |
| 3 | अर्चित, कक्षा 8 | दिल्ली पब्लिक स्कूल, करनाल | तृतीय |
| 4 | समीर, कक्षा 7 | केन्द्रीय विद्यालय, करनाल | प्रोत्साहन |

## नगरस्तरीय टिप्पणी एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता (सीएसएसआरआई द्वारा 25.9.18 को संपन्न)

| क्र. | विजेता (सुश्री/श्रीमती/श्री/डा) | कार्यालय का नाम | प्राप्त पुरस्कार |
|---|---|---|---|
| 1 | सोनिका यादव, सहायक | भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल | प्रथम |
| 2 | राकेश कुमार, तकनीकी अधिकारी | भाकृअनुप–राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल | द्वितीय |
| 3 | सुषमा गर्ग, सहायक | भाकृअनुप–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल | तृतीय |
| 4 | दिनेश कुमार, कनिष्ठ अभियंता | केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, करनाल | प्रोत्साहन |
| 5 | मनजीत सिंह भाटिया, सहायक अभियंता | केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, एनडीआरआई कैम्पस, करनाल | प्रोत्साहन |
| 6 | कुलदीप कुमार सिसोदिया, ऋण प्रबंधक | बैंक आफ बड़ौदा, करनाल | प्रोत्साहन |
| 7 | विजय पाल सहरावत, प्राथमिक शिक्षक | केन्द्रीय विद्यालय, करनाल | प्रोत्साहन |
| 8 | ऊषा कत्याल, आशुलिपिक | सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान, करनाल | प्रोत्साहन |
| 9 | जसबीर कौर, सहायक | भाकृअनुप–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल | प्रोत्साहन |
| 10 | सूरज सिंह मीना, कुशल सहायक कर्मचारी | भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल | प्रोत्साहन |
| 11 | करम सिंह, वरिष्ठ लिपिक | भाकृअनुप–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल | प्रोत्साहन |
| 12 | मीना लूथरा, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी | भाकृअनुप–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल | प्रोत्साहन |
| 13 | देवेन्द्र कुमार, तकनीकी सहायक | भाकृअनुप–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल | प्रोत्साहन |
| 14 | दिनिका गोयल, कनिष्ठ दूरसंचार अधिकारी | भारत संचार निगम लिमिटेड, करनाल | प्रोत्साहन |
| 15 | नरेन्द्र कुमार वैद, स0मु0तकनीकी अधिकारी | भाकृअनुप–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल | प्रोत्साहन |
| 16 | सोनिया अरोड़ा, डाक सहायक | भारतीय डाक विभाग मण्डल कार्यालय, करनाल | प्रोत्साहन |
| 17 | मीनाक्षी शर्मा, डाक सहायक | भारतीय डाक विभाग करनाल मण्डल, करनाल | प्रोत्साहन |
| 18 | जोगध्यान, वरिष्ठ लिपिक | भाकृअनुप–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल | प्रोत्साहन |
| 19 | अनिल कुमार शर्मा, व. तक.अधिकारी | भाकृअनुप–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल | प्रोत्साहन |
| 20 | प्रदीप अत्री, कनिष्ठ अभियंता | केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, करनाल | प्रोत्साहन |
| 21 | दिनेश गुगनानी, निजी सचिव | भाकृअनुप–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल | प्रोत्साहन |

## नराकास करनाल के अध्यक्षीय कार्यालय भाकृअनुप–राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में सितंबर–अक्तूबर, 2018 माह में संपन्न राजभाषा उल्लास मास के आयोजन संबंधी रिपोर्ट

संस्थान के निदेशक डा. आर.आर.बी. सिंह के मार्गदर्शन, संस्थान के सभी पदाधिकारियों, वैज्ञानिकों, तकनीशियनों व प्रशासनिक स्टाफ के सतत् सहयोग से संस्थान के द्वारा दिनाँक 14 सितंबर 2018 (हिन्दी दिवस) से प्रारंभ करके राजभाषा हिन्दी उल्लास मास का भव्य आयोजन किया गया। इस मास के दौरान संस्थान के द्वारा हिन्दी हस्ताक्षर अभियान, हिन्दी अनुभव लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी खुला प्रश्न मंच प्रतियोगिता, हिन्दी गीत गायन प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगिता, हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी शोध पत्र पोस्टर प्रदर्शन प्रतियोगिता, हिन्दी ईमेल प्रोत्साहन प्रतियोगिता, उत्कृष्ट प्रभाग/अनुभाग (वैज्ञानिक) राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता, उत्कृष्ट अनुभाग (प्रशासनिक) राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता सहित 10 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं के सभी 157 विजेताओं व प्रतिभागियों को श्रीमती सीमा चोपड़ा, निदेशक(राजभाषा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली की अध्यक्षता में संस्थान में दिनाँक 10.10.2018 को संपन्न भव्य समारोह में प्रमाण पत्रों से सम्मानित किया गया–

### राजभाषा हिन्दी उल्लास मास–2018 में संपन्न विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम

### 1. संस्थान के उत्कृष्ट प्रभाग/अनुभाग को राजभाषा शील्ड हेतु प्रतियोगिता (समीक्षा अवधि : 1.10.2017 से 30.9.2018)

| क्र. | पुरस्कार श्रेणी | चयनित प्रभाग/अनुभाग का नाम |
|---|---|---|
| 1 | उत्कृष्ट प्रभाग(वैज्ञानिक) राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता | डेरी विस्तार प्रभाग, भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल |
| 2 | उत्कृष्ट अनुभाग(वैज्ञानिक) राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता | चारा उत्पादन अनुभाग, भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल |
| 3 | उत्कृष्ट अनुभाग(प्रशासनिक) राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता | स्थापना–4 अनुभाग, भाकृअनुप– राडेअनुसं, करनाल |

### 2. विद्यार्थियों के लिए हिन्दी अनुभव लेखन प्रतियोगिता (17.9.2018)

| क्र. | नाम व पदनाम | कार्यालय का नाम | पुरस्कार |
|---|---|---|---|
| 1 | हेमंत गावंडे, शोध छात्र | पी.एच.डी. द्वितीय वर्ष(दुग्ध रसायनशास्त्र) . | प्रथम |

### 3. नगर स्तरीय हिन्दी गीत गायन प्रतियोगिता (22.9.2018)

| क्र. | नाम व पदनाम | कार्यालय का नाम | पुरस्कार |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री प्रवीण कुमार, अपर श्रेणी लिपिक | भाकृअनुप, राडेअनुसं, करनाल | प्रथम |
| 2 | डा. रतन तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक | भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल | द्वितीय |
| 3 | श्री अनिल वधावन, सहायक निदेशक | दूरदर्शन केन्द्र, करनाल | तृतीय |
| 4 | श्री निखिल बंसल, एस. डब्ल्यू. ओ. | पंजाब नैशनल बैंक, करनाल | प्रोत्साहन |
| 5 | डा. सत्यवीर, प्रधान वैज्ञानिक | भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल | प्रोत्साहन |
| 6 | श्रीमती स्वाति यादव, सहायक | भाकृअनुप, राडेअनुसं, करनाल | प्रोत्साहन |
| 7 | डा. निशांत, वैज्ञानिक | भाकृअनुप, राडेअनुसं, करनाल | प्रोत्साहन |
| 8 | श्रीमती कृष्णा आजाद, सहायक | भाकृअनुप, राडेअनुसं, करनाल | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |
| 9 | श्रीमती वीना रानी, अपर श्रेणी लिपिक | भाकृअनुप, राडेअनुसं, करनाल | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |
| 10 | श्री निशांत, एस डब्ल्यू ओ | पंजाब नैशनल बैंक, करनाल | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |
| 11 | श्री लखविन्द्र, अपर श्रेणी लिपिक | भाकृअनुप, राडेअनुसं, करनाल | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 12 | श्री गुरमीत कपूर, वरिष्ठ प्रबंधक | पंजाब नैशनल बैंक, करनाल | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |
| 13 | श्री मनजीत, अवर श्रेणी लिपिक | भाकृअनुप, राडेअनुसं, करनाल | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |
| 14 | श्री बदन पासवान, कुशल सहायक कर्मचारी | भाकृअनुप, राडेअनुसं, करनाल | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |
| 15 | श्रीमती रेशमा, कुशल सहायक कर्मचारी | भाकृअनुप, राडेअनुसं, करनाल | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |

### 4. हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता (25.9.2018)

| क्र. | नाम व पदनाम | कार्यालय का नाम | पुरस्कार |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री कुणाल कालड़ा, वित्त एवं लेखाधिकारी | ऑडिट अनुभाग, राडेअनुसं, करनाल | प्रथम पुरस्कार |
| 2 | श्री मुकेश कुमार दुआ, सहा.प्रशा. अधिकारी | स्थापना–5 अनुभाग, राडेअनुसं, करनाल | द्वितीय पुरस्कार |
| 3 | श्रीमती अल्पना, अपर श्रेणी लिपिक | ऑडिट अनुभाग, राडेअनुसं, करनाल | तृतीय पुरस्कार |
| 4 | श्री मंजीत सिंह, अवर श्रेणी लिपिक | नकदी एवं देयक अनुभाग–1, राडेअनुसं, करनाल | प्रोत्साहन पुरस्कार |
| 5 | सुश्री सोनिका यादव, सहायक | ऑडिट अनुभाग, भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |
| 6 | श्री रजनीश कुमार, निजी सहायक | ऑडिट अनुभाग, भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |
| 7 | श्री दीपक यादव, वरिष्ठ तकनीशियन | नकदी एवं देयक अनुभाग–1, राडेअनुसं, करनाल | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |
| 8 | श्री सूरज सिंह मीणा, कुशल सहायक कर्मचारी | पशुधन अनुसंधान केन्द्र, राडेअनुसं, करनाल | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |
| 9 | डा. उत्तम कुमार, मुख्य तकनीकी अधिकारी | शस्य विज्ञान, भाकृअनुप–राडेअनुसं, करनाल | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |
| 10 | श्री राम बहादुर वर्मा, तकनीकी सहायक | डेरी अर्थशास्त्र सांख्यिकी व प्रबंधन प्रभाग, राडेअनुसं | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |

### 5. हिन्दी निबंध प्रतियोगिता (26.9.2018)

| क्र. | नाम व पदनाम | प्रभाग / अनुभाग | श्रेणी |
|---|---|---|---|
| 1 | डा.नीलम उपाध्याय, वैज्ञानिक | डेरी प्रौद्योगिकी प्रभाग, राडेअनुसं, करनाल | प्रथम पुरस्कार |
| 2 | डा.चित्रनायक, वरिष्ठ वैज्ञानिक | डेरी अभियांत्रिकी प्रभाग, राडेअनुसं, करनाल | द्वितीय पुरस्कार |
| 3 | सुश्री सोनिका यादव, सहायक | ऑडिट अनुभाग, राडेअनुसं, करनाल | तृतीय पुरस्कार |
| 4 | सुश्री ऋतु दलाल, प्रशासनिक अधिकारी | क्रय अनुभाग, राडेअनुसं, करनाल | प्रोत्साहन पुरस्कार |
| 5 | श्री रमीन्द्र कुमार, कुशल सहायक कर्मचारी | डेरी सूक्ष्मजीवाणु प्रभाग, राडेअनुसं, करनाल | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |
| 6 | श्री रामधारी, सहायक | सं. निदेशक (अनुसंधान) कार्या. राडेअनुसं, करनाल | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |
| 7 | श्री रजनीश कुमार, निजी सहायक | ऑडिट अनुभाग, राडेअनुसं, करनाल | प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र |

### 6. हिन्दी शोधपत्र / पोस्टर प्रदर्शन प्रतियोगिता (27.9.2018)

| क्र. | प्रस्तुतकर्ता का नाम व पदनाम | शीर्षक / विषय | पुरस्कार |
|---|---|---|---|
| 1 | नीलम उपाध्याय, स्वाति तिवारी, आशीष कुमार सिंह, रविन्द्र कुमार, मल्होत्रा, हेमंत एवं कुलदीप | गाजर जैव–अपशिष्ट से निकाले गए 'हरित' कैरोटेनोइड की पायसन आधारित वितरण प्रणाली | प्रथम |
| 2 | सुशील कुमार यादव, दिग्विजय सिंह, सतीश डाकोरे, भारती शर्मा, सचिन गुप्ता, आशुतोष एवं नितिन त्यागी | मक्का साइलेज गुणवत्ता पर लेक्टोबेसिलस फरमेंटम और बाहरी एन्जाइमों का प्रभाव | द्वितीय |
| 3 | अल्का परमार, विवेक शर्मा एवं सुमित अरोड़ा (डेयरी रसायन प्रभाग) | दूध में लैक्टोपरओक्सीडेज प्रणाली को सक्रिय करने वाले घटक (हाइड्रोजन पेरोक्साइड का खाद्य ग्रेड़ ऑक्सीडेटिव एंजाइमों द्वारा स्वस्थाई उत्पादन) | तृतीय |
| 4 | ज्योति हांडगे, गंगा सहाय मीणा, एवं मिनानाथ गिरी | भैंस के दूध से निर्मित घुलनशील दूध प्रोटीन सान्द्रित पाउडर का उत्पादन एवं निरूपण | तृतीय |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 5 | डा. सचिन कुमार, डा.नितिन त्यागी एवं डा. ए.के.त्यागी (पशु पोषण प्रभाग) | पौष्टिक–औषधीय पदार्थों एवं प्रोबायोटिक द्वारा नवजात पशु शिशुओं की प्रतिरक्षा प्रणाली पर प्रभाव एवं अतिसार रोग का निदान | प्रोत्साहन |
| 6 | संजय चौधरी, एम. एल. कम्बोज, नितिन रहेजा, मायामिता सैनी, निशांत कुमार एवं रोहित कुमार | सांड द्वारा जैव उत्तेजना (बायोस्टिमूर्लशन) का साहीवाल बछड़ियों के शारीरिक भार वृद्धि दर एवं यौन परिपक्वता पर प्रभाव | प्रोत्साहन |
| 7 | डा. अश्विनी कुमार रॉय, सुबोधकांत एम मिश्रा. एवं डा.महेंद्र सिंह (पशु शरीर–क्रिया विभाग) | साहीवाल गायों की दुग्धावस्था को प्रभावित करने वाले गैर–आनुवंशिक कारकों, उपचय संबंधी प्राचलों एवं हार्मोनों का अध्ययन | प्रतिभागिता प्रमाणपत्र |
| 8 | सुहैल हकीम खां, दीपांजन मिश्रा, सुनीता मीणा, सुमन कपिला एवं राजीव कपिला | ऊँटनी के दूध से प्राप्त प्रोटीन हाइड्रोलाइजेट का स्तनपायी अग्नाशयी कोशिकाओं के प्रसार और इंसुलिन स्त्राव पर प्रभाव | –तदैव– |
| 9 | फूल सिंह हिन्डोरिया, राजेश कुमार मीणा, मगन सिंह, राकेश कुमार, हरदेव राम एवं बिजेन्द्र कुमार मीणा | नैपियर +लोबया अन्तरवर्षीय फसल कम लागत में अधिक गुणवत्तायुक्त हरे चारे का उत्पादन | –तदैव– |
| 10 | नितिन रहेजा, निशांत कुमार, संजय चौधरी, हिमांशु पांडे, अंजलि अग्रवाल एवं एसएस लठवाल | गर्मी तनाव के दौरान करण फ्रीज गायों में फालिकुलर सिस्ट की दर पर बीटेन अनुपूरण का प्रभाव | –तदैव– |
| 11 | गोविन्द मकराना, राजेन्द्र कुमार यादव, राकेश कुमार एवं तारामणि यादव | सिंचाई जल के विभिन्न लवणता स्तरों का द्विउद्देश्यी बाजरे की उपज एवं चारे की गुणवत्ता पर प्रभाव | –तदैव– |
| 12 | नरेन्द्र रोहिला, बीपी.सिंह एवं एस.एम.देव | इंडियन जनरल ऑफ डेरी सांइस–एक बिलियोमैट्रिक अध्ययन | –तदैव– |

### 7. हिन्दी ईमेल प्रोत्साहन प्रतियोगिता (1.9.2018 से 30.9.2018)

| क्र. | नाम व पदनाम | कार्यालय का नाम | पुरस्कार |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री कुणाल कालड़ा, वित्त एवं लेखाधिकारी | ऑडिट अनुभाग, राडेअनुसं, करनाल | प्रथम |
| 2 | डा.नीलम उपाध्याय, वैज्ञानिक | डेरी प्रौद्योगिकी प्रभाग, राडेअनुसं, करनाल | द्वितीय |

**8. खुला प्रश्न मंच प्रतियोगिता (19.9.2018) : 65 विजेताओं को स्टेशनरी सामग्री वितरित की गई।**

**9. राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता(10.10.2018) : 50 विजेताओं को स्टेशनरी सामग्री वितरित की गई।**

**10. हिन्दी हस्ताक्षर अभियान : पूरे मास के दौरान इस अभियान में 300 से अधिक लोगों ने हिन्दी में हस्ताक्षर करने का संकल्प लिया।**

### 11. विविध गतिविधियों हेतु सराहना प्रमाण–पत्र

| क्र. | कर्मचारी का नाम | अनुभाग का नाम | विशेष कार्य |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री प्रवीण कुमार, अपर श्रेणी लिपिक | नकदी एवं देयक अनुभाग–3, राडेअनुसं, करनाल | मंच संचालन |
| 2 | श्रीमती स्वाति यादव, सहायक | नकदी एवं देयक अनुभाग–3, राडेअनुसं, करनाल | मंच संचालन |
| 3 | श्रीमती सीमा रानी, निजी सहायक | डेरी सूक्ष्मजीवाणु प्रभाग, राडेअनुसं, करनाल | हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा |
| 4 | श्री रमीन्द्र कुमार, नि.स.कर्म. | –तदैव– | निबंध में विशिष्ट पुरस्कार |

# नराकास करनाल के सदस्य कार्यालयों की गतिविधियाँ (2018–19)

## 1 राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत यह संस्थान भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसरण में राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का अनुपालन सुनिश्चित कर रहा है। संस्थान में गठित संस्थान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष में चार बैठकें प्रत्येक तिमाही में आयोजित की गई। इन बैठकों में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में संस्थान की प्रगति का आकलन किया जाता है एवं भावी कार्यक्रमों हेतु कार्ययोजना तैयार कर उन्हें कार्यान्वित किया जाता है। रिपोर्टाधीन अवधि में 27.6.18, 9.10.18, 12.12.18 एवं 29. 03.19 को तिमाही बैठकों का आयोजन किया गया। सभी प्रकार के मानक फार्मों एवं स्टेशनरी सामान आदि को द्विभाषी रूप में प्रयोग करना सुनिश्चित किया जा रहा है। राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने एवं कर्मचारियों की सरकारी कामकाज में राजभाषा के प्रयोग में होने वाली झिझक को दूर करने के लिए प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। संस्थान में 14.9.18 से 03.10.18 तक हिन्दी उल्लास मास का आयोजन किया गया। वर्ष 2018–19 की ''हिन्दी वैज्ञानिक तथा तकनीकी लेखन प्रोत्साहन योजना के तहत 48 वैज्ञानिकों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्रों से पुरस्कृत किया गया। संस्थान की सभी पत्रिकाएं हिन्दी में प्रकाशित की जा रही हैं। वार्षिक गृह पत्रिका ''दुग्ध गंगा के 2018–19 के प्रथम अंक को एवं सभी तिमाही न्यूज लैटर ''डेरी समाचार'' को हिन्दी में प्रकाशित किया गया। संस्थान द्वारा नराकास करनाल के अध्यक्षीय कार्यालय के रूप में समिति की वार्षिक गृह पत्रिका ''कर्णोदय'' को पूर्णतः हिन्दी में प्रकाशित किया जा रहा है। संस्थान के वैज्ञानिकों से प्राप्त वैज्ञानिक एवं लोकप्रिय लेख, छात्रों के शोध सारांश, वार्षिक प्रतिवेदन, प्रशासनिक पत्र, परिपत्र, ज्ञापन, विभिन्न समारोहों की प्रेस विज्ञप्ति, गण्यमान्य अतिथियों, मंत्रियों आदि के संबोधन, व्याख्यान एवं अन्य सामग्री का अनुवाद कार्य संस्थान के राजभाषा एकक द्वारा किया जा रहा है। गैर हिन्दी क्षेत्रों से अध्ययन हेतु आए एम.एससी./एम.टैक./पीएच.डी. के छात्र जिन्हें मैट्रिक स्तर तक हिंदी का ज्ञान नहीं है उन्हें हिंदी शिक्षण का कार्य इस एकक के स्टाफ द्वारा दिया जाता है। राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए इस संस्थान को नराकास करनाल से रिपोर्टाधीन वर्ष 2018–19 में 2 पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, हिन्दी में कार्य हेतु प्रथम पुरस्कार एवं हिन्दी गृह पत्रिका ''दुग्ध गंगा'' को द्वितीय पुरस्कार।

## 2 भाकृअनुप–केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, काछवा रोड, करनाल

निदेशक डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा की अगुवाई में संस्थान कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अधीन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मार्गदर्शन में राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार व प्रोत्साहन हेतु प्रतिबद्धतापूर्वक कार्य कर रहा है। डा. एस.के.त्यागी, मुख्य तकनीकी अधिकारी, नामित राजभाषा अधिकारी का कार्य कर रहे हैं। राजभाषा विभाग को कार्यालय कोड पीडीएचआर 1028 के अंतर्गत प्रत्येक तिमाही के अंत में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति रिपोर्ट भेजी जा रही है। नराकास समिति की सभी बैठकों में कार्यालय प्रधान शामिल होते हैं। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए इस कार्यालय को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है एवं हिन्दी पत्रिका ''कृषि किरण'' को उत्कृष्ट पत्रिका का तृतीय पुरस्कार, नराकास करनाल से प्राप्त हुआ। कार्यालय की तिमाही बैठकें समय पर आयोजित हो रही हैं। कार्यालय नियम 10(4) के तहत 25.4. 1994 से अधिसूचित है। कार्यालय के 8 अनुभाग नियम 8 (4) के तहत अधिसूचित हैं।

## 3 भाकृअनुप–राष्ट्रीय पशु आनुवंशिकी संसाधन ब्यूरो, (एनबीएजीआर), करनाल

डा. रमेश कुमार विज, कार्यवाहक निदेशक के नेतृत्व में संस्थान कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अधीन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मार्गदर्शन में राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार व प्रोत्साहन हेतु प्रतिबद्धतापूर्वक कार्य कर रहा है। श्री सतपाल तकनीकी अधिकारी नामित राजभाषा अधिकारी के रूप में कार्य कर रहे हैं। कार्यालय में सभी राजभाषा नियमों का नियमानुसार पालन करते हुए लगभग 95 प्रतिशत पत्राचार हिन्दी में किया जा रहा है। कार्यालय की सभी मुहरें नियमानुसार द्विभाषी/हिन्दी हैं तथा सभी कंप्यूटरों में यूनिकोड सॉफ्टवेयर इंस्टाल हैं। नराकास समिति की सभी बैठकों में कार्यालय प्रधान शामिल होते हैं। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया एवं संस्थान हिन्दी पत्रिका ''पशुधन प्रकाश 2017 को उत्कृष्ट पत्रिका का सांत्वना पुरस्कार नराकास करनाल से प्राप्त हुआ। कार्यालय की तिमाही बैठकें समय पर आयोजित हो रही हैं।

## 4 भाकृअनुप–भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

निदेशक डा. जी.पी.सिंह के नेतृत्व में संस्थान कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अधीन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मार्गदर्शन में राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार व प्रोत्साहन हेतु प्रतिबद्धतापूर्वक कार्य कर रहा है। डा. अनुज कुमार, प्रधान वैज्ञानिक

अपने नियमित कार्यों के अतिरिक्त राजभाषा अधिकारी का कार्य भी कर रहे हैं। संस्थान के द्वारा तिमाही हिन्दी बैठकों, हिन्दी कार्यशालाओं, राजभाषा उत्सव–हिन्दी पखवाड़ा (2018) का नियमानुसार आयोजन किया गया। नराकास करनाल की छमाही बैठकों में कार्यालय प्रधान व राजभाषा अधिकारी शामिल होते हैं तथा समिति की नगरस्तरीय प्रतियोगिताओं में संस्थान के वैज्ञानिक व कर्मचारी भाग ले रहे हैं। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए ''द्वितीय पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया एवं संस्थान की वार्षिक गृह पत्रिका ''गेहूँ एवं जौ स्वर्णिमा'' को ''उत्कृष्ट हिन्दी पत्रिका पुरस्कार श्रेणी 2017–18'' में ''प्रथम स्थान'' मिला है। इसी अंक को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली का गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार से भी नवाजा गया है।

### 5 भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, कुंजपुरा रोड, करनाल

यह क्षेत्रीय केन्द्र संस्थान कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अधीन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मार्गदर्शन में राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार व प्रोत्साहन हेतु प्रतिबद्धतापूर्वक कार्य कर रहा है। हिन्दी पखवाड़ा–2018 का आयोजन किया गया। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए ''तृतीय पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया एवं इस कार्यालय की प्रशिक्षण पुस्तिका ''शीतकालीन फसलों व सब्जियों का बीज उत्पादन '' को हिन्दी बुकलेट श्रेणी (2017–18 में प्रकाशित) में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### 6 भाकृअनुप–गन्ना प्रजनन संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, अग्रसेन मार्ग, करनाल

यह क्षेत्रीय केन्द्र कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अधीन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मार्गदर्शन में राजभाषा हिन्दी के प्रचार, प्रसार व प्रोत्साहन हेतु प्रयास कर रहा है। सभी राजभाषा नियमों व संवैधानिक आवश्यकताओं का अनुपालन किया जा रहा है। कार्यालय में हिन्दी चेतना मास/पखवाड़ा–2018 का आयोजन किया गया। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए ''तृतीय पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया एवं इस कार्यालय की प्रशिक्षण पुस्तिका ''''कृषक आय बढ़ाने में नवीनतम गन्ना प्रौद्योगिकियों की भूमिका'' को हिन्दी बुकलेट श्रेणी (2017–18 में प्रकाशित) में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### 7 सीपीडब्ल्यूडी (सिविल), केन्द्रीय मंडल, एनडीआरआई कैंपस, करनाल

कार्यालय राजभाषा नीति, नियमों व व्यवस्थाओं का नियमानुसार पालन कर रहा है। मुख्यालय एवं नराकास करनाल समिति सचिवालय से प्राप्त हुए राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निर्देशों का नियमानुसार पालन करने का प्रयास किया जा रहा है। समय पर तिमाही हिन्दी बैठकों का आयोजन किया जाता है और बैठकों के कार्यवृत्त उच्च कार्यालयों एवं नराकास करनाल समिति सचिवालय को समय पर जारी किये जाते हैं।

### 8 सीपीडब्ल्यूडी (विद्युत), केन्द्रीय विद्युत डिविजन, सेक्टर–3, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नियमों का पालन किया जा रहा है। कार्यालय प्रधान की अध्यक्षता में तिमाही हिन्दी बैठकों का आयोजन किया जाता है और बैठक की प्रोसिडिंग/कार्यवृत्त उच्च कार्यालय व करनाल समिति सचिवालय को जारी किये जाते हैं।

### 9 प्रधान आयकर आयुक्त कार्यालय, सेक्टर–12, आयकर भवन, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नियमों का नियमानुसार पालन करने का प्रयास किया जा रहा है। नराकास करनाल समिति कार्यालय एवं उच्च कार्यालयों को राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की रिपोर्टें समय पर प्रेषित की जा रही हैं। तिमाही बैठकें प्रत्येक तिमाही के अंत में की जा रही हैं। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए ''प्रोत्साहन पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया। नराकास करनाल की प्रतियोगिताओं में कार्यालय के कर्मचारी शामिल कराए जा रहे हैं।

### 10 कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, करनाल

कार्यालय प्रमुख श्री अमित सिंगला की अध्यक्षता में यह क्षेत्रीय कार्यालय नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन कर रहा है। कार्यालय में प्रत्येक तिमाही में हिन्दी बैठकों व हिन्दी कार्यशालाओं का समय पर आयोजन किया जाता है। नराकास सचिवालय की बैठकों में स्वयं कार्यालय प्रधान व नामित राजभाषा समन्वयक भाग लेते हैं। तिमाही प्रगति रिपोर्ट समिति सचिवालय के साथ–साथ विभागीय उच्च कार्यालयों को जारी की जाती है। हिन्दी पखवाड़े को उल्लासपूर्वक मनाया गया तथा अधिकाधिक कर्मचारियों ने प्रतियोगिताओं में भाग लिया। हिन्दी पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही जारी किए जा रहे हैं। नराकास करनाल की प्रतियोगिताओं में कार्यालय

के कर्मचारी शामिल कराए जा रहे हैं। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए ''तृतीय पुरस्कार'' मिला है। नराकास के तत्वावधान में 28.12.2018 को नगरस्तरीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

### 11 प्रधान डाकघर, करनाल मण्डल, जीपीओ– करनाल, करनाल

नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है। छमाही समीक्षा बैठकों की रिपोर्ट नराकास सचिवालय को समय पर प्रेषित की जाती है। कार्यालय प्रधान के स्टेशन में न होने की स्थिति में नामित अधिकारी प्रतिनिधि को छमाही समीक्षा बैठक में शामिल कराया गया है।

### 12 सरकारी चिकित्सा सामग्री भंडार, करनाल, स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय, करनाल

सभी राजभाषा नियमों का अक्षरशः पालन करने का प्रयास किया जा रहा है। नराकास की छमाही बैठकों में कार्यालय प्रधान स्वयं शामिल होते हैं। उनके स्टेशन में न होने की स्थिति में नामित प्रतिनिधि शामिल होते हैं। हिन्दी दिवस/पखवाड़ा मनाया जाता है। समिति सचिवालय को छमाही रिपोर्टें समय पर भेजी जाती हैं।

### 13 राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय, करनाल

उच्च कार्यालयों के साथ–साथ नराकास समिति कार्यालय से प्राप्त होने वाले विभिन्न राजभाषा नियमानुसार यथावश्यक अनुपालन किया जा रहा है।

### 14 रक्षा पेंशन संवितरण अधिकारी कार्यालय, करनाल

अपने नियंत्रण कार्यालय व नराकास करनाल सचिवालय के मार्गदर्शन में यह कार्यालय राजभाषा व्यवस्थाओं व नियमों का पालन करने का प्रयास कर रहा है।

### 15 उप केन्द्रीय आसूचना अधिकारी कार्यालय, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, करनाल

अपने उच्च कार्यालयों व समिति कार्यालयों को हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की सभी रिपोर्टें समय पर प्रेषित की जा रही हैं एवं नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है।

### 16 स्टेशन अधीक्षक कार्यालय, करनाल रेलवे स्टेशन, करनाल

नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है।

### 17 सहायक श्रम आयुक्त (केन्द्रीय) कार्यालय, करनाल

नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### 18 इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, इग्नू क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल

यह क्षेत्रीय कार्यालय राजभाषा नियमों के पालन के लिए प्रतिबद्ध है तथा सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है। समिति की छमाही बैठकों में प्रशासनिक प्रमुख शामिल होते हैं।

### 19 सैनिक स्कूल कुंजपुरा, करनाल

नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है। नराकास कार्यालय की छमाही बैठकों में कार्यालय प्रधान व प्रशासनिक अधिकारी शामिल होते हैं।

### 20 केन्द्रीय विद्यालय, कैथल रोड, करनाल

शाला प्रधान श्री राजकुमार, प्राचार्य के नेतृत्व में कार्यालय में क्षेत्रीय कार्यालय, राजभाषा विभाग व नराकास सचिवालय से प्राप्त हुए सभी राजभाषा नियमों व व्यवस्थाओं का नियमानुसार पालन किया जा रहा है। श्रीमती सुमिला, पीजीटी अपने नियमित अध्यापन कार्यों के साथ–साथ नामित राजभाषा अधिकारी का कार्य भी कर रही हैं। धारा 3(3) का पालन करने के साथ–साथ सभी हिन्दी पत्रों के हिन्दी में उत्तर दिए जा रहे हैं। शाला की सभी मुहरें हिन्दी/द्विभाषी बनाई गई हैं। कार्यालय के सभी कंप्यूटरों में द्विभाषा, हिन्दी व अंग्रेजी में कार्य करने की सुविधा है। केन्द्रीय विद्यालय द्वारा नराकास करनाल के तत्वावधान में 4.2.19 को एक नगरस्तरीय राजभाषा

संगोष्ठी(विषय–शिक्षण को प्रभावी बनाने में शिक्षक एवं भाषा का योगदान तथा विद्यार्थियों में तनाव प्रबंधन) का आयोजन किया गया जिसमें करनाल स्थित 4 विद्यालयों व 7 बैंकों के अध्यापकों/राजभाषा अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### 21 जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा, करनाल

शाला प्रधान एवं प्राचार्य के मार्गदर्शन में विद्यालय राजभाषा नीति, नियमों, व्यवस्थाओं एवं सभी सांविधिक आवश्यकताओं का अनुपालन कर रहा है। श्री पी.सी.उपाध्याय, प्राचार्य के स्थानांतरण के बाद श्री जसराम सिंह यादव ने कार्यालय प्रधान का कार्यभार ग्रहण किया है। श्री डिम्पल शर्मा, पीजीटी(हिन्दी) नामित राजभाषा अधिकारी का कार्य बखूबी संभाल रहे हैं। कार्यालय वर्ष 2003 से नियम 10(4) के अंतर्गत अधिसूचित है। कार्यालय में नियमानुसार प्रत्येक तिमाही में हिन्दी बैठकें, कार्यशालाएं आयोजित की जा रही हैं। सभी रबर की मुहरें हिन्दी में अथवा द्विभाषी बनाई गई हैं। सभी कंप्यूटरों में यूनिकोड की सुविधा मौजूद हैं। राजभाषा विभाग, उच्च कार्यालयों व नराकास करनाल समिति सचिवालय को समय पर तिमाही, छमाही व वार्षिक रिपोर्टें भेजी जा रही हैं एवं उनसे प्राप्त हुए आदेशों व अनुदेशों का अक्षरशः अनुपालन किया जा रहा है। कार्यालय को वर्ष 2016–17 व 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए विगत दो वर्षों से प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

### 22 भारतीय खाद्य निगम, जिला कार्यालय, करनाल

कार्यालय में नियमानुसार हिन्दी नियमों का अनुपालन किया जा रहा है। सितंबर माह 2018 में हिन्दी चेतना मास का आयोजन किया गया। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### 23 केन्द्रीय भण्डार गृह(1), केन्द्रीय भण्डारण निगम, मटक माजरी, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति व नियमों की पालना करने का प्रयास जारी है। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### 24 राष्ट्रीय बीज निगम लिमिटेड, सेक्टर–3, करनाल

कार्यालय के द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में नियमानुसार कार्य किए जा रहे हैं।

### 25 एम.एस.एम.ई. विकास संस्थान, आई.टी.आई. के पास, करनाल

कार्यालय प्रधान श्री मेजर सिंह की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति गठित है। कार्यालय द्वारा अपने उच्च कार्यालयों, समिति कार्यालय व राजभाषा विभाग के सभी आदेशों का पालन किया जा रहा है। श्री सतपाल, सहायक निदेशक राजभाषा अधिकारी के दायित्वों का बखूबी निर्वहन कर रहे हैं। श्रीमती ऊषा कत्याल अपने नियमित कार्यों के साथ नामित राजभाषा समन्वयक एवं हिन्दी पत्राचार का कार्य कर रही हैं। कार्यालय के द्वारा धारा 3(3) के तहत द्विभाषी दस्तावेज तैयार करने, हिन्दी पत्रों का हिन्दी में उत्तर देने, तिमाही हिन्दी बैठकों का समय पर आयोजन करने, सभी संबंधित कार्यालयों को समय पर रिपोर्ट भेजने का कार्य समय पर किया जा रहा है। प्रत्येक वर्ष सितंबर माह में हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन भी किया जा रहा है।

### 26 भारत संचार निगम लि0, सेक्टर 8, अरबन स्टेट, करनाल

नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन करने का प्रयास किया जा रहा है।

### 27 दूरदर्शन अनुरक्षण केन्द्र, करनाल, हरियाणा

सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है। भारत सरकार, उच्च कार्यालय व समिति कार्यालय से प्राप्त होने वाले राजभाषा अनुदेशों का कार्यान्वयन जारी है।

### 28 भारतीय जीवन बीमा निगम, मंडल कार्यालय, करनाल

नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### 29 ओरियण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स, क्लस्टर कार्यालय, करनाल

नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### 30 दि न्यू इंडिया एश्योरंस कं.लिमि., मंडलीय कार्यालय, करनाल

नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### 31 ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडलीय कार्यालय, जीटी रोड, करनाल

राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है एवं नराकास करनाल की छमाही बैठकों में कार्यालय प्रधान शामिल हो रहे हैं।

### 32 नेशनल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड, मंडलीय कार्यालय, करनाल

कार्यालय प्रधान एवं मंडलीय प्रबंधक श्री समीर धवन की अध्यक्षता में कार्यालय में राजभाषा संबंधी सभी नियमों को पालन करने का प्रयास किया जा रहा है। कार्यालय में राजभाषा नियमों के कार्यान्वयन के साथ–साथ नराकास करनाल के सभी कार्यक्रमों व आयोजनों में कार्यालय के प्रतिनिधि एवं छमाही समीक्षा बैठकों में स्वयं कार्यालय प्रधान शामिल होते हैं। कार्यालय में प्रत्येक तिमाही में हिन्दी बैठकों का आयोजन किया जाता है एवं नराकास करनाल के द्वारा नगर स्तर पर आयोजित की जाने वाली हिन्दी कार्यशालाओं में कार्यालय के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। कार्यालय की सभी रबर की मुहरें हिन्दी में अथवा द्विभाषा में हैं, जिनमें हिन्दी पंक्तियाँ ऊपर हैं। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### 33 यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मंडल कार्यालय,जीटी रोड, करनाल

नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### 34 यूनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मोटर डीलर कार्यालय, करनाल

नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है।

### 35 कॉर्पोरेशन बैंक, मुख्य शाखा, करनाल

सभी नियमों का अनुपालन करने का प्रयास किया जा रहा है।

### 36 इण्डियन ओवरसीज बैंक, करनाल

सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है।

### 37 केनरा बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल

नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### 38 पंजाब नैशनल बैंक, मंडल कार्यालय, करनाल

नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### 39 भारतीय स्टेट बैंक, मुख्य शाखा, करनाल

नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है।

### 40 यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, क्षेत्रीय कार्यालय, मॉडल टाउन, करनाल

नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### 41 बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल

नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है। कार्यालय को वर्ष 2017–18 की नराकास करनाल की वार्षिक राजभाषा पुरस्कार प्रतियोगिता में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

### 42 बैंक ऑफ इण्डिया, मुख्य शाखा, करनाल

नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है।

### 43 इण्डियन बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल

अंचल प्रमुख के नेतृत्व में अंचल कार्यालय नियमानुसार सभी राजभाषा नीति, नियमों एवं व्यवस्थाओं का पालन कर रहा है। कार्यालय में श्री बिन्देश्वरी प्रसाद, वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा) राजभाषा का कार्य बखूबी देख रहे हैं। बैंक में हिन्दी पत्रों के उत्तर हिन्दी में देने, धारा 3 (3) का पालन करने, समय पर तिमाही हिन्दी बैठकों व कार्यशालाओं का आयोजन करने, अपने उच्च कार्यालयों को विभिन्न सामयिक रिपोर्टें भेजने व समिति की बैठकों में कार्यालय प्रधान की प्रतिभागिता सुनिश्चित की जा रही है।

### 44 इलाहाबाद बैंक, मुख्य शाखा, करनाल

सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन किया जा रहा है।

### 45 आन्ध्रा बैंक, करनाल

राजभाषा नियमों की पालना के प्रयास जारी हैं।

### 46 सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, मुख्य शाखा, करनाल

राजभाषा के सभी सांविधिक नियमों एवं धाराओं का पालन करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

### 47 बैंक ऑफ महाराष्ट्र, मुख्य शाखा, करनाल

बैंक कार्यालय सभी राजभाषा नियमों का अनुपालन करने के लिए प्रतिबद्ध है तथा समिति कार्यालय की बैठकों में कार्यालय प्रमुख शामिल हो रहे हैं। उनके करनाल में न होने पर नामित प्रतिनिधि भाग लेते हैं। समिति को सभी रिपोर्टें समय पर प्रस्तुत की जा रही हैं।

### 48 सिंडिकेट बैंक, मुख्य शाखा, करनाल

सिंडिकेट बैंक कार्यालय में नियमानुसार सभी राजभाषा नियमों का कार्यान्वयन करने का प्रयास जारी है।

### 49 नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड, करनाल

इस कार्यालय में सभी हिन्दी नीति व नियमों का कार्यान्वयन करने का प्रयास किया जा रहा है।

### 50 नेहरू युवा केन्द्र संगठन, क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल

कार्यालय में सभी राजभाषा नियमों का कार्यान्वयन किया जा रहा है। विभिन्न आवधिक रिपोर्टें उच्च कार्यालयों व समिति कार्यालय, नराकास करनाल को भेजी जाती हैं। प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक हिन्दी गतिविधि या कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है।

### 51 यूको बैंक, हरियाणा अंचल कार्यालय, करनाल

कार्यालय में राजभाषा नीति एवं नियमों का पालन किया जा रहा है। हरियाणा अंचल प्रमुख श्री आई.एस. तुलसी के मार्गदर्शन में श्रीमती प्रतिभा रतन, वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा) एवं सभी अधिकारी अंचल कार्यालय के साथ–साथ अधीनस्थ शाखाओं/कार्यालयों में राजभाषा नियमों को अनुपालन सुनिश्चित करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। कार्यालय के 4 अनुभागों को नियम 8(4) के तहत विनिर्दिष्ट किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन समिति का नियमानुसार गठन किया गया है और समिति की समय पर तिमाही बैठकें आयोजित की जा रही हैं। रिपोर्टाधीन अवधि में 8.5.2018, 13.9.18, 31.12.18 एवं 25.2.19 को तिमाही हिन्दी बैठकें संपन्न हुईं। प्रत्येक तिमाही में एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन, 21.6.18, 12.9.18, 16.11.18 एवं 15.3.19 को किया गया। कार्यालय में उपलब्ध सभी रबर की मुहरें द्विभाषी/हिन्दी में हैं। कार्यालय में उपलब्ध सभी 22 कंप्यूटरों में युनिकोड एवं द्विभाषा में कार्य करने की सुविधा उपलब्ध है। राजभाषा विभाग को कार्यालय कोड बी.के.एच.आर.2092 के अंतर्गत प्रत्येक तिमाही के अंत में राजभाषा रिपोर्ट अपलोड की जा रही है।

# नराकास करनाल (समिति कोड 005) की गतिविधियों के छायाचित्र (2018–19)

1.19.4.18(पूर्वाह्न) को नगर स्तरीय वाक्य अनुवाद प्रतियोगिता

2.19.4.18(अपराह्न) को गैर हिन्दी भाषियों के लिए नगर स्तरीय हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

3. 27.4.18 को नगर स्तरीय हिन्दी निबंध प्रतियोगिता (भारतीय जीवन बीमा निगम द्वारा)

**सभी कार्यालयों में बढ़ाया जाए हिंदी का प्रयोग**

4. 12.6.18 को समिति की छमाही समीक्षा बैठक संपन्न

5. 8.8.18 को सदस्य कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों हेतु चर्चा सत्र–संगोष्ठी का आयोजन

6. 10.9.18 को नगर स्तरीय राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता (एमएसएमई विकास संस्थान द्वारा)

7. 11.9.18 को नगर स्तरीय हिन्दी भाषण प्रतियोगिता (भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित)

8. 16.9.18 को नगर स्तरीय हिन्दी कवि सम्मेलन (अटल काव्यांजलि) (स्टाफ क्लब, राडेअनुसं, करनाल द्वारा नराकास के सौजन्य में)

9. 19.9.18 को नगर स्तरीय हिन्दी नारालेखन प्रतियोगिता (बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा आयोजित)

10. 22.9.18 को नगर स्तरीय हिन्दी गीतगायन प्रतियोगिता (राडेअनुसं द्वारा आयोजित)

11. 25.9.18 को नगर स्तरीय टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता (केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित)

12. 28.9.18 को नगर स्तरीय चित्र आधारित कहानीलेखन प्रतियोगिता (ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, मंडल कार्यालय द्वारा आयोजित)

13. 2.10.18 को गाँधीजी को श्रृद्धांजलि हेतु हिन्दी भजन संध्या का आयोजन (स्टाफ क्लब, राडेअनुसं, करनाल द्वारा आयोजित)

14. 10.10.18 को नगर स्तरीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन (राडेअनुसं करनाल द्वारा आयोजित)

15. 12.10.18 को नगर स्तरीय संदेशदायक चित्र प्रतियोगिता

16. 26.11.18 को नगर स्तरीय हिन्दी निबंध प्रतियोगिता (विषयः राजभाषा हिन्दी–प्रेरणा व प्रोत्साहन)

# बैंक ऑफ बड़ौदा की नीलम उत्कृष्ट राजभाषा अधिकारी अवॉर्ड से सम्मानित

17. 30.11.18 को छमाही बैठक में बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, करनाल की श्रीमती नीलम, प्रबंधक को उत्कृष्ट राजभाषा अधिकारी–2017 सम्मान

18. 30.11.18 को छमाही बैठक में उत्कृष्ट पत्रिका प्रतियोगिता (2017–18) की वार्षिक गृह पत्रिका श्रेणी में विजेता प्रशासनिक प्रमुखों को प्रशस्ति पत्रों/ट्राफियों से सम्मान किया गया।

19. 30.11.18 को उत्कृष्ट पत्रिका प्रतियोगिता (2017–18) की प्रशिक्षण पुस्तिका में विजेता प्रशासनिक प्रमुखों को प्रशस्ति पत्रों व ट्राफियों से सम्मान

20. 30.11.18 को छमाही बैठक में उत्कृष्ट ई पत्रिका प्रतियोगिता(2017–18) में 2 सदस्य कार्यालयों के प्रशासनिक प्रमुखों को प्रशस्ति पत्रों व ट्राफियों से सम्मान

21. 30.11.18 को आयोजित छमाही बैठक में गृह पत्रिका ''कर्णोदय 2017–18'' में प्रकाशित उत्कृष्ट लेख हेतु सदस्य कार्यालयों के 4 अधिकारियों व कर्मचारियों को सम्मानित किया।

# कार्यशाला में दिए राजभाषा नीति, नियमों व व्यवस्थाओं के प्रबंधन के टिप्स

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन के क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी कार्यशाला में उपस्थित अधिकारी।

करनाल, 27 दिसम्बर (ब्यूरो): नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति करनाल (नराकास) के बैनर तले कर्मचारी भविष्य निधि संगठन के ... मंडल डाकघर, सरकारी चिकित्सा सामग्री भंडार, राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय, रक्षा पेंशन संवितरण कार्यालय, सहायक श्रम आयुक्त

22. 27.12.18 को ''राजभाषा का प्रबंधन व हिन्दी में ईमेल कैसे बनाएं'' विषय पर नगर स्तरीय हिन्दी कार्यशाला (ईपीएफओ क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा आयोजित)

# भाषाई व ग्राहक संदर्भ पर सार्थक चर्चा हुई

- मार्केटिंग, बैंकिंग व सभी व्यवसायों में आम बोलचाल की भाषा महत्वपूर्ण
- इस संगोष्ठी में 5 बैंकों के अधिकारी शामिल हुए

आज समाज नेटवर्क

23. 28.12.18 को अंतर बैंक संगोष्ठी, ''बैंकिंग व मार्केटिंग में भाषायी संदर्भ'' विषय पर आयोजन (बैंक ऑफ बड़ौदा, क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा आयोजित)

24. 23.1.19(पूर्वाह्न) को बैंकिंग शब्दावली प्रतियोगिता

25. 23.1.19(अपराह्न) को हिन्दी अनुभव लेखन प्रतियोगिता

26. 25.1.19(पूर्वाह्न) को "स्वच्छता" बाल चित्रकला प्रतियोगिता (यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा)

27. 25.1.19(अपराह्न) को स्वच्छता पर हिन्दी निबंध प्रतियोगिता (यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा)

केन्द्रीय विद्यालय में संयुक्त एक दिवसीय अंतर कार्यालय राजभाषा संगोष्ठी सम्पन्न

नगर राजभाषा क्रियान्वयन समिति के तत्वावधान में हुआ आयोजन

28. 4.2.19 को केन्द्रीय विद्यालय द्वारा संयुक्त नगर स्तरीय अन्तर कार्यालय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन

29. जवाहर नवोदय विद्यालय, सग्गा में 18.2.19 को कक्षा 9 के विद्यार्थियों से वार्तालाप एवं क्विज का आयोजन

हिंदी से विद्यार्थियों में रचनात्मकता बढ़ाएं

जेएनवी सग्गा में एकदिवसीय कार्यशाला एवं संगोष्ठी का आयोजन

30. जवाहर नवोदय विद्यालय में 18.2.19 को "हिन्दी से बच्चों में रचनात्मकता बढ़ाना" पर नगर स्तरीय संयुक्त हिन्दी कार्यशाला

31. नेहरू युवा केन्द्र, करनाल द्वारा 28.2.19 को "राष्ट्रीय विकास में युवाओं का योगदान" विषय पर नगर स्तरीय हिन्दी व्याख्यान का आयोजन

कार्यशाला में वक्ताओं ने हिंदी को बढ़ावा देने पर किया मंथन

32. युनाइटेड इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, मोटर डीलर कार्यालय, करनाल द्वारा 15.3.19 को नराकास के तत्वावधान में राज्य स्तरीय राजभाषा अधिकारियों के लिए हिन्दी कार्यशाला

33. नेहरू युवा केन्द्र, करनाल द्वारा 19.3.19 को युवा नेतृत्व व सामुदायिक विकास कार्यक्रम के अंतर्गत 'राजभाषा विभाग की योजनाओं व राजभाषा के क्षेत्र में रोजगार" विषय पर नगर स्तरीय हिन्दी व्याख्याान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान में करनाल नगर के विभिन्न महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया और अपने विचार रखे।

# नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कोड 005) करनाल की 2018-19 की प्रमुख राजभाषा गतिविधियों के छायाचित्र

# नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (न.रा.का.स.) करनाल

## TOWN OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION COMMITTEE(TOLIC), KARNAL

संयोजक कार्यालय : भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल

Co-ordination office : I.C.A.R-National Dairy Research Institute (N.D.R.I.) Karnal.


"नराकास करनाल के बढ़ते कदम, प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सहयोग के संग"

# समिति सचिवालय की छुट्टियों की तालिका-2019

**जनवरी**

| रवि | सो | मं | बुध | गु | शु | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | ■ | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | ▲ |
| 13 | ■ | ■ | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | ● |
| 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | | |

**फरवरी**

| रवि | सो | मं | बुध | गु | शु | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | 1 | 2 |
| 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | ▲ |
| 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 17 | 18 | ■ | 20 | 21 | 22 | 23 |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | | |

**मार्च**

| रवि | सो | मं | बुध | गु | शु | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 31 | | | | | ■ | 2 |
| 3 | ● | 5 | 6 | 7 | 8 | ▲ |
| 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 17 | 18 | 19 | ■ | ● | 22 | 23 |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |

**अप्रैल**

| रवि | सो | मं | बुध | गु | शु | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | ■ |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | ▲ |
| 14 | ■ | 16 | ● | 18 | ● | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | | | | |

**मई**

| रवि | सो | मं | बुध | गु | शु | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | ■ | 10 | ▲ |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | ● |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | ■ | |

**जून**

| रवि | सो | मं | बुध | गु | शु | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | ● | 6 | 7 | ▲ |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |

**जुलाई**

| रवि | सो | मं | बुध | गु | शु | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 1 | 2 | 3 | ■ | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | ▲ |
| 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | 31 | | | |

**अगस्त**

| रवि | सो | मं | बुध | गु | शु | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 1 | 2 | 3 |
| 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | ▲ |
| 11 | ● | 13 | 14 | ● | 16 | ■ |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | ● |
| 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 |

**सितम्बर**

| रवि | सो | मं | बुध | गु | शु | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | ■ | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | ● | ■ | 12 | 13 | ▲ |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | | | | | |

**अक्तूबर**

| रवि | सो | मं | बुध | गु | शु | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | ● | 3 | 4 | ■ |
| 6 | ■ | ● | 9 | 10 | 11 | ▲ |
| 13 | 14 | 15 | 16 | ■ | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | ■ | ■ | 30 | 31 | | |

**नवम्बर**

| रवि | सो | मं | बुध | गु | शु | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | 1 | ■ |
| 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | ▲ |
| 10 | 11 | ● | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |

**दिसम्बर**

| रवि | सो | मं | बुध | गु | शु | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | ▲ |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | ■ | ● | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | 31 | | | | |

● **राजपत्रित अवकाश :** 26 जनवरी–गणतंत्र दिवस; 4 मार्च–महाशिवरात्रि; 21 मार्च–होली; 17 अप्रैल–महावीर जयंती; 19 अप्रैल–गुड फ्राईडे; 18 मई–बुद्ध पूर्णिमा; 5 जून–ईद–उल–फितर; 12 अगस्त–ईद–उल–जुहा/बकरीद; 15 अगस्त–स्वतंत्रता दिवस; 24 अगस्त –जन्माष्टमी; 10 सितम्बर–मोहर्रम; 2 अक्तूबर–गांधी जंयती; 8 अक्तूबर–दशहरा ; 27 अक्तूबर–दीपावली; 10 नवम्बर–मिलाद–उन–नबी; 12 नवम्बर–गुरू नानक जन्मदिवस; 25 दिसम्बर–क्रिसमस

■ **वैकल्पिक अवकाश :** 1 जनवरी–नववर्ष दिवस; 13 जनवरी–लोहरी; 14 जनवरी–मकर संक्रान्ति; 15 जनवरी–पोंगल; 10 फरवरी–बसंत पंचमी / श्री पंचमी; 19 फरवरी–गुरू रविदास जयंती; 19 फरवरी–शिवाजी जयंती; 1 मार्च–स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती; 20 मार्च–होली (होलिका दहन); 21 मार्च–दौलयात्रा; 21 मार्च–हजरत अली जयंती; 6 अप्रैल–चैत्र शुक्लादि/उगादी/गुड़ी पर्व/चेटीचंद; 13 अप्रैल–राम नवमी; 14 अप्रैल–बैसाखी; 15 अप्रैल–वैशाखादि (बंगाल)/बहाग बिहू (असम), 21 अप्रैल–ईस्टर संडे; 9 मई–रविन्द्र नाथ जयंती; 31 मई–जमात –उल –विदा; 4 जुलाई–रथ यात्रा; 15 अगस्त–रक्षा बंधन; 17 अगस्त–पारसी नव वर्ष; 2 सितम्बर–विनायक चतुर्थी/गणेश चतुर्थी; 11सितम्बर–ओनम; 5 अक्तूबर–दशहरा(महासप्तमी); 6 अक्तूबर–दशहरा(महाष्टमी); 7 अक्तूबर–दशहरा(महानवमी); 13 अक्तूबर–महर्षि वाल्मीकी जंयती; 17 अक्तूबर–करवा चौथ; 27 अक्तूबर–नरक चतुर्थी; 28 अक्तूबर–गोवर्धन पूजा ; 29 अक्तूबर–भैयादूज; 2 नवम्बर–छठ पूजा; 24 नवम्बर–गुरू तेग बहादुर शहीदी दिवस; 24 दिसम्बर–क्रिसमस संध्या

▲ **द्वितीय शनिवार :**